CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राधाकृष्ण श्रीमाली

मंत्र शक्ति से रोग निवारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डायमंड पाकेट बुक्स में

डायमंड शाश्वत कथा माला
महाभारत के अमर पात्र

अग्न्यावती द्रौपदी	10.00
महाराज धृतराष्ट्र	10.00
आचार्य द्रोण	10.00
द्रुपद 10.00 विदुर	10.00
शकुनी	10.00
दुर्योधन	10.00
आस्थानिष्ठ एकलव्य	10.00
महासती गान्धारी	10.00
वीरवर कर्ण	10.00
योगीराज कृष्ण	10.00
कर्तव्यनिष्ठ कुन्ती	10.00
गाण्डीवधारी अर्जुन	10.00
महाबली भीम	10.00
पितामह भीष्म	10.00
धर्मराज युधिष्ठिर	10.00

शरतचन्द साहित्य

परिणीता	10.00
गृहदाह	15.00
कमला	10.00
विजया	10.00
विप्रदास	15.00
शुभदा	10.00
पथ के दावेदार	15.00
देवदास	10.00
पंडित जी	10.00
मझली दीदी	10.00
दत्ता	10.00
शेष प्रश्न	15.00
देना पावना	10.00
श्रीकांत	20.00
चरित्रहीन	20.00
शेष परिचय	15.00
विराज बहू	10.00
बैकुंठ का वसीयतनामा	10.00
देहाती समाज	10.00
समाज का अत्याचार	10.00
ब्राह्मण की बेटी	10.00
काशी नाथ	10.00
चन्द्रनाथ	10.00

बंकिमचन्द्र के उपन्यास

दुर्गेशनन्दिनी	10.00
कपाल कुण्डला	10.00
मृणालिनी	10.00
देवी चौधरानी	10.00
सीताराम, राधारानी	10.00
विषवृक्ष	10.00
चन्द्रशेखर	10.00
रजनी	10.00
कृष्णकांत का वसीयतनामा	10.00
राजसिंह	10.00
आनंदमठ	10.00

प्रेमचन्द साहित्य

उपन्यास	
निर्मला	10.00
वरदान	12.00
प्रतिज्ञा व मंगलसूत्र	12.00
सेवासदन	15.00
गोदान	12.00
प्रेमाश्रम	20.00
कर्मभूमि	25.00
रंगभूमि-I	20.00
रंगभूमि-II	20.00
कायाकल्प	20.00
मनोरमा	12.00
रूठीरानी व प्रेमा	12.00
गबन	15.00
कहानीसंग्रह	
मानसरोवर भाग-1	15.00
मानसरोवर भाग-2	15.00
मानसरोवर भाग-3	15.00
मानसरोवर भाग-4	15.00
मानसरोवर भाग-5	15.00
मानसरोवर भाग-6	15.00
मानसरोवर भाग-7	15.00
मानसरोवर भाग-8	15.00
कफन	12.00
नाटक	
कर्बला	12.00
संग्राम	12.00

जयशंकर प्रसाद साहित्य

प्रसाद ग्रन्थावली खण्ड (काव्य)-I	40.00
प्रसाद ग्रन्थावली खण्ड (नाटक)-II	40.00
प्रसाद ग्रन्थावली खण्ड (उपन्यास)-III	40.00
प्रसाद ग्रन्थावली खण्ड (कहानी-निबंध)-IV	40.00
उपन्यास	
कंकाल	15.00
तितली	15.00
इरावती	6.00
कहानी संग्रह	
छाया	6.00
इन्द्रजाल	8.00
आकाशदीप	7.00
प्रतिध्वनि	5.00
आंधी	6.00
नाटक	
स्कंदगुप्त	10.00
अजात शत्रु	6.00
ध्रुवस्वामिनी	3.00
जनमेजय का नाग यज्ञ	6.00
राज्य श्री	4.00
विशाख	6.00
कामना	4.00
एक घूंट	5.00
चन्द्रगुप्त	10.00
काव्य	
लहर	5.00
कामायनी	8.00
आंसू	5.00
झरना	5.00
महाराणा का महत्व	2.00
प्रेम पथिक	3.00
निबंध	
काव्य कला तथा अन्य निबंध	15.00

अपने पास के बुक स्टाल से खरीदें या हमें लिखें।

डायमंड पाकेट बुक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तन्त्रम - 988

20 Mar 1993

D—593

जब मनुष्य को अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों द्वारा किसी कार्य की सिद्धि में सफलता नहीं मिलती तो वह अलौकिक शक्तियों का सहारा ढूंढ़ता है। इन अलौकिक शक्तियों को प्रसन्न करके अपना कार्य सिद्ध करना चाहता है। ऐसी शक्तियों को मंत्र एवं स्तोत्रों द्वारा प्रसन्न किया जाता है।

किसी भी इष्ट देव की सिद्धि के लिए इन मंत्रों और स्तोत्रों को सिद्ध करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए विधि-विधान की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत पुस्तक में रोग-निवारक मंत्रों को प्रमुख स्थान दिया गया है। यथा साध्य छोटे मंत्रों को चुना गया है और उन्हें प्रभावकारी बनाने की सरल विधि की खोज की गई है। आस्था और विश्वास के साथ संबंधित रोग के मंत्र को सिद्ध कर प्रयोग करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५/-)

डायमण्ड पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित उपयोगी पुस्तकें

धार्मिक सीरिज

वेदान्त दर्शन
मीमांसा दर्शन
सांख्य दर्शन
न्याय दर्शन
वैशेषिक दर्शन
युग प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध
कार्तिक महात्मय भा.टी.
कार्तिक महात्मय
मनुस्मृति
विदुर नीति
भर्तृहरि शतक
अनेकता में एकता
रामलीला नाटक
गणेश पुराण
वायु पुराण
भविष्य पुराण
लिंग पुराण
पद्म पुराण
वराह पुराण
कूर्म पुराण
ब्रह्म पुराण
मार्कण्डय पुराण
मत्स्य पुराण
गरुड़ पुराण
ब्रहमवैतर्व पुराण
ब्रह्माण्ड पुराण
अग्नि पुराण
स्कन्द पुराण
नारद पुराण
श्री देवी भागवत पुराण
हनुमान उपासना
लक्ष्मी उपासना
सरस्वती उपासना
काली उपासना
विष्णु उपासना
रुद्राक्ष उपासना
गायत्री उपासना
शिव उपासना
नवग्रह उपासना
भैरव उपासना
गणेश उपासना
दुर्गा उपासना
ऋग्वेद
सामवेद
युजर्वेद
अथर्ववेद
उपनिषद I
उपनिषद II
उपनिषद III
सुख सागर
भारत के प्रमुख तीर्थ
प्रभु मिलन का मार्ग
जैकारा शेरोंवाली का
व्रत पर्व और त्यौहार
रामायण
वाल्मीकि रामायण
महाभारत
सिखों के दस गुरु
श्रीमद् भगवत गीता
शिरड़ी के साईं बाबा
कथा सरित सागर
योग वशिष्ठ
महामात्य चाणक्य
आर्य पुष्पांजलि
चाणक्य नीति
कौटिलीय अर्थशास्त्र
गुरु वशिष्ठ
दुर्गा सप्तशती
राधाकृष्ण श्रीमाली
(ज्योतिष)
शरीर सर्वांग लक्षण
वृहद हस्त रेखा
नक्षत्र विज्ञान
अंक ज्योतिष
तंत्र रहस्य
भृगु संहिता
मंत्र शक्ति से रोग निवारण
मंत्र शक्ति
तंत्र शक्ति
तंत्र शक्ति साधना
और सैक्स
स्वप्न ज्योतिष
रमल विज्ञान
ग्रहगोचर
प्रश्न ज्योतिष
यंत्र शक्ति
भारतीय ज्योतिष
ज्योतिष और रत्न
ज्योतिष सीखये
दशाफल दर्पण
स्तोत्र शक्ति
ज्योतिष और पति पत्नी
का चुनाव
मंत्र शक्ति से
कामना सिद्धि

डायमंड पाकेट बुक्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राधाकृष्ण श्रीमाली

मंत्र शक्ति से रोग निवारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२९८४२
Acc 21952

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :
डायमण्ड पाकेट बुक्स
2715, दरियागंज, (मोती महल के पीछे)
नई दिल्ली-110002
वितरक :
पंजाबी पुस्तक भण्डार
दरीबा कलाँ, दिल्ली-110006
मूल्य 15.00 रुपये
मुद्रक : बन्धु प्रिंटिंग सर्विस कं०; दिल्ली-32

Mantra Shakti Se Roge Nivaran ∘ Srimali ∘ Rs.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो-शब्द

'पहला सुख निरोगी काया।' 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।' 'Health is wealth' जैसी उक्तियां सत्य हैं। जीवन के हर क्षेत्र में, हर कार्य में स्वस्थ्य शरीर का होना पहली और आवश्यक शर्त है। मानव मात्र को सदैव से यह इच्छा रही है कि उसका सम्पूर्ण, समस्त, मृत्यु-पर्यन्त जीवन सुख और सुविधाओं से परिपूर्ण, ओत-प्रोत रहे, परिस्थितियां हर समय उसके अनुकूल बनी रहें, प्रतिकूलता अनुकूलता में, पराजय जय में, अभाव प्राप्ति में बदल जाएं तो स्वस्थ बना रहना निश्चित है। इस सबके लिए स्वस्थ होना आवश्यक है। साधारण व्यक्ति के सामने जब संघर्ष का अवसर आता है, वह कल्पना मात्र से भयभीत हो जाता है। वह प्रतिकूलता को विपत्ति की संज्ञा देता है और चाहता है कि कोई अज्ञात शक्ति उसे जादू से दूर कर दे। वह नहीं जानता कि प्रतिकूलता आने पर संघर्ष करने से ही जीवन का विकास होता है। संघर्ष में गति है। गति, शक्ति का दूसरा नाम है। इस सबके लिए परमावश्यक है स्वस्थ शरीर का होना। गतिशील जीवन उन्नति के स्वर्ग द्वार खोल देता है। अस्तु! पर ऐसा होता कहां है? रोते हुए नहीं कि भाग्य, प्रारब्ध को, ग्रहों को दोष दे बैठते हैं। यह स्थिति निर्बल मन की प्रतीक है। यही तो कारण है कि कभी-कभी बुरे व भयप्रद समाचारों से हृदय स्पन्दन रुक जाता है। विपत्ति की चिन्ता से शरीर खोखला हो जाता है।

कारण, अकारण, असावधानी से रोग का कीड़ा लग जाता है, तब जहां मेडिसन अपना कार्य करता है वहीं मन्त्र भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपना खूब काम करता है। मन्त्र शक्ति का अभिप्राय किसी देवी-देवता की मनौती मानना या भेंट चढ़ाना नहीं है अपितु ध्वनि विज्ञान पर आधारित यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका समुचित, एक निश्चित प्रभाव पड़ता है। विदेशों में तो और अब भारत में भी असाध्य रोगों का इलाज ध्वनि विज्ञान से किया जाने लगा है। ध्वनि की सूक्ष्म तरंगें मानसिक क्षेत्र को खूब प्रभावित करती हैं, वहां एक अद्‌भुत गति व हल-चल उत्पन्न करती हैं जिससे व्यक्ति शक्ति की अनुभूति करता है। मन्त्रों में ध्वनि का एक निश्चित क्रम होता है, जिससे वह उन्हीं सूक्ष्म यौगिक ग्रंथियों को गुदगुदाते व जगाते हैं, जिसके लिए वह ग्रंथित किए गए हैं। इसीलिए महर्षियों ने विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अलग-अलग मन्त्रों का निर्माण किया। वह मन्त्र उन्हीं उद्देश्यों के अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

रोग निवारण, भय व शत्रु से मुक्ति के मन्त्र साधक में एक अनोखी शक्ति व साहस, समस्या समाधन करने की सूझ-बूझ व विवेक बुद्धि और प्रयत्न, परिश्रम व संघर्ष करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं जिससे अनुकूल फलों की प्राप्ति होती है।

मैं एक लम्बे समय से ऐसी ही पुस्तक लिखने के प्रयास में था कि जिससे मन्त्रों से रोग पर विजय पायी जा सके। अन्ततः प्रिय कमल व भूपत श्रीमाली के सहयोग तथा आदरणीय रामसुख दवे की प्रेरणा से इसे तैयार कर सका हूं। आभारी हूं।

पाठक, इससे किंचित् भी लाभ ले सके तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगा। शंका-समाधान हेतु पाठकों के पत्रों का प्रति-उत्तर देने के लिए वचनबद्ध हूं।

—राधाकृष्ण श्रीमाली

सी. जी. 33
हाई कोर्ट कालोनी,
ज्योतिष अनुसंधान केंद्र
जोधपुर, (राजस्थान)
फोन नं० 25625

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुक्रमणिका

विचार पवित्रता के लिए	9
विघ्ननाश तान्त्रिक बाधा सर्वदोष निवारणार्थ	32
शनिकृत गणेश स्तोत्र	41
प्रमुख सूक्त	48
काली साधना	54
निवृत्ति मंत्र	70
सर्व व्याधि नाशक विष्णु सहस्र नाम	83
स्तोत्र	113
सर्व रोग	127
प्रमुख स्तोत्र एवं संकटास्तुति	131
प्रमुख कवच	141
रोगनाशक मंत्र	152

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Acc 29529
2195

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचार पवित्रता के लिए

अपवित्र विचार बुरे कार्यों की ओर जातक को प्रेरित करते है जिसका परिणाम सदैव दुःख और संकट रहता है। अतः हम सुखी एवं आनन्दमय, ऐश्वर्यमय जीवन के लिए विचारों में पवित्रता और वुद्धि की शुद्धता बनी रहने की अपेक्षा करते हैं।

निम्न मन्त्रों के पाठ व हवन से इस कार्य की सिद्धि हो सकती है।

'पुनन्तु मा देव जनाः मनवोधित्रा ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा ॥1॥
पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे ।
अथो अरिष्टवातये ॥2॥
उमाभ्यां देव सवितः पवित्रेय सवेन च ।
मस्मान् पुनीहि चक्षसे ॥3॥

विघ्न नाश के लिए—

अरलु वृक्ष की मणि बनाकर पीले रंग के डोरे में कवच के समान गले अथवा दाहिनी भुजा में (स्त्रियां बायीं भुजा में) धारण करें। मणि को निम्न मन्त्रों से अभिमंत्रित करें। इससे समस्त प्रकार के विघ्नों का नाश होता है—

कर्शफस्य विशफस्य द्यौप्पिता पृथिवी माता ।
यथाभि चक्र देवास्तथाग कृणुता पुनः ॥1॥
अश्लेष्माणो अधारयन् तथा तन्मनुना कृतम् ।
कृणोमि वध्रि विष्कन्धं मुष्काबर्हो गवामिव ॥2॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
पिशंगे सूत्रे खृगलं तदा बध्नन्ति वेधसः ।
श्रवस्युं शुष्मं काववं वध्रि कृण्वन्तु बन्धुरः ॥3॥
येना श्रवस्यवश्चरथ देवा इवासुरमायया ।
शुनां कपिरिव दूषणो बन्धुरा काववस्य ॥4॥
दुष्ट्यै हित्वा मत्स्यामि दूषयिष्यामि काववम् !
उदाशवो रथाइव शपथेभिः सरिष्यथ ॥5॥
एकशतं विष्कन्धानि विष्ठिता पृथिवीमनु ।
तेषां त्वामग्र उज्जहरुर्मणिं विष्कन्धदूषण ॥6॥

शत्रु भय से रक्षार्थ—

1. 'पुरुष वृक्ष' पीपल और गायत्री सारोत्पन्न अत्यन्त बली खदिर वृक्ष के संयोग से निर्मित 'अश्वत्थमणि' के निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके धारण करने पर शत्रुओं के मानसिक भावों में परिवर्तन होता है । वह बदला लेने की अपेक्षा मैत्री और समझौते की बात सोचते हैं—

पुमान् पुंसः पारिजातोऽश्वत्थः खदिरादधि ।
स हन्तु शत्रून मामकान् यानहं द्वेष्मि मे च माम् ॥1॥
तानश्वत्थ निः शृणीहि शत्रून् वैबाध दोधतः ।
इन्द्रेह वृत्रघ्ना मेदी मित्रेण वरुणेन च ॥2॥
यथाश्वत्थ निरभनोऽतर्महत्यर्णवे ।
एवा तान्त्सर्वान्निर्भङ्ग्धि यानहं द्वेष्मि ये च माम् ॥3॥
यः सहमानश्चरसि सासहानश्व ऋषभः ।
तेनाश्वत्थ त्वया वयं सपत्नान्त्सहिषी महि ॥4॥
सिनात्वेनान् निर्ऋतिमृत्योः पाशैर मोक्यैः ।
अश्वत्थ शत्रून् मामकान् यानहं च माम् ॥5॥
यथाश्वथ वानस्पत्यानारोहन् कृणुषेऽधरान् ।
एवा मे शत्रोर्मूर्धानं विष्वग् भिन्द्धि सहस्व च ॥6॥
ते ऽधराञ्चः प्रप्लव तां छिन्ना नौरिव बन्धनात् ।
न वैबाधप्रणुत्तानां पुनरस्ति निवर्तनम् ॥7॥
प्रैणान् नुदे मनसा प्रचित्तनोत ब्रह्मणा ।
प्रैणान् वृक्षस्य शाखायाश्वत्थस्य नुदामहे ॥8॥

2. जिन शक्तिशाली शत्रुओं से हानि की आशंका हो और निरन्तर उनसे भय बना रहता हो उन्हें अनुकूल करने व वशी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूत करने के लिए निम्न मन्त्रों का प्रयोग किया जाना अत्यन्त लाभदायक रहता है। प्रयोग करते समय यह भावना करें कि शत्रु हाथ जोड़े मैत्री की भिक्षा मांग रहा है और क्षमा याचना के लिए आतुर है।

तन्त्सत्योजा: प्रदहत्वग्निवश्वानरो वृषा।
यो नो दुरस्याद् दिप्साच्चाथ यो नो अशतियान् ॥1॥
यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति।
वैश्वानरस्य दंष्ट्रयोरग्नेरपि दधामि तम् ॥2॥
य आगेर मृगयन्ते प्रतिक्रोशे ऽमावास्ये।
कृव्योदा अन्यान् दिप्सत: सर्वा स्त्सान्त्सहसा सहे ॥3॥
सहे पिशाचा न्त्सहसया द्रविणं ददे।
सर्वान् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्ऋध्यताम् ॥4॥
ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण मिमते जवम्।
नदीषु पर्वतेपु ये सं तै: पशुभिर्विदे ॥5॥
तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव।
श्वान: सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम् ॥6॥
न पिशाचै: सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभि:।
पिशा वास्तमान्नश्यन्ति यमहं ग्रामनमाविशे ॥7॥
यं ग्राम माविशत इद मुग्रं सहो मम।
पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पाप मुप जानते ॥8॥
ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिन मशकाइव।
तानहं मन्ये दुर्हिताञ्जेन अल्पशयूनिव ॥9॥
अमितं निर्क्र धत्तामश्व मिवाश्वा धान्या।
मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान्न मुच्यते ॥10॥
अव मन्युरवायताव बाहू मनोयुजा।
पराशर त्वं तेषांप राञ्चशुष्म मर्दयाधा नो रयिमा कृधि ॥1॥
निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तं यं देवा: शरूमस्यथ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेह हविषाहम् ॥2॥
इन्द्रश्चकार प्रथमं नैर्हस्तं सुरेभ्य:।
जयन्तु सत्वानो मम स्थिरेणेंदुणे मेदिना ॥3॥
निर्हस्त: शत्रूरभिदान्नस्तु ये सेनाभियु धमान्यन्त्यस्मान्।
समपयेन्द्र महता वधन द्रात्वेषामघहारो विविद्ध ॥1॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिशंगे सूत्रे खृगलं तदा वहनन्ति वेधसः ।
श्रवस्युं शुष्मं काबवं वध्रि कव्वन्तु वन्धुरः ॥3॥
येना श्रवस्यवश्चरथ देवा इवासुरमायया ।
शुनां कपिरिव इषणो बन्धुरा काबवस्य ॥4॥
दुष्ट्यै हित्वा मत्स्यामि दूषयिष्यामि काववम् ।
उदाशवो रथाइव शपथेभिः सरिष्यथ ॥5॥
एकशतं विष्कन्धानि विष्ठिता पृथिवीमनु ।
तेषां त्वामग्र उज्जहरुर्मणिं विष्कन्धदूषण ॥6॥

शत्रु भय से रक्षार्थ—

1. 'पुरुष वृक्ष' पीपल और गायत्री सारोत्पन्न अत्यन्त बली खदिर वृक्ष के संयोग से निर्मित 'अश्वत्थमणि' के निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके धारण करने पर शत्रुओं के मानसिक भावों में परिवर्तन होता है। वह बदला लेने की अपेक्षा मैत्री और समझौते की बात सोचते हैं—

पुमान् पुंसः पारिजातोऽश्वत्थः खदिरादधि ।
स हन्तु शत्रून मामकान् यानहं द्वेष्मि मे च माम् ॥1॥
तानश्वत्थ निः शृणीहि शत्रून् वैबाध दोधतः ।
इन्द्रेह वृत्रघ्ना मेदी मित्रेण वरुणेन च ॥2॥
यथाश्वत्थ निरभनोऽन्तर्महत्यर्णवे ।
एवा तान्त्सर्वान्निर्भङ्ग्धि यानहं द्वेष्मि ये च माम् ॥3॥
यः सहमानश्चरसि सासहानश्व ऋषभः ।
तेनाश्वत्थ त्वया वयं सपत्नान्त्सहिषी महि ॥4॥
सिनात्वेनान् निऋतिर्मृत्योः पाशैर मोक्यैः ।
अश्वत्थ शत्रून् मामकान् यानहं च माम् ॥5॥
यथाश्वथ वानस्पत्यानारोहन् कृणुषेऽधरान् ।
एवा मे शत्रोर्मूर्धानं विष्वग् भिन्द्धि सहस्व च ॥6॥
तेऽधराञ्चः प्रप्लव तां छिन्ना नौरिव बन्धनात् ।
न वैबाधप्रणुत्तानां पुनरस्ति निर्वलनम् ॥7॥
प्रैणान् नुदे मनसा प्रचित्तनोत ब्रह्मणा ।
प्रैणान् वृक्षस्य शाखायाश्वत्थस्य नुदामहे ॥8॥

2. जिन शक्तिशाली शत्रुओं से हानि की आशंका हो और निरन्तर उनसे भय बना रहता हो उन्हें अनुकूल करने व वशी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूत करने के लिए निम्न मन्त्रों का प्रयोग किया जाना अत्यन्त लाभदायक रहता है। प्रयोग करते समय यह भावना करें कि शत्रु हाथ जोड़े मैत्री की भिक्षा मांग रहा है और क्षमा याचना के लिए आतुर है।

तन्त्सत्योजा: प्रदहत्वग्निवश्वानरो वृषा।
यो नो दुरस्याद् दिप्साच्चाथ यो नो अशतियान् ॥1॥
यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति।
वैश्वानरस्य दंष्ट्रयोरग्नेरपि दधामि तम् ॥2॥
य आगेर मृगयन्ते प्रतिक्रोशे ऽमावास्ये।
क्रव्योदा अन्यान् दिप्सत: सर्वा स्त्सान्त्सहसा सहे ॥3॥
सहे पिशाचा न्त्सहसपा द्रविणं ददे।
सर्वान् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्ऋध्यताम् ॥4॥
ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण मिमते जवम्।
नदीषु पर्वतेषु ये सं तै: पशुभिर्विदे ॥5॥
तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव।
श्वान: सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम् ॥6॥
न पिशाचै: सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभि:।
पिशा चास्तमान्नश्यन्ति यमहं ग्रामनमाविशे ॥7॥
यं ग्राम माविशत इद मुग्रं सहो मम।
पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पाप मुप जानते ॥8॥
ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिन मशकाइव।
तानहं मन्ये दुर्हिताञ्जेन अल्पशयूनिव ॥9॥
अमितं निक्रंधत्तामश्व मिवाश्वा धान्या।
मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान्न मुच्यते ॥10॥
अव मन्युरवायताव बाहू मनोयुजा।
पराशर त्वं तेषांप राञ्चशुष्म मर्दयाधा नो रयिमा कृधि ॥1॥
निर्हस्तेभ्य: नैर्हस्तं यं देवा: शरूमस्यय।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेह हविषाहम् ॥2॥
इन्द्रश्चकार प्रथमं नैर्हस्तं सुरेभ्य:।
जयन्तु सत्वानो मम स्थिरेणेंदुणे मेदिना ॥3॥
निर्हस्त: शत्रूरभिदान्नस्तु ये सेनाभियु धमान्यन्त्यस्मान्।
समप येन्द्र महता वधन द्रात्वेषामघहारो विविद्ध ॥1॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आतन्वानां आयच्छन्तो ऽस्यन्तो ये च धावथ ।
निर्हस्ताः शत्रवः स्थनेद्रो वीऽद्य पराशरीन् ॥2॥
निर्हस्ताः सन्तु शत्रवो ऽङ्गैषां म्लापया मसि ।
अथैषामिन्दु वेदांसि शतशो वि भजामहै ॥3॥

3 तिलक वृक्ष की मणि को निम्न मन्त्रों से अभिमंत्रित करके पर भजा पर धारण करें तो शत्रु भय से रक्षा होती है। शत्रु वशीभूत होता है। कृत्या अपने प्रयोग कर्ता पर ही आक्रमण करती है। इसके धारण कर्ता को देखते ही शत्रु पलायन कर जाते हैं। इस मणि को शत्रु के उत्पीड़न, शरीर रक्षण और बल के लिए धारण करना चाहिए। यह कवच के रूप में रक्षक सिद्ध होती है और वृद्धावस्था तक जीवित रहने की क्षमता देती है।

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय वध्यते ।
वीर्य वान्त्स पत्न्हा शूरवीरः परिपाणः सुमंगलः ॥1॥
अयं मणिः सपत्न्हा सुवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
प्रत्यक् कृत्या दूषयन्नेति वीरः ॥2॥
अनेनेन्द्रो मणिना वृत्र महन्ननेना सुरान् पराभावन्मनीषी ।
अनेनाज यद् द्यावा पृथ्वी उभे इमे अनेनाजयत्
प्रदिशश्चतस्रः ॥3॥
अयं स्त्राक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः ।
ओजस्वान् विमृधो वशी सो अस्मान् पातु सर्वतः ॥4॥
तदग्नि राह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ।
ते मे देवाः पुरोहिता प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु ॥5॥
अन्तर्दधे द्यावा पृथिवी उताहरुत सूर्यम् ।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्या प्रतिसैरजन्तु ॥6॥
ये स्त्राक्त्यं मणिं जना वर्माणि कृण्वते ।
सूर्य इव दिवमारुह्य वि कृत्या बाधते वशी ॥7॥
स्त्राक्त्येन मणिना ऋषिणेव मनीषिणा ।
उजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः ॥8॥
याः कृत्या आंगिरसीर्याः कृत्या आसुरार्याः कृत्याः ।
स्वयं कृता उ या चान्येभिरा भृताः ।
उभयास्ता परा यन्तु परावतो नवतिं नाव्या अति ॥9॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस्मै मणि वर्म वध्नन्तु देवा इन्द्रो विष्णु: सविता रुद्रो अग्नि: ।
प्रजापति: परमेष्ठी विराड् वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे ॥10॥
उत्तम सुस्योषधीनामनड्‌ वान्जगतामिव व्याघ्र: श्वपदामिव: ।
यमैच्छा माविदाम तं प्रतिस्पाशन मन्ति तम् ॥11॥
स उद् व्याघ्रो भवत्यथो सिंहो अशे वृषा ।
अथो सपत्न कर्शनो यो विभर्तीम मणिम् ॥12॥
नैन घ्यन्त्व प्सरसा न गन्धर्वा न मर्त्या: ।
सर्वा दिशो वि राजेति यो विभर्तीमं मणिम् ॥13॥
कश्यपस्त्वामसृजन कश्यपस्त्वा समैरयत ।
अविभस्त्वेन्द्रो मानुषे विभ्रत् संश्रेषिणे ऽ जयत् ।
मणि सहस्रवीर्यं वर्म देवा अकृण्वत ॥14॥
यस्त्वा कृत्यामिर्यस्त्वा दीक्षा भिर्यज्ञैस्त्वा जिघांसति ।
प्रत्यक् त्वामिन्द्र तं जहि वज्रेणे शत पर्वणा ॥15॥
अयमिद् वै प्रतीवर्त ओस्वन त्संज योमणि; ।
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाण: सुमंगल: ॥16॥
असपत्नं नो अधरादसपत्नं न उत्तरान् ।
इन्द्रासपत्नंन: पश्या ज्ज्योति: शूर पुरस्कृधि ॥17॥
वर्म मे द्यावा पृथिवी वर्मा हर्वर्म सूर्य: ।
वर्म में इन्द्रश्चाग्निश्च वर्म धाता दधातु मे ॥18॥
एन्द्राग्नं वर्म वहुलं यदुग्रं धिश्वे देवा नाति विघ्यन्ति सव ।
तन्मे तन्वं त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्माञ्जरदष्टिर्यथा
सानि ॥19॥
आ मारुक्षद् देवमणिर्मह्या अरिष्टततये ।
इमं मेयिमभि संविशध्वं तनूपानं त्रिवथभोजसे ॥20॥
अस्मिन्निन्द्रो वि दधातु नृम्णमिमं देवसो अभिसंविशध्वम् ।
दीर्घायुत्वाय शतशारदायायु ष्माञ्जरदष्टि यथासत् ॥21॥
स्वस्ति दा विशां पतिर्वृत्रहा विमृघो वशी ।
इन्द्रो वध्नातु ते मणि जिगीवां अपराजित: सामपा अभयं-
करो वृषा ।
सत्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वत: ॥22॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृत्यु से रक्षा के लिए—

यम्रोदनं प्रथम जा ऋतस्य प्रजापतिस्तपसा ब्रह्मणे ऽ पचत् ।
यो लोकानां विवृतिर्नाभिरेषात् तेनौदतेनाति तराणि मृत्युम् ॥1॥

(1)

येनातरत् भूत कृतोऽति मृत्युं यमन्वविन्दन् तपसा श्रमेण ।
यं पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वं तनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥2॥

यो दाधार पृथिवी विश्व भोजसं यो अन्तरिक्ष मापृणाद् रसेन ।
यो अस्तम्नाद् दिव मूर्ध्वो महिम्ना तेनौदनेनाति तराणि
मृत्युम् ॥3॥

यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः
संवत्सरो यस्कान्निर्मितो द्वादशारः ।
अहोरात्रा यं परियंतो नापुस्ते नौदने नाति तराणि मृत्युम् ॥4॥
यः प्राणदः प्राणदवान् बभूवः यस्मै लोका घृतवंतः क्षरन्ति ।
ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वास्ते नौदने नाति तराणि
मृत्युम् ॥5॥

यस्मात् पक्वादमृतं सम्बभूव यो गायत्र्या अभिपति वभूव ।
यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपास्ते नौदने नाति तराणि
मृत्युम् ॥6॥

अव बाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये मेऽप ते भवन्तु ।
ब्रह्मोदनं विश्वजितं पचामि श्रृण्वन्तु मे श्रद्धानस्य देवाः ॥7॥

(2)

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यवेदम् ।
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुष सनेम ॥1॥

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह साम्विदानः ।
यो नो दिदेव यतमो जघ्रा स यथा सो अस्त
परिधिष्पताति ॥2॥

यथा सो अस्य परिधिष्पताति तथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।
विश्वेभिर्देवैः सह सम्विदानः ॥3॥
अक्ष्यौनि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि वृन्द्धि प्रदतो
मृणीहि ।
पिशाचो अस्य यतमो जघासग्ने यविष्ठ प्रति तं श्रृणीहि ॥4॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत्
पिशाचै: ।
तदग्ने विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसम, सुमेरयाम् ।।5।।
आमे सुपक्वे शवले पिवक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ ।
क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भा कृष्ट पच्ये अशने धान्ये य: ।।6।।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्वा मगदो मस्तु ।।7।।
अपां मा पाने यतमो नदम्भ कृत्याद् यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यासयन्त गदोयमस्तु ।।8।।
दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भ क्रयाद् यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्ता मगदयोयमस्तु ।।9।।
क्रव्याद मग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेद: ।
तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तुच्छिन्तु सोम: शिरो अस्य
वृष्णु ।।10।।

ज्वर शान्ति के लिए—

भागवत में वर्णित निम्न श्लोकों का श्रद्धापूर्वक पाठ करने से ज्वर में शान्ति होती है । पाठ के साथ श्लोकों के अर्थ और प्रसंग का भी ध्यान रखना चाहिए । श्लोक और अर्थ इस प्रकार है :—

ज्वर उवाच

नमामि त्वानन्तशक्ति परेशं
सर्वात्मनं केवलं ज्ञाप्तिमात्रम् ।
विश्वोत्पत्तिस्थानसंरोहेतुं
यत्तद् ब्रह्म ब्रह्मलिंग प्रशान्तम् ।।
कालो दैवं कर्म जीव: स्वभावो ।
द्रव्यं क्षेत्र प्राण आत्मा विकार: ।
तत्संघातो वीजरोह प्रवाह—
स्त्वन्मायैषा तन्निषेधं प्रपद्ये ।।
नानाभावेललियैवोपपन्ने—
देवान् साधूंल्लोकसेतून् विभर्षि ।
हंस्युन्मार्गात् हिंसया वर्तमानान्
जन्मैतत्ते भारहाराय भूमै: ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तप्तो हं ते तेजसा दुस्सहेन
शान्तोग्रेणात्युत्वगेन ज्वरेण ।
तावत्तापो देहिनां ते ङ्घ्रिमूलं
नो सेवेस् यांवदाशानु. वद्धाः ।।

श्री भगवानोवाच

त्रिशिस्ते प्रसन्नो स्मि व्येतु ते मज्ज्वराद् भयम् ।
यो नो स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद् भयम् ।
इत्युक्तो च्युतमानम्य गतो माहेश्वरो ज्वरः ।

ज्वर ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा—भगवन् ! आपकी शक्तियों की कोई सीमा नहीं है, ब्रह्मादि देवता सब ईश्वर माने जाते हैं । आप उनके भी परम महेश्वर हैं । आप सर्वात्मा और सबके स्वरूप और ज्ञान के आकार हैं । विश्व की उत्पत्ति, स्थिति लय के मूल में आप ही हैं । श्रुतियां आपका ही गुणगान करती हैं । आप पूर्ण ब्रह्म हैं, विकार रहित हैं । मेरा प्रणाम स्वीकार हो । काल, दैव, कर्म, जीव, स्वभाव भूत, सूक्ष्म, शरीर सूत्र, अहंकार. ग्यारह इन्द्रियां और पांचों भूत, इन सबका संघात रूप लिंग देह और उसके बीज का उगना और बढ़ना यह सब आपकी माया का फल है । परन्तु आप इन सबसे अलिप्त रहते हैं । मैं आपकी शरण में आता हूं । हे प्रभो ! आप देवताओं, साधुगणों और लोक-मर्यादा की रक्षा के लिए लीला से ही अनेकों रूपों को धारण करते हैं और हिंसा व दुष्प्रवृत्तियों को आधार मानकर धनोपार्जन करने वालों का नाश करते हैं । आप पृथ्वी पर पापियों के नाश के लिए अवतीर्ण हुए हैं ! हे नाथ । आपके शान्त. उग्र और सहन न होने वाले अत्यन्त भयानक तेज रूप ज्वर से मेरा शरीर जल रहा है । हे प्रभो ! शरीरधारी प्राणियों को तभी तक संताप रहता है जब तक वह आशा और तृष्णा के बन्धन में बंधे रहते हैं और आपकी शरण ग्रहण नहीं करते । अतः मैं आपकी शरण ग्रहण करता हूं । आप मेरे ताप की निवृत्ति करें ।

इसपर भगवान कृष्ण ने त्रिशिरा ज्वर को सम्बोधित करते हुए कहा—तुम्हारी स्पष्ट स्वीकारोक्ति पर मुझे प्रसन्नता है । अब तुम्हें मेरे तेज रूप ज्वर से भयभीत नहीं होना चाहिए । इतना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही नहीं, जो साधक हमारी इस वार्ता का पाठ व स्मरण करेंगे वह भी तुझसे निर्भय होंगे। भगवान के इस प्रकार कथन पर शिव का ज्वर उन्हें प्रणाम करके चला गया।

होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार रोगी के रोग के लक्षणों का निरीक्षण करते हुए ऐसी दवा का चुनाव किया जाता है जो इसी तरह के सशक्त लक्षण उत्पन्न करने की क्षमता रखती हो। जिस तरह सूर्य के प्रकाश में लेम्प व मोमबत्ती का प्रकाश की प्रतीत नहीं होता उसी तरह समान लक्षण वाले सशक्त रोग को उत्पन्न करके पूर्व का रोग नष्ट हो जाता है। वह दवा इतनी सूक्ष्म होती है कि उससे उत्पन्न रोग भी तुरन्त शान्त हो जाता है। इस रोग निवृत्ति के समानता के सिद्धान्त को उपरोक्त स्तोत्र में संकेत किया गया है। अतः मनोवैज्ञानिक संकेत पद्धति का उपयोग करते हुए उपरोक्त श्लोकों का पाठ करते हुए यह भावना करनी चाहिए कि भगवान कृष्ण ने तीव्र ज्वर का उग्र रूप धारण कर लिया है और वास्तविक ज्वर उनके सामने अल्प शक्ति व आकारवाला रह गया है। उसका अस्तित्व समाप्त-प्राय लगता है वल्कि देखते-देखते भगवान विष्णु ने बौने से क्षण भर में इतना विशाल रूप धारण कर लिया था कि तीन पग में सारे पृथ्वी, आकाश, और अन्तरिक्ष को नाप लिया। भगवान के अत्यन्त विशाल, उग्र व ज्वर के अल्प रूप का ध्यान करना चाहिए और ज्वर की शक्ति को क्षीण होते और कांपते हुए देखे। इस क्रिया से ज्वर की निश्चित शान्ति होती है।

(2)

ओम नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो ज्योतिष्मतंगाय नमो नमः सिद्धिरुद्र आज्ञापयति स्वाहा।

इस मन्त्र का प्रयोग एकातरा, तिजरा अथवा चौथिया ज्वर की शान्ति के लिए होता है। इसकी विधि इस प्रकार है कि हाथ में सरसों के कुछ दाने लेकर उपरोक्त मन्त्र का सात बार उच्चारण करके रोगी के शरीर पर फेंकना चाहिए। यह क्रम सात बार चलना चाहिए।

(3)

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दंष्ट्रैव कालानलसंनिभानि।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिशो न जाने न लभे चशर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥

उपरोक्त मन्त्र का प्रथम श्रीकृष्ण भगवान को नमस्कार करके विश्वासपूर्वक जप करना चाहिए। ऐसा करने सें शीघ्र ही ज्वर शांत हो जाता है।

वाल रोगों के नाश के लिए—

(1)

'श्रीमद्भागवत 10।6।22-29' में वर्णित निम्नलिखित क्वच के द्वारा बच्चे की वाधाओं को दूर करके उसकी रक्षा की जा सकती है :—

अव्यादजो ऽङ्घ्रि मणिमांस्तव जान्वथोरु
यज्ञो च्युत: कटितटं जठरं का हयास्य: ।
हृत् केशवस्त्वदुर ईश इनस्तु कण्ठं
विष्णुभुजं मुखमुरुक्रम ईश्वर: कम् ।
चक्रयग्रत: सहगदो हरिरस्तु पश्चात्
त्वत्पार्श्वयोर्धनुरसी मघुहाजनश्च ।
कोणेषु शंख उरुगाय उपर्युपेन्द्र
स्तार्क्ष्य: क्षितो हलधर: पुरुष: समन्तात् ।।
इन्द्रियाणि हृषीकेश: प्राणान् नारायणो वतु ।
श्वेतद्वीप्रपतिश्चित्तं मनो योगेश्वरो वतु: ।।
पृश्निगर्भस्तु ते बुद्धिमात्मानं भगवान् पर: ।
क्रीडन्तं पातु गोविन्द: शयानं पातु माधव: ।।
व्रजन्तमव्याद् वैकुण्ठ आसीनं त्वां श्रिय: पति: ।
भुञ्जानं यज्ञभुक् पातु सर्वग्रहभयंकर: ।।
डाकिन्यो यातु धान्याश्च कूपमाण्डा ये भंकग्रहा ।।
भूतेप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्ष रक्षोविनायका: ।
कोटारा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृकादय: ।
उन्मादा ये ह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रियद्रुह: ।
स्वप्नदृष्टा महोत्पाता वृद्धवालग्रहाश्च ये ।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोनमिग्रहणभीरव: ।।

इस स्तोत्र का प्रयोग गोपियों द्वारा तब किया गया था जब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान कृष्ण ने पूतना का वध किया था और गोपियों ने रोहिणी व यशोदा सहित गाय की पूंछ को घुमाकर कृष्ण के अंगों को सुरक्षित किया था। गोपियों ने कृष्ण को गौमूत्र से स्नान कराया था और सारे शरीर पर गोरज लगाई थी। इसके बाद गोबर का लेप करके भगवान के केशव व अन्य प्रसिद्ध नामों का उच्चारण करते हुए सुरक्षित किया था। तत्पश्चात् आचमन किया और 'अज' आदि ग्यारह बीज मन्त्रों से अपने अंगों में अंगन्यास व करन्यास करके बालक के अंगों में बीजन्यास किया। इसके बाद गोपियों ने उपरोक्त स्तोत्र का उच्चारण करते हुए कृष्ण के अंगों की रक्षा की थी।

इस स्तोत्र का अर्थ इस प्रकार है :—

'तेरे पैरों की अजन्मा भगवान, घुटनों की मणिमान, जांघों की यज्ञ पुरुष, कमर की अच्युत, पेट की हयग्रीव, हृदय की केशव, वक्ष की ईश, गले की सूर्य, बांहों की विष्णु, मुख की ऊरुक्रम और सर की भगवान रक्षा करे। आगे चक्री, पीछे गदाधर दोनों पार्श्वों में धनुष व खड्गधारी भगवान मधुसूदन और अजन्मा चारों कोणों में शंखधारी उरुगाय, ऊपर उपेन्द्र, नीचे गरुड़, पृथ्वी पर हलधर और सब तरफ परम पुरुष भगवान निवास करते हुए तेरी रक्षा करें। तेरी इन्द्रियों की ऋषिकेश, प्राणों की नारायण, चित्त की श्वेत द्वीपपति, मन की योगेश्वर, बुद्धि की प्रश्नि गर्भ और अहंकार की षडैश्वर्ययुक्त ईश्वर रक्षा करे। खेल के समय गोविन्द, सुप्तावस्था में माधव, चलते हुए वैकुण्ठ, बैठने पर श्रीपति, भोजन करते हुए सब ग्रहों को भयग्रस्त करते हुए यज्ञ भोक्ता भगवान रक्षा करे। भगवान विष्णु के नाम मात्र का उच्चारण करते हुए डाकिनी, राक्षसी कूष्माण्डा आदि बाल ग्रह, यक्ष राक्षस, विनायक, भूत प्रेत, कोटरा, रेवती ज्यैष्ठा, पूतना और मातृका आदि व शरीर, इन्द्रिय और प्राणों को नष्ट करने वाले उन्माद और अपस्मार आदि रोग, स्वप्न में दृष्टिगोचर होने वाले बड़े उत्पात वृद्ध, ग्रह व बालग्रह आदि सब अनिष्ट नष्ट हो जायं।

(2)

दामोदरः पातु पादौ जानुनी विष्टरश्रवाः।
ऊरू पातु हरिर्नाभिः परिपूर्णतमः स्वयं॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कटिं राधापतिः पातु पीतवासा स्तवोदरम् ।
हृदयं पद्मनाभश्च भुजौ गोवर्द्धनोद्धरः ॥
मुखं च मथुरानाथो द्वारकेशः शिरोऽवतु ।
पृष्ठं पात्वसुरध्वंसी सर्वतो भगवान् स्वयम् ॥

उपरोक्त श्लोकों को किसी बर्तन में अथवा हाथ में गंगाजल या गौ मूत्र को लेकर पढ़ना चाहिए तथा बच्चे के शरीर पर छिड़क कर थोड़ा-सा बच्चे के मुंह में डालना चाहिए। बचे हुए जल को बच्चे की शैया के चारों ओर छिड़क देना चाहिए। बाद में गाय की पूंछ से झाड़ देना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे के सभी रोग बाधादि शान्त हो जाते हैं।

(3)

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहीं काहू व्यापा ॥

बालक के ज्वर नाश के लिए उपरोक्त चौपाई का 108 बार जप करना चाहिए। इसके साथ-साथ एक विशिष्ट धूप देने से भी लाभ होता है। धूप इस विधि से बनानी चाहिए :—

शिलाजीत, हल्दी, आमी हल्दी, गूगल, नीम के पत्ते, वच, कूट और शहद, सभी वस्तुओं को बराबर मात्रा में कूटकर और देशी घी में मिश्रित करके धूप बना लेनी चाहिए।

इन दोनों प्रयोगों से बालक का ज्वर शान्त हो जाता है।

अर्श रोग की शान्ति के लिए—

मल त्याग के बाद अपनी अंगुलियों से गुदा के चारों ओर दबाना चाहिए ताकि उसमें जो मल रुका हो, वह निकल जाय। तत्पश्चात् शुद्धि के लिए लाये जल को निम्न मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करें और उसमें फूंक मारते जायं। इसी से गुदा की शुद्धि कर लें। मन्त्र इस प्रकार है :

ओम छई छुई छनक छलाई आहुं।
आहुं वलं वलां वलीं हूं ॥

इस मन्त्र को रोगी किसी भी समय जप सकता है। रोगी इस मन्त्र को एक आवश्यक साधन मान ले तो आशातीत लाभ होगा। पाठ-पूजा के समय भी इसका जप किया जाये तो श्रेष्ठ है। उस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समय यह भावना करनी चाहिए कि मन्त्र के प्रभाव से रोग, कुष्ठादि का नाश हो रहा है।

इस मन्त्र का प्रयोग अनेकों रोगियों पर किया गया है और उन्हें आश्चर्यजनक लाभ हुआ है।

चेचक रोग निवृत्ति के लिए—

शीतला मन्त्र

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रें श्रों श्रः ॐ खरस्थां दिगम्बरा विकट नयनां तौयस्थितां भजामि स्वाहा। स्वांगस्थां प्रचण्डरूपां नमाम्यात्मविभूतये।

एक मिट्टी के शुद्ध पात्र में पवित्र जल लेकर ग्यारह बार उपरोक्त मन्त्र का पाठ क के इस जल को अभिमन्त्रित करें और रोगी को पिला दें और शरीर के समस्त अं ों पर उसका अभिसिंचन भी करें। इसके साथ-साथ 11 बार मन्त्र का उच्चारण करें, मोर पंख या चिमटे से रोगी को झाड़ना चाहिए। रोग की शान्ति तक नित्य प्रति प्रातः सांय दो बार यह प्रयोग चलते रहना चाहिए।

भूत-प्रेत वाधा निवारण के लिए—

स्याने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या।
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति।
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।

इस मन्त्र की सिद्धि 3000 मन्त्रों के जप से होती है, नित्य स्नान करके जप करना चाहिए और भावना करनी चाहिए कि इससे मेरे अन्दर इतनी शक्ति भरी जा रही है कि भूत-प्रेत मेरे सामने हाथ जोड़े खड़े हैं और किसी भी आज्ञा के पालन की प्रतीक्षा में हैं।

सिद्ध होने पर जब किसी रोग के भूत-प्रेत बाधा के आवेश को दूर करना हो तो इस प्रकार प्रयोग करें:

किसी मिट्टी के शुद्ध पात्र में पवित्र जल लें (गंगाजल हो तो उत्तम है) और उपरोक्त मन्त्र को सात बार उच्चारण करके दायें

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ की तर्जनी अंगुली फिरावें। इससे वह जल अभिमन्त्रित हो जाता है। इस जल को रोगी को पिलाना चाहिए। शेष जल को उसके अंगों पर छिड़कना चाहिए। बाधा निवृत्ति होने तक नित्य दो बार इस विधि को अपनाना चाहिए।'

सर्प भय व विष नाश के लिए—

(1)

नवनाग स्तोत्रम्

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा ॥1॥
एतानि नव नामानि नगानां च महात्मनाम्।
सायं काले पठेन्नित्यं प्रातः काले विशेषतः।
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥2॥

घर में कभी सर्प दिखाई दे गया हो, किसी ऐसे स्थान से आना-जाना पड़ता हो जहां सर्प का निवास बताया जाता हो तो सर्प दंश भय से मुक्त होने के लिए उपरोक्त स्तोत्र का नित्य पाठ करना चाहिए।

(2)

गरुड़ध्वजानुस्मरणाद् विषवीर्यं व्यपोहति।

सर्प विष के प्रभाव को कम करने के लिए 'गरुड़ध्वज' नाम का जप होना चाहिए। इससे सर्प विष की तेजी कम हो जाती है।

दुःस्वप्न-दोष निवृत्ति के लिए—

(1)

गजेन्द्र स्तोत्र का विधिवत् पाठ करनें से दुःस्वप्न दोष की निवृत्ति होती है और वही दुःस्वप्न सुख प्रदान करने वाला हो जाता है।

(2)

ओम ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गतिनाशिन्ये महामायायै स्वाहा।
कल्पवृक्षेति लोकानां मन्त्रः सप्तदशाक्षरः।
शुचिश्च दशधा जप्त्वा दुःस्वप्न सुखवान् भवेत् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रात:काल स्नानादि से निवृत होकर साधना पर बैठें और उपरोक्त मन्त्र का 10 बार श्रद्धापूर्वक जप करें। इससे दु:स्वप्न के अशुभ परिणामों का भय नहीं रहता है।

(3)

ओम नमः शिवं दुर्गा गणपतिं कार्तिकेय दिशेश्वरम्।
धर्म गंगां च तुलसीं राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्॥
नामान्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत्।
वाञ्छितं च लभेत् सोऽपि दु:स्वप्न शुभवान् भवेत्॥

शास्त्रज्ञों का आश्वासन है कि जल से स्नान करके और पवित्र होकर ईश्वरीय शक्तियों में इन ग्यारह नामों—1—शिव, 2—दुर्गा, 3—गणपति, 4—कार्तिकेय, 5—सूर्य, 6—धर्म, 7—गंगा, 8—तुलसी, 9—राधा, 10—लक्ष्मी, 11—सरस्वती का जप करें। इससे दु:स्वप्न-दोष का निवारण हो जाता है। जिस दु:स्वप्न के भय से आशंका थी वही शुभ और वांछित फल देने वाला सिद्ध होता है।

(4)

ॐ अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम्।
हंस नारायणं चैव ह्येतन्नमाष्टकं शुभम्॥
शुचिः पूर्वमुखः प्राज्ञो दशकृत्वश्च यो जपेत्।
निष्पापो पि भवेत्सो पि दु:स्वप्न शुभवान भवेत्॥

दु:स्वप्न का भय होने पर प्रात:काल स्नान करके पूर्व की ओर मुंह करके साधना पर बैठें और भगवान के इन 8 नामों—1—अच्युत, 2—केशव, 3—विष्णु, 4—हरि, 5—सत्य, 6—जनार्दन, 7—हंस, 8—नारायण का श्रद्धा से जप करना चाहिए। जप संख्या कम-से-कम दस तो होनी ही चाहिए अधिक हो सके तो उत्तम है। इससे साधक निष्पाप हो जाता है और शुभ फल प्रदान करता है।

स्वास्थ्य लाभ के कुछ अन्य प्रयोग—

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहीं काहुहि व्यापा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा।
सब सुन्दर सब बिरुज शरीरा ॥

उपर्युक्त चौपाइयों का इस मन्त्र 'ॐ क्लीं तेजसे रां तारक ब्रह्म स्वाहा' के साथ प्रति दिन 108 बार जपना चाहिए अथवा रामचरित मानस का नवाह्न या मासिक पाठ उपर्युक्त चौपाई का सम्पुट देकर करना चाहिए। रोग निवृत्ति होने तक यह साधना चलती रहनी चाहिए।

(2)

ॐ नमो भगवते तस्मै कृष्णायाकुण्ठमेधसे।
सर्व व्याधिविनाशाय प्रभो माममृतं कृधि ।।

उपरोक्त मन्त्र का प्रति दिन प्रातःकाल में किसी से बात किये बिना तीन बार जप कर लेना चाहिए। अनुष्ठान के लिए इस मन्त्र की जप संख्या 51000 है और दशांश के लिए 5100 आहुतियों का हवन करना चाहिए। इससे महान् अनिष्टों की शान्ति होती है।

रोग और सब प्रकार की व्याधि के लिए—

मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देव-देव नमो स्तुते ॥

उपरोक्त मन्त्र को विश्वासपूर्वक किसी बर्तन में जल लेकर उस बर्तन पर हाथ रखकर सात बार उच्चारण करके उस जल को पी लेना चाहिए। ऐसा करने से निश्चित ही शरीर निरोग हो जाता है।

(4)

ॐ क्लीं रीं हुं फट्—रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
रोगान् नाशय में क्षिप्रं श्रियं दासस्य देहि में ॐ क्लीं रां हुं फट् ॥

उपरोक्त मन्त्र को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रतिदिन 1100 जप 41 दिन तक करना चाहिए। 41 दिन के बाद घृत, दूर्वा (स्वेत) और गुग्गुल से दशांश हवन करना चाहिए तथा कम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से-कम चार ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिए। स्वास्थ्य लाभ होने तक जप करते रहना चाहिए।

(5)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमः सर्वाधाराय भगवते अस्य मम(···) सर्वरोगविनाशाय ज्वल-ज्वल एनं दीर्घायुष्यं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वाधाराय शान्ताय नमः परम ब्रह्मणं।
दीर्घायुष्यं प्रयच्छास्य सर्वान् रोगान् विनाशय॥

उपर्युक्त मन्त्र का सवा लाख जप ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले से करवाये अथवा स्वयं करे। उपर्युक्त मन्त्र से मम' के आगे जिस व्यक्ति के लिए जप करना हो उसका नाम, गोत्र और सम्बन्ध का उच्चारण करना चाहिए। विश्वासपूर्वक साधना से इसका आशाजनक लाभ होता है। इससे रोग की शान्ति होती है।

(6)

अच्युत चामृतं चैव जपैदौषधकर्मणि।

औषधि सेवन के समय अच्युत' और 'अमृत' आदि नामों का जाप करना चाहिए ताकि उसका प्रभाव शक्तिशाली हो।

जीवन सुखमय होने के लिए—

1—ॐ ऋतं च मे मृत मे यक्ष्मं च मे नामयच्च मे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वं च मे नमित्रं च मे भयं च मे सुखं च मे सुषश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

2—उपयामगृहीस्तो स्या श्वनं तेजः सारस्वतं वीर्यमन्दं जलम्। एप ते योनिमोदाय त्वानन्दाय महस त्वा॥

3—ओम भेषजमसि भेषजं गवे श्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखे मेषाय मेध्यै॥

मंगल कार्यों की सिद्धि के लिए—

ॐ असो यस्तामो अरण उत वभ्रूः सुमंगल। ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वेषा हे ईमहे॥

को सि कतमो सि कस्मै त्वा काय त्वा।
सुश्लोक सुमंगल सत्य राजन्॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा।
सब सुन्दर सब विरुज शरीरा ॥

उपर्युक्त चोपाइयो का इस मन्त्र 'ॐ क्लीं तेजसे रां तारक ब्रह्म स्वाहा' के साथ प्रति दिन 108 बार जपना चाहिए अथवा रामचरित मानस का नवाह्न या मासिक पाठ उपर्युक्त चौपाई का सम्पुट देकर करना चाहिए। रोग निवृत्ति होने तक यह साधना चलती रहनी चाहिए।

(2)

ॐ नमो भगवते तस्मै कृष्णायाकुण्ठमेधसे।
सर्व व्याधिविनाशाय प्रभो मामृतं कृधि ।।

उपरोक्त मन्त्र का प्रति दिन प्रातःकाल में किसी से बात किये बिना तीन बार जप कर लेना चाहिए। अनुष्ठान के लिए इस मन्त्र की जप संख्या 51000 है और दशांश के लिए 5100 आहुतियों का हवन करना चाहिए। इससे महान् अनिष्टों की शान्ति होती है।

रोग और सब प्रकार की व्याधि के लिए--

मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देव-देव नमो स्तुते ॥

उपरोक्त मन्त्र को विश्वासपूर्वक किसी बर्तन में जल लेकर उस बर्तन पर हाथ रखकर सात बार उच्चारण करके उस जल को पी लेना चाहिए। ऐसा करने से निश्चित ही शरीर निरोग हो जाता है।

(4)

ॐ क्लीं रीं हुं फट्—रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
रोगान् नाशय में क्षिप्रं श्रियं दासस्य देहि में ॐ क्लीं रां हुं फट् ॥

उपरोक्त मन्त्र को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रतिदिन 1100 जप 41 दिन तक करना चाहिए। 41 दिन के बाद घृत, दूर्वा (स्वेत) और गुग्गुल से दशांश हवन करना चाहिए तथा कम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से-कम चार ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिए। स्वास्थ्य लाभ होने तक जप करते रहना चाहिए।

(5)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नम: सर्वाधाराय भगवते अस्य मम (⋯) सर्वरोगविनाशाय ज्वल-ज्वल एनं दीर्घायुष्यं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वाधाराय शान्ताय नम: परम ब्रह्मणे।
दीर्घायुष्यं प्रयच्छास्य सर्वान् रोगान् विनाशय॥

उपर्युक्त मन्त्र का सवा लाख जप ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले से करवाये अथवा स्वयं करे। उपर्युक्त मन्त्र से मम' के आगे जिस व्यक्ति के लिए जप करना हो उसका नाम, गोत्र और सम्बन्ध का उच्चारण करना चाहिए। विश्वासपूर्वक साधना से इसका आशाजनक लाभ होता है। इससे रोग की शान्ति होती है।

(6)

अच्युत चामृतं चैव जपेदौषधकर्मणि।

औषधि सेवन के समय अच्युत' और 'अमृत' आदि नामों का जाप करना चाहिए ताकि उसका प्रभाव शक्तिशाली हो।

जीवन सुखमय होने के लिए—

1—ॐ ऋतं च मे मृतं मे यक्ष्मं च मे नामयच्च मे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वं च मे नमित्रं च मे भयं च मे सुखं च मे सुपस्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

2—उपयामगृहीस्तो स्या श्वनं तेज: सारस्वतं वीर्यमन्दं जलम्। एप ते योनिमोदाय त्वानन्दाय महस त्वा॥

3—ओम भेषजमसि भेषजं गवे श्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखें मेषाय मेष्यै॥

मंगल कार्यों की सिद्धि के लिए—

ॐ असौ यस्तामो अरण उत वभ्रु: सुमंगल। ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता: सहस्रशो वेषा हे ईमहे॥

को सि कतमो सि कस्मै त्वा काय त्वा।
सुश्लोक सुमंगल सत्य राजन्॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पारिवारिक सुख-शान्ति के लिए —

ॐ दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः। अश्रद्धामनृते दधाच्छ्द्धां सत्ये प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानঁ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु ॥

कष्टों से रक्षा के लिए—

ॐ समुद्रो सि विश्वव्यचा अजो स्येकपादहित सि वुध्न्यो वाग स्येन्द्रमसि सदो स्यृतस्य द्वारो मा मा सन्ताप्तमध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मे स्मिन्पथि देवयाने भूयात् ॥

आसुरी शक्तियों से रक्षा के लिए (स्थूल व सूक्ष्म)

ॐ ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्।

शत्रुओं के विरोध की समाप्ति के लिए—

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् अश्विनो र्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।

सब प्रकार के मंगल के लिए—

किसी भी प्रकार के अमंगल को मंगल और प्रतिकूलता को अनुकूलता में परिवर्तित करने के लिए निम्न मन्त्रों का नित्य पाठ व हवन करें :—

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शयोः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥ 1
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ 2॥
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि
सन्तु ॥3॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु श न इपिरो अभि पांतु
वातः ॥4॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वपूतो शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न औषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु विष्णुः ॥5॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्र भिजलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥6॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाण शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रसवः शम्वस्तु वेदि ॥7॥

शं नः सूर्य उरूचक्षा उदेतु शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः ।
शं नः पर्वता ध्रुवयोशभवन्तु नः सिन्धवः शनु सन्त्वापः ॥8॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णु शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्र शम्वस्तु
वायु ॥9॥

शं नो देवः सविता त्रायमाण शं नो भवन्तुषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवन्तु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु
शम्भुः ॥10॥

(2)

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभव सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरा हवेषु ॥1॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह श्रीभिरस्तु ।
शमभिपाचः शनु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो
अप्याः ॥2॥

शं नो अज एकपाद देवा अस्तु शमहिर्बध्न्यः शं समुद्र ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥3॥

आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तामिदं ब्रह्म क्रियमाण नवीयः ।
शृण्वन्तु नो दिव्या पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥4॥

ये देवनामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजवा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तानुरुगायमद्य यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥5॥

तदस्तु मित्रावरुण ते तदग्ने शं योरस्मम्यमिदमस्तु शस्तम् ।
अशीमहि गाधमृत प्रतिष्ठां नमो दिवे वृहते सादनाय ॥6॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शान्ति-प्राप्ति के लिए—

किसी प्रकार की भी अशान्ति के लिए निम्न मन्त्रों का सफल प्रयोग किया जा सकता है। अशान्ति-आर्थिक, पारिवारिक अथवा सामाजिक हो, उसकी शान्ति हो जाती है। विपरीत ग्रहों की भी इसमें शान्ति होती है। चन्द्र मण्डल के ग्रह, राहु से ग्रस्त, सूर्य, धूमकेतु का अनिष्ट और रुद्र के तीक्ष्ण सन्ताप देने वाले उपद्रव सभी शान्त होते हैं। राहू में होने वाले विघ्न भी शान्त होते हैं।

शान्ता द्यः पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम् ।
शान्ता उदन्वतारापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः ॥1॥
शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः ॥2॥
इयं या परमेष्ठिनी वाग् देवी ब्रह्मसंशिता ।
यथैव संसृजे घोरं तथैव शान्तिरस्तु नः ॥3॥
इदं यत परमेष्ठिनं मनो वाग् देवी ब्रह्मसंशितम् ।
येनेव ससृजे घोर तेनेव शान्तिरस्तु नः ॥4॥
इमानि यानि पंचेन्द्रियाणि मनः षष्ठान मे हृदिब्रह्मणा ।
सशितानि ये रेव समृजे घोर तैरेव शान्तिरस्तु नः ॥5॥
शं नो मित्रः श वरुण विष्णुः श प्रजापतिः ।
शं न इन्द्रो वृहस्पतिः शं नो भवत्यर्यमा ॥6॥
शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्व चमन्तकः ।
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः ॥7॥
शं नो भूमिर्वेष्यमाना शमुल्का निर्हत च यत् ।
शं गावा लोहितक्षीराः शं भूमिख तीर्यतीः ॥8॥
नक्षत्रमुल्कामिहय शमस्तु नः शं नोभिचाराः शमु शमु सन्तु कृत्या ।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोहसर्गाः शमु नो भवन्तु ॥9॥
शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा ।
शं नो मृत्युर्धुमकेतुः शं रुद्रास्तिग्यतेजसः ॥10॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शं रुद्रा: शं वसव: शमादित्या शमग्नय: ।
शं नो महर्षयो देवा: शं देवा शं वृहस्पति: ॥11॥
ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदा सप्त ऋषय नयो: ।
तेमें कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छन्तु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु ।
विश्वे मे देवा: शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवा: शर्मा यच्छतु ॥12॥
यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्त ऋषयो विकु: ।
सर्वाणि शं भवन्त मे शं अस्त्वमय मे अस्तु ॥13॥
पृथ्वी शान्तिरन्तरिक्षॅ शातिद्यौ: शान्तिराप: शान्तिरोषधय शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्ति सर्व मे देवान्ति शान्ति: शान्ति: शांतिभि: । ताभि: शान्तिभि: सर्व शान्तिभि: षयमामो हं यदिह घोर यदिह क्रूर यदिह पापतच्छान्तं तयच्छिव सर्वमेवशमस्तु न: ॥14॥

पाप-निवृत्ति के लिए--

पाप कर्म ही विपत्तियां व संकट लाते हैं ।

पुराने अथवा वर्तमान के पापजनित संस्कारों को नष्ट कर पवित्र जीवन व्यतीत करने और आत्मज्ञान के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए निम्न मन्त्रों का दैनिक पाठ व हवन करना चाहिए ।

मरुतां मन्दे अधि मे व्रवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु ।
आशुनिव सुयमानहव ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वहंस: ॥1॥
उत्समक्षित व्यचन्ति ये सदा य आसिन्चन्ति रसमौषधीषु ।
पुरो दधे मरुत: पृश्निमातृंस्ते नो मुञ्चन्त्वहंस: ॥2॥
पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ ।
शम्भा भवन्तु मरुतो न: स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वहंस: ॥3॥
जप: समुद्राद् दिवमुद् वहन्ति दिव स्पृथिवी ममि सृजति ।
ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वहंस: ॥4॥
ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति ।
ये अद्भिरोशाना मरुतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वहंस: ॥5॥
यदी दिदं मरुतो मारुतेन यदि देवा देव्येनेद्वगार ।
ययमी शिध्वे वसव स्तस्य निष्कृतेरते नो मुञ्चन्त्वहंस: ॥6॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिग्ममनीकं विदित सहस्वन् मारुत शर्धः पृतनासूग्रम ।
स्तोमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥7॥

(2)

मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसो द्रुहवणो यो नुदेथे ।
प्र सत्यावानमवथो भरेषुतौ नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥1॥
सचेतसो द्रुहवणो यो नुदेथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु ।
यो गच्छथो नृचक्षसो बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥2॥
यावङ्गिरसमवथो यावगस्ति मित्रावरुणा जमदग्निमत्रिम् ।
यो कश्यपमवथो यो वसिष्ठं तौ नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥3॥
यो श्यावाश्वमवथो वध्र्यश्वं मित्रावरुण पुरुमीढमत्रिम् ।
यो विमदमवथः सप्तवध्रिं तौ नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥4॥
यो भरद्वाजमवथो यो गविष्ठिर विश्वामित्रं वरुण मित्र
कुत्सम् ।
यो कक्षीवन्तमवथः प्रोत कण्व तौ नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥5॥
यो मेधातिथिमवथो यो त्रिशोक मित्रा वरूणावुशनां काव्यं यो ।
यो गोतममवथः प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥6॥
ययो रथः सत्यवर्त्मर्जुरश्मिर्मिथुया चवन्तमभियाति दुषयन् ।
स्तोमि मित्रावरूणौ नाथिता जोहवीमि तौ नो
मुञ्चन्त्वंहसः ॥7॥

(3)

अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्या रयिम् ।
अप नः शोशुचदघम् ॥1॥
सुक्षत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे ।
अप नः शोशुचदघम् ॥2॥
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकासश्च सूरयः ।
अप नः शोशुचदघम् ॥3॥
प्र यत् ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम् ।
अप नः शोशुचदघम् ॥4॥
प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः ।
अप नः शोशुचदघम् ॥5॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वं हि विश्वतो मुख विश्वत परिभूरसि ।
अप नः शोशुचदघम् ॥6॥
द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेद पारय ।
अप नः शोशुचदघम् ॥7॥
स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षास्वस्तये ।
अप नः शोशुचदघम् ॥8॥

(4)

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रित एनन्मनुष्येषु ममृजे ।
ततो यदि त्वा ग्राहिराशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु ॥1॥
मरीचीर्धूमान प्र विशानु पाप्मन्नुदारान् गच्छोत वा नीहारान् ।
नदीनां फैनां अनुतान् विश्नय भ्रूणाघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व ॥2॥
द्वादशधा निहितं त्रितस्यापमृष्टं मनुष्येसानि ।
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु ॥3॥

(5)

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।
आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत ॥1॥
ऋतस्यतेनादित्या वजत्रा मुञ्चतेह नः ।
यगं यद् यज्ञवा हसः शिक्षन्तो नोपशेकिम् ॥2॥
मेदस्वता यजमानाः स चाज्यानि जुह्वतः ।
अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम् ॥3॥

(6)

यद् विद्वांसो यद्विद्वांस एनांसि चकृमा वयम् ।
यूयं नस्तस्मान्मुञ्च विश्वे देवाः सजोषसः ॥1॥
यदि जाग्रद् स्वपन्नेन एनस्यो करम् ।
भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम् ॥2॥
द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव ।
पूतं पवित्रेणे वाज्य विश्व शुम्भन्तु मेनसः ॥3॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषनाश तान्त्रिक बाधा सर्वदोष निवारणार्थ

मन्त्र—

"ॐ अमृत वरे वर वर प्रवर विशुद्धे हुं फट् स्वाहा।

ॐ अमृत विलोकिनि गर्भ संरक्षिणि आकर्षिणी हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ विमले जय वरे अमृते हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ भर भर संभर सं इन्द्रियबल विशोधिनी हुं हुं फुट् स्वाहा।

ॐ मणि धरि वाजिणी महाप्रतिमरे हुं हुं फट् फट् स्वाहा।"

इन पांच मन्त्रों को चंदन, कस्तूरी, कुंकुम, अलकुक के रस से भोजपत्र पर लिखकर उपरोक्त का जप करें, फिर गले में पहनने या हाथ में बांधने से शाकिनी, प्रेत, राक्षसी या किया हुआ मन्त्र-तन्त्र-मन्त्र का प्रयोग नष्ट हो जाता है।

स्त्री का गर्भ क्षय नहीं होता।

विष भक्षण कर लिया है तो भी उस विष का नाश हो जाता है।

सर्वदोष निवारण मन्त्र—

ॐ नमो पास पत्ताय भस्म जटा श्मशान रचिताय कव चम्म पहिरणाय चुलु चुलु रे चालु चालु रे डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाच छलु छिद्रु जाणु विनाणु गुप्तु प्रकटु चौरासी यन्त्र चूरि चूरि चौरासी मन्त्र चूरि चूरि पराई मुद्रा चूरि चूरि आपणी मुद्रा प्रकट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करि पाराइ भांजि घालि वापु श्री महादेव वणी आज्ञा बांधि भोड़ि आक्रमि सवई दोष जिकवणई अथि गुप्त प्रकटति सवई बांधि आणी घालि महारापात्र हेट्ठि हेट्ठि हेट्ठि दीहउ रीस नीरसउ अद वद न पुगी सी दग मग चरितउ उट्ठियद विखणादिसि हिम देवं किलि किलि शब्दइं जंकार रूपिंहि अदवद वक्रइं छिदि मठा सिणी छिदि अहमद छिदि साविणि छिदि कवांउत्ती छिदि छिदि हो हउरीस निरीसउ षर पोरिसि दिवा करूं मुंजसि मंघ सामिते वार नइ पसंता कंपइ व हुव वसायर ते कचापरि हरिगय की पासी चग भगडटी कर मीडउ डाइणि फोडिसि होरी सणथं विसनागण हरि छंदि सुदरि सगि। ॐ नमो अरि मंत्र राजाय कुछित विटं बनाय अनंत शक्ति सहिताय अष्ट कुल पर्वत बांधि आढार भाव वनस्पती बांधि नव कुल नाग बांधि सात समुद्रि बांधि अट्ठासी सहस्र रिषि बांधि नवानवइ कोडियक्ष बांधि विष्णु रुद्र बांधि नव कोटि देव बांधि छप्पन कोटि चाउड़ा बांधि अट्ठारह पवाठि बांधि छत्तिस राजकुली बांधि मालिष्ठी बांधि कल्लालिणी बांधि तेलणी बांधि ब्रह्माणि बांधि सवई दोष बांधि जिकवण दोष अथि गुप्त प्रकटनि सर्वदोष बांधि भीड़ि आक्रसि आणि घालि महारा पात्र हेट्ठि वउइ वेगि वाय वायं अरिं मन्त्र यं वायण की शकि बांधि बांधि मिडि मिडि आक्रसि आक्रसि वउ वेगी बांधि बांधि।'

इस मन्त्र से पानी अभिमंत्रित करके देने से अथवा झाड़ा देने से सभी प्रकार के दोष व्यंतर डाकिनी, शाकिनी, राक्षस, भूत-प्रेतादि कृत हों चाहे दृष्टि दोष हो चाहे परकृत यंत्र-मंत्रादि हो, सर्व प्रकार के दोष शान्त हो जाते हैं।

ज्वर शांति मन्त्र—

"सीठ्या कारणी पहुया घालिरे ॐ पजारे जरालं किली जइ हणुया नाउं हर संगर की अगन्या श्री महादेव भराड़ा की अगन्या देव गुरु की अगन्या जरो जरालंकि।"

डोरा (धागा) को 10 लड़ा करके उसमें 10 गांठ लगावें तथा 108 वार उपरोक्त मन्त्र को पढ़ें। मन्त्र पढ़ते जायें तथा गांठ लगाते जायें। उस डोरे को गले में या हाथ में बांधने से समय अर्थात् अवधि लेकर आने वाला ज्वर, एकान्तर ज्वर (एक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिन छोड़कर एक दिन आने वाला ज्वर) दुशान्तर ज्वर आदि का नाश होता है।

इसी प्रकार गुग्गल को भी अभिमंत्रित कर जलाने से पूर्व ज्वर का नाश होता है।

सिर पीड़ा हरण मन्त्र—

1. 'ॐ सिद्धि ॐ शंकरू महादेव देहि सिद्ध तेल।'

इस मन्त्र से कच्चा तेल अभिमंत्रित करके सूंघने पर सभी प्रकार के सिर दर्द नष्ट हो जाते हैं।

इस तेल से गूमड़ा, फोड़ा. फुंसी, घावं, अग्निदाह आदि भी ठीक हो जाते हैं।

2. 'ॐ सद्यवाम अघोर ईसान तत् वक्त:।'

इस मन्त्र को एक श्वास में 3 वार जपने से सिर की पीड़ा समाप्त हो जाती है।

इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

उदर व्याधि व अजीर्ण नाशक मन्त्र—

'ॐ ह्रां ह्रीं श्रों क्लीं ब्लीं सर्व ज्वरो नाशय नाशय सर्व प्रत नाशिनि ॐ ह्रीं ठ: भस्वं करि फट् स्वाहा।'

इस महामन्त्र को जपने से या 21 वार पानी अभिमंत्रित करके पिलाने से पेट दर्द, अजीर्ण आदि नष्ट हो जाता है।

वशीकरण मन्त्र—

1 'ॐ भद्र यटा मल धरति सु ठ: ठ: स्वाहा।'

धतुरा कुली 5

मसाण धूल

इन दोनों को लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर इस मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में डालने से उच्चाटन हो जाता है तथा आर्द्रा नक्षत्र में लाल कनेर की 4 अंगुल कील लेकर इस मन्त्र से 6 वार अभिमंत्रित कर जिसके घर में डाल दी जाये वह वश में हो जाता है।

2. 'ॐ हूँ स्वाहा।'

मघा नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ 4 अंगुल इस मन्त्र से

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिमंत्रित कर जिसके घर में गाड़ दी जाये वह वश में हो जाता है।

3 'ॐ सिली खीली स्वाहा।'

अनुराधा नक्षत्र में सरीष की 4 अंगुल की कील इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिसके घर में डाल दी जाये वह वशीभूत हो जाता है।

रक्तस्राव रोकना—

'ॐ मातंग राजाय चिलि चिलि भिलि मितक्ली अमुकस्य (नाम) रक्तं स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

सफेद रंग के डोरे को इस मन्त्र से 21 बार अभिमंत्रित करें। फिर उस डोरे को बांधें तो स्त्रियों का रक्तस्राव नहीं होता।

सुखकारक प्रसव मन्त्र—

'जइंद्रेण कृतं द्वारं इन्द्रेण भ्रकुटी कृतं भंजती इ: कपाटा नि गर्भं मुंच सुशोणितं हुलु हुलु मुंच स्वाहा।'

इस मन्त्र से तेल 21 बार अभिमंत्रित करके पेट के ऊपर मालिश करें और पानी मंत्रित करके पिलावें तो सुख से प्रसव होता है।

गंडमाल नाशक मन्त्र—

'ॐ सिद्धि ॐ संकरू महादेव देहि सिद्धि।'

इस मन्त्र से 108 बार अभिमंत्रित करके गंडमाल पर लगाने से गंडमाल ठीक हो जाता है।

भूतादि उतारना—

1 'ॐ ह्रां ह्रीं हूं सेयउ धोइउ ब्राह्मणी कउ घोइउल कारे लागइ जकोर जाइ भूत बांधि प्रेत बांधि राक्षस बांधि डाकिनि बांधि शाकिनी बांधि डाउ बांधि वगलउ बांधि लहुउउ गरुडु वडउ आसनि मंदु मंदु सुबांधिकसु बांधि सकउ बांधि सकउ बांधि जइने मेरउ वुतउ करहि परिग्रह सन्चरु भीजी धरि मारि वापु प्रचंड

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीर मार स्यंध वीर की शक्ति धरी मारि बापु पूत प्रचंड सहि।'

इस मन्त्र को धूप से अभिमंत्रित करके जलाने से, रोगी पर हाथ फेरने से भूतादि नष्ट हो भाग जाते हैं।

2 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं क्ष: ह: र: फट् स्वांहा।'

इस मन्त्र से सरसों लेकर पढ़ता जाये व रोगी पर सरसों डालता जाये तो भूतादि रोगी को छोड़कर निश्चय ही भाग जाते हैं।

काली खांसी—

काली खांसी, जिसे अनेक लोग कुक्कुर कास भी कहते हैं तथा यह प्राय: छोटे बच्चों को होती है, इसमें निरन्तर खांसी आती है। मुंह लाल हो जाता है। सीने में दर्द एवं खिचाव आने लगता है। क्षणिक आराम भी कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में तम्बाकू के डंठल को जलाकर भस्म बना लेना चाहिए। तीन ग्राम भस्म को थोड़े पानी में घोलकर रोग-ग्रस्त बालक को दिन में तीन प्रात: दुपहर और शाम को पिला दें। इससे तत्काल वमन-उल्टी अर्थात् कै हो जाती है। इस वमन से कास क्रमि निकल जाते हैं तथा बालक आराम पा लेता है।

नेत्र ज्योति वृद्धि—

प्राय: वृद्धावस्था में दृष्टि मंद हो जाती है। इसके निराकरण के लिए रात्रि के शयन के समय कमल मधु तथा कमल मधु के अभाव में शुद्ध मधु का अञ्जन करें। वृद्धावस्था जन्य सभी नेत्र दोष दूर हो जाते हैं तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है।

यकृत वृद्धि—

यह रोग मिथ्या आहार, कुपोषण तथा विहारादि से उत्पन्न होता है। इससे रक्त में कमी या न्यूनता, दुर्बलता, पाण्डु राग हलीमकादि होकर शनै:-शनै: शरीर कृश होता जाता है। इसके लिए——

मूली का स्वरस 125 ग्राम
मिश्री 25 ग्राम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Katmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोनों को मिश्रित कर सुबह व शाम 21 दिन तक पीया जाना चाहिए। उपरोक्त एक मात्रा है। भोजन सुपाच्य अर्थात् जल्दी पचने वाला किया जाना चाहिए। इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है।

विष कण्टक—

यह रोग हाथ के अंगूठे में या अंगुली में प्राय: होता है। लोकश्रुति भाषा में इसे विष कांटा कहा जाता है। इस रोग में सहसा अंगुली में फोड़ा हो जाता है तथा तीव्र जलन होने लगती है। तीव्र जलन के कारण नींद नहीं आती। आतुर इच्छा होने के कारण अत्यन्त आतुर हो जाता है। ऐलोपैथिक उपचार से 'भक्षिते ऽपि लशुने न शान्तो व्याधि' वाली गाथा चरितार्थ होती है। निम्नांकित योग रोग वैतरणी पार करने के लिए राम बाण है।

1. काले सांप की कैंचुली 6 ग्राम
2. आक का दूध 10 "

दोनों को मिलाकर पीस लें तथा एक हरे पत्ते में लेकर व्रण पर बांध लें। तीन दिन तक बांधें। इससे आश्चर्यजनक लाभ होते देखे गया है।

रक्तावरोधक लेप—

घाव हो जाने, कटने या अन्य कारण से रक्त बहने लगे तथा रक्त बहना नहीं रुके तो तुलसी पत्र, पान, गूलर, तीनों में से एक एक के पत्र के रस से सिंचित करें। रस निकली हुई लुगदी को व्रण पर बांधें। रक्त का बहना बंद हो जाता है।

बिच्छू के काटने पर—

बिच्छू के डंक मारने के स्थान पर टाटरिक एसिड या नोसादर 20 ग्राम, पोटास परमेग्नेट 10 ग्राम, दोनों को पीसकर शीशी मे सुरक्षित रख लेवें। दंश स्थान पर डालकर दो बूंद पानी डाल दें। इससे दंश दग्ध होकर सद्य: पीड़ा समाप्त हो जाती है।

हकलाहट दूर होना—

कुछ बच्चे बड़े होने पर भी अटक-अटककर या हकलाकर या

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुतलाकर बोलते हैं तब बड़ा भद्दा लगता है। ऐसी स्थिति में—

बादाम गिरी 50 ग्राम
दाल चीनी 10 ,,
पिस्ता 20 ,,
केशर 3 ,,
अकरकरा 10 ,,
चांदी के बर्क 10 ,,
मधु 250 ,,

इन सबका चूर्ण कर अवलेह बना लें अर्थात् शहद में डाल दें। मात्रा 5 से 10 ग्राम। गो दुग्ध के साथ प्रातःकाल 40 दिन तक लेते रहें। निस्संदेह इससे आशातीत लाभ प्राप्त होता है।

मुख सौंदर्य लेप—

स्वच्छपूत नीम्बू का रस 25 ग्राम
ग्लैसरीन 25 ,,
अर्क गुलाब 250 ,,

सबको मिलाकर बोतल में भर लें। रात में सोते समय क्रीम के समान मुख पर मालिश करें। इससे मुख कमल सदृश होकर युवान पीड़िका छाया झांई मुहांसे 21 दिन के प्रयोग से मिट जाते है।

शय्या मूत्र—

चार-पांच वर्ष की आयु का बच्चा यदि बिछौने में मूत्र त्याग करता हो तो मुनक्के 3 प्रतिदिन बीज निकालकर खिलायें।

(या)

छुआरे को दूध में डालकर पिलावें अथवा तिल शर्करा की बर्फी जमाकर प्रातः नाश्ते के साथ खा ले। एक सप्ताह मात्र के सेवन से आश्चर्यजनक लाभ होता है।

कफ़ वात जन्य रोग दूर करना—

गुड़ आर्द्रक
गुड़ शुण्ठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुड़ हरीत जी
गुड़ पिप्पली

इन चारों में से एकौषध एक-एक तोला की मात्रा बढ़ाता जाये। बारह तोले के पश्चात् पुनः कम करता रहे। इस प्रकार पन्द्रह दिन या एक महीने तक सेवन करने के साथ, प्रतिशाय, कंठ रोग, श्वास कास, पीनस दुष्ट, प्रतिशाय, जीर्ण ज्वर, अर्श संग्रहणी आदि कफ वात जन्य रोगों का सतत सेवन से नाश होता है।

गंजहार या भूस्सी हटना—

तुत्थक 1 ग्राम
मुर्दा शृंग 6 "
स्वर्ण माक्षिक 6 "
लाल मिर्च 1 "
जायफल 10 "
लवंग 6 "
सरसों का तेल 250 "

इन सबका चर्ण कर तेल में मिलाकर 40 दिन तक मालिश करें। इससे खोरी, गंजापन, भूस्सी दूर होकर पुनः काले केश आ जाते हैं।

पसीने की बहुलता या हाथ-पैर फटना--

यह रोग रूक्षता किंवा पित्ताधिक्य से होता है। अतः चैत्र मास में विरेचन लेकर—

निम्ब पत्र 100 ग्राम
काली मिर्च 11 "
तुलसी पत्र 11 "

पानी 250 ग्राम में पीसकर ठण्डाई की तरह पी लें। आश्विन में चिरायता चर्ण 10 ग्राम को 250 ग्राम पानी में भिगोकर प्रातः मसल छानकर पी जाएं। पुनः उसी में पानी डाल कर सायं पी जाएं। इस प्रकार वर्ष में दो महीने प्रयोग करने से शरीर की गर्मी दूर होकर पसीने का अधिक आना, हाथ पैर फटना दूर होकर काया कञ्चन के समान दैदीप्यमान हो जाती

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। कारण पित्त की ऊष्मा के दूर होने से क्रोध भी कम हो जायेगा। साथ मत्कुण मच्छर आप पर आक्रमण नहीं करेंगे।

ज्वर नाशक मन्त्र—

निम्नलिखित मन्त्र को 108 बार जपकर, पानी को अभिमंत्रित करें तथा वह पानी ज्वर पीड़ित रोगी व्यक्ति को पिला दें तो उसका ज्वर दूर हो जाता है।

"ॐ शान्ति शान्ति सर्वारिष्ट नाशिनी स्वाहा।"

भूत ज्वर नाशक मन्त्र—

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा देने से भूत ज्वर उतर जाता है।

"ॐ नमो भगवते उड्डमरेश्वराय कुट्टनी कुर्वली स्वाहा।"

घण्टाकर्ण मन्त्र—

'ॐ ह्रीं घण्टाकर्ण महावीर ! सर्व व्याधि विनाशक।
विस्फोटकभयाद् घोराद् रक्ष-रक्ष महाबल॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्त कफोद्भवाः॥
तत्र राजभयं नास्ति याति कर्णे जपात्क्षयम्।
शाकिनीभूत वेताल राक्षसाः प्रभवन्ति न॥
नाकाले मरणं तस्य न च सर्पस्य दंशजम्।
अग्नि चोर भयं नास्ति ॐ ह्रीं घण्टाकर्णं नमोऽस्तुते॥'

यह घण्टाकर्ण का महामन्त्र भारी चमत्कारिक पाया गया है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैंने हर बार, बार-बार किया है। भूत-प्रेत पिशाच बाधा में मन्त्र पढ़ते हुए पीड़ित जातक का स्पर्श करने तथा मन्त्रित जल पिलाने से सुन्दर-सुखद लाभ होता है। रुग्ण पशु को भी अभिमन्त्रित जल पिलाया जा सकता है। मार्ग भय, चोर भय से रक्षार्थ उसका उपयोग किया जा सकता है। यह हमारा पितृक्रमागत है। पाठक लाभ उठायें।

स्त्री व शूद्र जातक 'ॐकारों' की जगह ह्रीं लगाकर पढ़ें। घण्टाकर्ण भगवान् बदरीनारायण के अन्तरङ्ग पार्षद हैं जो अपने कानों में घण्टे लटकाये अन्वर्थ नाम बने भगवान श्री नारायण के सतत गुणानुवाद घण्टानाद करते रहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनिकृत गणेश स्तोत्र

मुद्गल पुराण गणेश की महिमा का एवं उनके पवित्र चरित्रों का पुराण माना गया है। इस पुराण में शनिदेव द्वारा गणेश स्तुति कर उनसे शक्ति प्राप्त की गई जिसका पाठ मात्र करने से गणेश के साथ शनिदेव भी प्रसन्न होते हैं तथा उनकी कृपा इस स्तोत्र के पाठक उपासक पर होकर शनि बाधा के कष्ट से राहत मिल जाती है। शनि साढ़ साती या च ... के अशुभ होने पर अवश्य करना चाहिए।

शनिरुवाच

नमस्ते गणनाथाय पुष्टिकान्ताय ते नमः।
विश्वम्भराय सर्वादिपूज्याय ते नमो नमः॥1॥
सर्वेषां मातृ रूपेण स्थितेयं पुष्टि कारकः।
पिता त्वं पुष्टिदातां च सत्ता रूपेण संस्थितः॥2॥
क्षमापराधमेवेदं मदीयं गणनायक।
पुत्रो ऽहं ते महाभाग प्रपंद्ये विरवानन॥3॥
किं स्तौमि त्वां च हेरम्ब योगरूपं सनातनम्।
वेदाद्यैर्योगिनः स्तोतुं शक्यते न नमाम्यहम्॥4॥
तथापि बुद्धि प्रामाण्यात् स्तुवति त्वां महेश्वराय।
अतो ऽहं त्वां महाराज स्तौमि भक्ति समन्वितः॥5॥
नमस्ते बुद्धि कान्ताय सिद्धिनाथ नमोऽस्तु ते।
ब्रह्मणां पतये तुभ्यं हेरम्बाय नमो नमः॥6॥
सगुणे नर रूपाय निर्गुणे गजरूपिणे।
तयोर्योगे च योगाय शान्तिरूपाय ते नमः॥7॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुन्नाम नरकात् त्राता पुत्रस्तेन प्रकीर्तित: ।
शिव पुत्राय वै तुभ्यं गणेशाय नमो नम: ॥8॥
सिद्धिर्माया च वामाङ्ग मायिको दक्षिणे च धी: ।
तयोरभेदयोगे त्वमेकदन्ताय ते नम: ॥9॥
एवमुक्त्वा प्रहर्षेण सरोमाञ्चो बभूव ह ।
प्रणनाम स साटाङ्ग भक्ति भावेन सम्प्लुत: ॥10॥
तमुत्थाय गणाधीशो जगाद स शनैश्चरम् ।
वरं वरय दास्यामि यत् ते चित्ते प्रवर्तते ॥11॥
त्वया कृतमिदं स्तोत्रं मम प्रीतिकरं भवेत् ।
य: पठिष्यति यो मर्त्य: श्रुयणात् सर्वदा भवेत् ॥12॥
ततस्तं गणनाथं स उवाच रविनन्दन: ।
भक्तिं देहि त्वदीयां मे पापान्मोचय मां प्रभो ॥13॥
ततस्तं गणराज: स: जगाद च सुरेश्वर: ।
मदीया भक्ति ते भावी दृढा सौरे न संशय: ॥14॥
क्रूर दृष्ट्या च यं कञ्चित् पश्यसि त्वं शनैश्वर ।
स एव नाशमायाति नि: शापो भव सर्वदा ॥15॥
ततो विष्णुं जगामासौ तं प्रणम्य च भानुज: ।
उवाच देहि मे नाथ गणेशोपासनां शुभाम् ॥16॥

कैन्सर—

श्वेत अभ्रक	250 ग्राम
गौ दुग्ध	500 ,,
गुड़	250 ,,
कलमी शोरा	250 ,,
पुराने कपड़े	$2\frac{1}{2}$ किलो
आरण्यक कण्डे	6 मन
लकड़ी	11 ,,

प्रथम अभ्रक को लेकर सूक्ष्म टुकड़े कर लें, उसके बाद गो दूध में कूट लें। इस प्रकार आठ गज फुट देवें। तदनन्तर सूर्य क्षार (कलमी शोरा) एवं गुड़ मिला लें और आठ घंटे तक निरंतर अभ्रक को कूटते रहें। कूटते-कूटते जब गोला बंध जाये तब पुराने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कपड़ों में उसे लपेट लें। वाद में कण्डों एवं लकड़ी के बीच में रख कर फूंक दें। स्वांग शीतल होने पर 4 किलो पानी में डाल नितार लें। अभ्रक मात्र शेष रह जाने पर सुखाकर प्रयोग में लें। मात्रा 2 से 4 रत्ती तथा इसे मक्खन मिश्री के साथ लें।

यदि रक्तस्राव हो तो निम्न अनुपान से दें।

काली मिर्च	3
छोटी इलायची	2
जामुन के पत्ते	3
मिश्री	6 माशा।

इन सब को पानी में घोटकर पीवें।

प्रदर-प्रमेह—

चांदी	10 ग्राम
कायफल चूर्ण	250 ,,

चांदी को कायफल चूर्ण में रखकर गज फुट में फूंकें। इस प्रकार 32 पुट दें। मात्रा 1-2 रत्ती 10 ग्राम मधु के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेह, प्रदर, सोमरोग, विषम ज्वर, शरीर में चक्के चलना, आदि रोग दूर हो जाते हैं।

संग्रहणी—

यह रोग बहुत हठीला है। इस रोग में ग्रहणी नामक कला दूषित हो जाती है। रोगी को सेब आदि नमकीन चीजें खाने की रुचि अधिक होती है। भोजन में मट्ठा या छाछ बराबर मिलती रहे तो इस रोग के दर्शन करने नहीं पड़ते—

चित्रक की जड़ की छाल	25 ग्राम
सौंठ	10 ,,
काली मिर्च	10 ,,
सौंफ	10 ,,
सेंधा नमक	10 ,,

सब समान मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें तथा मात्र छः ग्राम, दही के साथ लें। इसके निरन्तर सेवन से अग्निमांद्य, अरुचि संग्रहणी, बवासीर आदि रोग दूर हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अशुभ ग्रह दोष निवारण—

हम आप सभी कभी-न-कभी किसी अशुभ ग्रह के प्रभाव में आ ही जाते हैं तथा कष्ट पाते हैं। हमारे ऋषि-महर्षियों ने इस कुप्रभाव को दूर करने के लिए विभिन्न यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की रचना की है जिनका विधि पूर्वक जप-तप करने से हम उनके कुप्रभावों से बच जाते हैं। अर्थात् उस कष्ट और पीड़ा से मुक्ति पाकर सुखानुभूति करते हैं। इसके लिए—

आक, धतूरा, अपामार्ग, दूर्वा, वरगद इन सभी की जड़ें ले लें। शमी के पत्त, आम के व गूलर के पत्त लें। इन सब को एक मिट्टी के पात्र में रखकर दूध-घी चावल-हिर्नामुग, गेहूं-तिल, गो पत्र, सरसों, चन्दन, शहद, और छाछ उसी पात्र में डालकर सभी को एकत्र करके शनिवार को सायंकाल के समय पीपल के वृक्ष की जड़ में गड्ढा खोद कर गाड़ दें। फिर उसी वृक्ष के नीचे या किसी देव स्थान में जाकर निम्नांकित मन्त्र का 10 हजार बार जप करें तो सभी ग्रहों का कुप्रभाव दूर हो जाता है और रोग, निर्धनता व दुर्भाग्य से छुटकारा मिल जाता है।

"ॐ नमो भगवते भास्कराय अस्माकं सर्व ग्रहाणां पीड़ानाशनं कुरु कुरु स्वाहा।"

ज्वर नाशक तन्त्र—

जब किसी भी स्त्री-पुरुष या बच्चे को किसी भी प्रकार का बुखार आ जाये, चाहे बुखार रोज हो अथवा मियादी बुखार हो, बुखार गर्मी का हो या सर्दी लगकर आता हो, अर्थात् किसी भी प्रकार का हो, जब बुखार उतरने का नाम ही न ले तो एक नई ईंट लें और उस पर चाकू या लोहे की कील से रोगी का नाम भली प्रकार खोद कर लिख लें। फिर 31 बार रोगी पर सिर से लेकर पैर तक उतार शनिवार, रविवार या मंगलवार की रात्रि को बहुत तेज आग में डाल दें। आग इतनी तेज हो कि वह ईंट लाल होकर आग की भांति हो जाये। आप देखेंगे कि एक रात के ही प्रयोग से रोगी का बुखार उतर गया है। यदि एक रात के प्रयोग करने से बुखार नहीं उतरे तो यही प्रयोग तीन रात तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करना चाहिए। अर्थात् प्रथम प्रयोग शनिवार की रात्रि को किया तो दूसरा प्रयोग रविवार की व तीसरा मंगलवार की रात्रि में करना चाहिए। तीसरी बार के प्रयोग से ज्वर अवश्य उतर जायेगा।

पीलिया-हल्दिया-जोंडिस का निवारण मन्त्र—

"ॐ नमो आदेश गुरु का रामचंद्र सर सान्धा बाण काला, पीला, धोया पीला जारों झड़ रामचंद्र जी याके नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

सात सुइयां लेकर सात बार इस मन्त्र को पढ़ कर सुइयों पर फूंक लगाते रहें। फिर सुइयों को कांस्य की कटोरी में रखें। कटोरी को मिट्टी के ढक्कन से ढंक दें। सायंकाल कांस्य की कटोरी में शुद्ध जल भर कर उसे ढंक दें। तत्पश्चात् रोगी के सिर से पैरों तक सात बार घुमा दें। घुमाने के बाद रोगी की चारपाई के नीचे सिरहाने की ओर रख दें। प्रातःकाल सुइयां हाथ में लेकर पानी किसी दीवार पर फेंक दें। रोगी के पीलियां, जोडिस रोग से पीड़ित होने पर पानी का रंग लाल या पीला होता रहेगा और रोगी को धीरे-धीरे आराम होने लगेगा। 7-8 दिन तक ऐसो करने पर रोगी का रोग पूर्णतः शान्त हो जायेगा। जब पानी का रंग निर्मल पानी के रंग जैसा रह जाय तो रोग पूर्ण रूप से समाप्त समझना चाहिए। तत्पश्चात् उन सुइयों को तालाब में डाल देना चाहिए।

मन्त्र पढ़ते समय धूप-अगरबत्ती करनी चाहिए एवं दूसरे बच्चों को प्रसाद देना चाहिए।

बाल ज्वर नाशक धूप—

गुगल, वच, कूठ, मैनसिल, शिलाजीत, हल्दी, आंवा हल्दी, नीम के पत्ते और शहद इन सबको बराबर मात्रा में कूट कर घृत में मिलाकर धूप बना लें। ज्वर होने पर वह धूप दें तो सबका विशेषकर बालक शिशुओं के ज्वर का वेग अविलंब नष्ट हो जाता है। बालक निरोग हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकान्तरा नाशक यन्त्र—

निम्न यन्त्र को कागज पर लिखकर कच्चे सूत के डोरे में बांध कर धूप देकर गले में धारण करने पर अवश्य ही एकान्तरा चला जाता है। इस यन्त्र को 108 बार लिखकर नदी में प्रवाहित करा देने पर सिद्ध हो जाता है। यह यन्त्र एकान्तरा जाने पर गले से उतारकर ठंडा कर देवें।

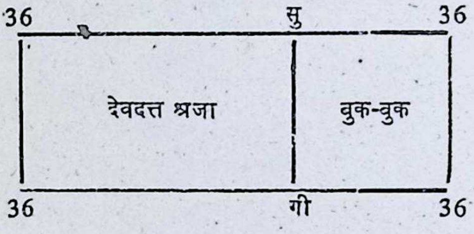

ब्लड शूगर—

सामान्यत: रक्त शर्करा की मात्रा बिना कुछ खाए 80 से 120 मिलीग्राम प्रति 100 सी० सी० होती है। इससे अधिक होने पर निम्न प्रयोग करें—

नीम के ताजे पत्ते सुबह सूर्योदय से पूर्व तोड़ें तथा उसका रस निकाल लें। सूर्योदय से पूर्व ही शौचादि से निवृत्त होने के बाद खाली पेट यह रस 10 ग्राम पीयें। एक सप्ताह पश्चात् रक्त का परीक्षण कराएं। जब तक शर्करा की मात्रा सामान्य न हो जाये तब तक पीयें तथा भोजन में काले नमक का प्रयोग करें व आलू, दही, मीठी वस्तुओं का सेवन त्याग दें।

सर्व रोग नाशक मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नम: ॥

इस मन्त्र को प्रात: मध्याह्न व सांय काल तीनों बार 108 बार जपने से सभी प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्षा मन्त्र—

"ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं क्लौं कलि कुंड दण्ड स्वामिन् सिद्धि जगद्वशं आनय आनय स्वाहा।"

इस मन्त्र को प्रातःकाल 108 बार स्मरण करके भोजन करें तो इस मन्त्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति, विपत्ति का नाश, स्वरक्षा, राज पुजित, लक्ष्मी की प्राप्ति, आयुश वृद्धि, डाकिनी-शाकिनी से रक्षा, सुगति की प्राप्ति होती है। यदि जाप करते हुए छूट जायें तो इसका प्रायश्चित एक उपवास करना चाहिए। यदि उपवास करने की शक्ति न हो तो जैसी शक्ति हो, तदनुरूप प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए। फिर से जाप प्रारम्भ करें। जीवनभर यह जाप करते रहें तथा गुप्त रखें तो समस्त कार्य फलीभूत हो जाते हैं।

गर्भ रक्षा मन्त्र—

"द्रोण पर्वतं यथा वद्धं शीतार्थे राघवेण उतं तथा वंधयिष्यामि अमुकस्य गर्भ मापत उमा विशीर्यंऊ स्वाहा। ॐ त्तद्यथाधर धारिणी गर्भ क्षिणी आकाश मात्र के हुं फट् स्वाहा।"

लाल डोरे को इस मन्त्र से 21 बार जप कर 21 गांठ देवें। फिर गर्भिणी की कमर में बांध देने से गर्भ क्षय नहीं होता है। किन्तु 9 मास पूरे होने पर उस डोरे को खोल देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमुख सूक्त

दुर्गा सूक्त—

दुर्गा 'दुर्गति नाशिनी' है। दुर्गा में 'दु' अक्षर दरिद्रता, दुःख और दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन आदि दैत्यों के नाश का प्रतीक है। रेफ् (र्) रोगघ्न है। 'गा' पापघ्न अन्याय, अत्याचार, अधर्म, अनेकता, आलस्यादि आसुरी वृत्तियों के नाश का सूचक है।

दुर्गा की उपासना में शक्ति की मूलतः प्रधानता है। देवताओं की शक्ति से उनका आविर्भाव या जन्म हुआ है। महिषासुर व अन्य असुरों का वध करके शक्ति का ही उन्होंने प्रदर्शन किया है। वह शक्ति को ही प्रतीक हैं। शक्ति उपार्जना के लिए दुर्गा की ही अर्चना की जाती है। बल की वह प्रतीक है। दुर्गा की आठ भुजाएँ, आठ शक्तियां, स्वास्थ्य, विद्या, धन, व्यवस्था, संगठन, यश, शौर्य और सत्य हैं। दुर्गा के आह्वान से इन्हीं का सृजन होता है।

जब-जब इन शक्तियों के विकास की आवश्यकता पड़े तब-तब दुर्गा की उपासना की जानी चाहिए। दुर्गा के सूक्त के मन्त्र दुरितों के दलन में अपना प्रभाव दिखाते हैं। आसुरी वृत्तियां आन्तरिक हों अथवा बाह्य, दोनों स्थितियों में यह रामबाण कार्य करती हैं। शत्रुओं का भय हो, आप अन्याय विपत्तियों से चारों ओर से घिरे हों, अन्याय व अत्याचार से परेशान हों, 'दुर्गा सूक्त' के मन्त्र घाव पर मरहम का कार्य करेंगे। मन्त्रों को प्रभावी बनाने के लिए पाठोपरान्त हवनादि करना उपयुक्त रहता है। मन्त्र यों हैं—

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेद।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ 1 ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गा देवीं शरणमंह प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ॥2॥
अग्नेत्वं पारया नव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरिति दुर्गाणि विश्चा ।
पूश्च पृथ्वी वहुला न उर्वी भवा ताकाय तनयाय शंयो ॥3॥
विश्वानि नो दुर्गाहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिर्पषि ।
अग्ने अयित्रन्मनसा गृणानोऽस्मारकं बोध्यविता तनूनाम् ॥4॥
पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्नि हुवेम परमात्सधस्थात् ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवी अति दुरितात्यग्निः ॥5॥
प्रत्नोपि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्य होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तनुवं पिप्रिय स्वास्तम्यं च सौभगमाय जस्व ॥6॥
गोभिर्जुष्ठममुजो निषिजं तवेन्द्रं विष्णोरनुसञ्चरेम ।
नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥7॥
देवा वाचमजनन्तं देवास्तां विश्वरूपा पशवो मदति ।
स नो मन्द्रेष मूर्जं दुहाना धनुर्वाग स्मानुपसुष्टु तैतु ॥8॥
कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवी स्कन्द मातरम् ।
सरस्वती मदितिं रक्ष दुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥9॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृति भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥10॥

नवग्रह सूक्त—

नौ ग्रहों के अशुभ परिणामों को अनुकूल बनाने के लिए निम्न सूक्त का पाठ अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होता है ।

सूर्य मन्त्र—

ॐ आकृष्णेन राजसा वर्तमानो विवेशयन्न मृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ 1 ॥

चन्द्र मन्त्र—

ॐ इमं देव असपत्न ᳚ सुवध्वं महते क्षयाय महते ज्येष्ठाय महते ज्यान राज्यायेंद्रस्यें द्रियाय इमम-मुष्यः ।

पुत्र ममुषै पुत्रमह्य विष वोमीराजा सोमोस्माकं ब्राह्मणना ᳚ राजा ॥ 2 ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल मन्त्र—

ॐ अग्निमूर्धा वादिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम् ।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वधि ।। 3 ।।

बुध मन्त्र—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टा पूर्ते स ँ सृजेथा मयं च ।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तर स्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।। 4 ।।

गुरु मन्त्र—

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युम द्विभाति क्रतु मज्ज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छ वसऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।5।।

शुक्र मन्त्र—

ॐ अन्नात् परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा ।
व्यापि वत्क्षत्रं पयध सोमे प्रजापति: मृतेन सत्यमिद्रियं ।
विपान ँ शुक्रमंधस एन्द्रस्येन्द्रियमृतं पयोमृतं मधु: ।। 6 ।।

शनि मन्त्र—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोर भिस्र वन्तु न: ।। 7 ।।

राहु मन्त्र—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुव द्वती ।
सदा वृध: सखा कया सचिष्टयावृत ।। 8 ।।

केतु मन्त्र—

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवो पेशोमर्या अपेशसे समुवद्भिरजा-यत:' ।। 9 ।।

शान्ति सूक्त—

निराशा, चिन्ता, शोक, भय, क्रोध, काम आदि कुविचारों और कुसंस्कारों के कारण जब मन निरन्तर अशान्त रहता हो और खूब प्रयत्न करने पर भी आन्तरिक अशान्ति का अन्त नहीं हो पा रहा हो तो अन्त: शान्ति सूक्त का नित्य श्रद्धापूर्वक उच्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर से पाठ करना चाहिए। इससे चित्त में शान्ति, सन्तोष और प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। पाठ के बाद हवन किया जाय तो अति उत्तम रहता है।

मन्त्र—

ॐ रि ॐ।

ऋचं वाचम्प्रपद्ये मनोयजु ँ प्रपद्ये साम प्राणम्प्रपद्ये चक्षु ँ श्रोत्रम्प्रपद्ये।

व्वागोजः सहोजोमयिप्राणापानौ ॥ 1 ॥
यन्मेछिद्रञ्चक्षुषो
हृदयस्य मनसो व्वाति तृणम्बृहस्पति मेंतद् दधातु।
शन्नो भवतुभुवनस्य र्यस्पतिः ॥ 2 ॥
भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥
धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ 3 ॥
कस्त्वा।
सत्योमदानान्म ँ हिष्ठोमत् सदन्धसः।
दृढाचिदारुजेव्वसु ॥ 4 ॥
अभीषुणः।
सखीनामविताजरितॄणाम् ॥
शतम्भवास्यूतिभिः ॥5॥
कयात्वन्न ऽ ऊत्याभिप्रमन्दसे वृषन्न।
कयास्तो तृभ्य ऽ आभर ॥6॥
इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शन्नोऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥7॥
शन्नो मित्रः शंव्वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा।
शन्नऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो व्विष्णु रुरुक्रमः ॥8॥
शन्नो व्वातः।
पवता ँ शन्नस्त पतुसूर्यः।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु ॥9॥
अहानिशम्भवन्तुनः ष ँ रात्रीः प्रतिधीयताम्।
शन्नऽइन्द्राग्नीभवतामनोभिः शन्नऽइन्द्राव्वरुणारात हव्या।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाज सातौशमिन्द्रासोमासुवि
तातशंय्यो ॥10॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः ।
शान्ति रोपधयः शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्ति ।
सर्वं ᳪ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥11॥
दृतेदृ ᳪ हमा मित्रस्य माचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्र स्याहञ्चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥
मित्रस्य चक्षुषासमीक्षा महे ॥12॥
दृते दृ ᳪ हमा ।
ज्योक्तेसन्दृशि जीव्या सुञ्ज्योक्तेसन्दृशि जीव्यासम् ॥13॥
नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ।
अन्नांस्तेऽअस्मत्त पन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्य ᳪ
शिवोभव ॥14॥
नमस्ते ।
अस्तुव्विद्युतेनमस्ते स्तनयित्नेव ।
नमस्ते भगवन्न स्तुमयतः स्वः समीहसे ॥15॥
यतोयतः समीहसेतेतोनोऽअभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥16॥
सुमित्रियानऽआप ओषधयः सन्तु दुर्म्भित्रि या स्तस्मैं
सन्तुयोस्मान्वद्देष्ठिठतञ्चव्व्यन्द्विष्मः ॥17॥
चच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत ᳪ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूय शच्च शरदः शतात् ॥18॥

गायत्री रक्षा कवच—

मानसिक सुख-शान्ति, शारीरिक रोगों से निवृत्ति, आर्थिक विषतमाओं को दूर करने के लिए यह कवच धारण किया जाता हैं। भूत-प्रेत बाधा, चोर-डकैत, शत्रु-राजदण्ड, बुरे भविष्य की चिन्ता, हानि की आशंका, अकाल मृत्यु व रोगादि भय से यह कवच रक्षा करता है।

किसी रविवार या अन्य शुभ दिन देखकर उपवास किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाना चाहिए। गोरोचन, जायफल, जावित्री, कस्तूरी, केशर उत्तम पांच वस्तुओं को मिलाकर स्याही बना लें। भोजपत्र पर अनार की कलम से पांच प्रणव 'ॐ' लगाकर गायत्री मन्त्र लिखें। विना पालिश किए कागज पर भी यह लिखा जा सकता है। इसे चांदी के तावीज में बंद कर धारण करना चाहिए। यह हर प्रकार के भय से रक्षा करता है।

भूत बाधा की निवृत्ति—

भूत बाधा के लिए गायत्री हवन श्रेष्ठ माना गया है। इसमें सामग्री सतोगुणी ली जानी चाहिए। गायत्री मन्त्र से आहुति दें और हवन कुण्ड के पास रखा हुआ जल जो अग्नि से तप चुका है, रोगी को पिलायें। यज्ञ भस्म रोगी के विभिन्न अंगों, मस्तक, नेत्र, हृदय, मुख, नासिका, कान आदि पर लगावें। इससे यथेष्ट लाभ होता है। गायत्री यज्ञ की भस्म को सुरक्षित रख लेना चाहिए। अकस्मात् किसी को भूत बाधा हो जाय तो इसका प्रयोग करना चाहिए।

गायत्री मन्त्र—

'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥'

पृथ्वी गायत्री—

'ॐ पृथ्वी दव्यै विद्महे, सहस्र मूर्त्यै धीमहि तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात् ॥'

निश्चय में शिथिलता को दूर करने और दृढ़ता लाने के लिए इसकी, इस शक्ति की दक्षता मानी गई है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काली साधना

महाकाली का आशय है दवी स्वरूपान्तर शक्ति जो कि अनेक को एक में लय कर देता है।

काली का ध्यान—

'खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छुलं भुशुण्डीं शिरः।
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषा वृताम्।
नीलाश्म द्युतिमास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकां।
या मस्तौ त्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

अर्थात् अपने दस हाथों में खंग, गदा, चक्र, धनुषबाण, परिघ, शूल, भुशुण्डि, कराल और शंख को धारण करने वाली समस्त अंगों में दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, नील मणि के समान शरीर की कान्ति वाली दशमुख और दस पद वाली महाकाली का मैं ध्यान करता हूं, जिसका स्तवन भगवान विष्णु के सो जाने पर मधु और कैटभ को मारने के लिए ब्रह्मा ने किया था।

शास्त्रों में महाकाली की उत्पत्ति का वर्णन इस प्रकार आता है—

प्रलय वेला में भगवान विष्णु योगनिन्द्रा में लीन थे कि उनके कानों में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस उत्पन्न हुए जो ब्रह्मा को मारने के लिए दौड़े। ब्रह्मा ने भगवान विष्णु की योग-निद्रा भंग करने के लिए भगवान के नेत्र कमल स्थित योगनिद्रा का स्तवन किया। भगवान विष्णु के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु और हृदय से बाहर निकलकर भगवती उपस्थित हो गई। इधर भगवान की योगनिद्रा भी भंग हुई। ब्रह्मा को बचाने के लिए भगवान राक्षसों से युद्ध करने लगे। यह युद्ध पांच हजार वर्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक चलता रहा परन्तु राक्षस नहीं मारे गये। अन्त में भगवती ने उन राक्षसों की बुद्धि में मोह उत्पन्न किया, जिससे अभिमान का उदय हुआ और वे भगवान से वर मांगने की शेखी बघारने लगे। भगवान ने अवसर का लाभ उठाया और अपने हाथों उनके मारे जाने का वरदान मांगा, जो दे दिया गया। भगवान ने चक्र से उनका सिर काट डाला। इस प्रकार ब्रह्मा की रक्षा के लिए भगवती ने काली का रूप धारण किया।

काली का रूप अत्यन्त भयंकर है। उनके हाथों में खड्ग और नरमुण्ड है। रक्तधारा का प्रवाह, श्मशान में निवास, जलती चिता, शवासना यह सभी काली के भयंकर रूप को प्रदर्शित करते हैं। उनकी बाह्याकृति में ध्वंस और प्रलय के दर्शन होते हैं। यह उनके 'श्मशाना जयं वासिनी, शवाशना, शवरूप आदि नामों से ही विदित होता है।

मुण्डकोपनिषद् में कहा है—

'काली कराली च मनोजवा च
सुलोहिता या च सुधूमवर्णा।
स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी
लेलायमाना इति सप्त जिह्वः॥

अर्थात् काली अत्यन्त उग्र मन के समान चंचल, लाली युक्त, धूम्रवर्ण, चिंगारियों से युक्त, देदीप्यमान, विश्वरुचि— यह लपलपाती सात जिह्वायें अग्नि की हैं।

काली का तत्वज्ञान ज्ञानने के लिए यह रूप आवश्यक है क्योंकि काली का संबंध काल से है। काली वह है जो काल पर प्रतिष्ठित है। काल उस पर अपना आधिपत्य स्थापित्त करने की क्षमता नहीं रखता बल्कि उसका सहारा ग्रहण करता है। शास्त्र भी इसका अनुमोदन करते हुए कहते हैं—

कालो अन्नो वहत्ति सप्तरश्मिः
सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमोरा हन्ति कवयो विपश्चित
स्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥

'काल सूर्य रूप है, वह अन्न को उत्पन्न करता है। वह ब्रह्म का रूप है, अजर-अमर है, उसमें नाश के लक्षण नहीं हैं। उसका

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्यन्त तीव्र है। विद्वान् उसी काल : पी रथ पर चढ़ते हैं। का चिंतन करते हैं। यह दिखाई देने वाला सारा जगत उसी प के चक्र की तरह है।

स उमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः
स ईयते प्रथमोनुदेवः।
स एव सभुवनान्या भरत् स एव
संभुवनानि पर्य्येत्॥
पिवासन्न भवत पुत्र एपां तस्माद्वै
नान्यत् परमस्ति तेजः॥
कालोऽमू दिवमजनयत काल इमाः
पृथ्वी रुतः
काले ह भूतं भव्यं चेषितं हयितिष्ठते॥

'काल ही इन विशाल भुवनों का नाश करता है। वही सृजन व पोषण करता है। इसीलिए उसे महादेव कहते हैं। काल इस जगत का पिता है, अतः इस जगत की वह महानतम शक्ति है। काल ने ही दिनों और पृथ्वी का निर्माण किया। भूत और भविष्य काल पर ही आधारित है।

काले तपः ज्येष्ठ काले-काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः॥
कालः प्रजा असृजन कालो अग्रे प्रजापतिम्।
स्वयम्भुः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत॥

तप ज्येष्ठ और ब्रह्मकाल पर ही आधारित है। काल को सबका स्वमी स्वीकार किया गया है। प्रजापति भी काल का पुत्र है। काल ने ही प्रजा की रचना की। स्वयम्भू कश्यप और तप ने भी काल से ही जन्म लिया।

कालो हि जगदाधारः।
'वह काल जगत् का आधार है।'

काल का अन्य नाम 'रुद्र' अथवा 'सदाशिव' हैं। रुद्र उग्रता के प्रतीक तथा ध्वंस के देवता हैं।

शास्त्रों ने काल की परिभाषा करते हुए कहा—

'जो सर्व भूतों का नाश करता है, वह काल कहलाता है। यह काल ही नहीं महाकाल कहलाता है। काली तत्व का विवे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन करते हुए बताया गया है कि वह काल तत्व पर प्रतिष्ठित रहती है।'

महाकाली को पुराणों में इस प्रकार चित्रित किया गया है कि महाकाल भूमि पर लेटे हुए हैं और वे उसकी छाती पर खड़ी अट्हास कर रही हैं। यों पति की छाती पर पत्नी का खड़ा होना अटपटा-सा लगता है, पर पहेलियों में यह अटपटापन जहां कौतूहल वर्धक व मनोरंजक होता है, वहां ज्ञानवर्धक भी ! कबीर की 'उलट बांसी' और खुसरों की 'मुकरनी' पहेलियों के रूप में सामने आती हैं और अपना रहस्य जानने के लिए बुद्धिमत्ता को चुनौती देती हैं। भूमि पर लेटे हुए शिव की छाती पर काली का खड़ा होकर अट्टहास करना, घटना के रूप में घटित हुआ था या नहीं इस झंझट में पड़ने की अपेक्षा हमें उसमें सन्निहित मर्म और तथ्य को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

ध्वंस एक आपत्ति धर्म :—सृजन सनातन प्रक्रिया। इसलिए ध्वंस को रुकना पड़ता है, थककर लेट जाना और सो जाना पड़ता है। तब सृजन को दुहरा काम करना पड़ता है। एक तो स्वाभाविक सृष्टि संचालन की ... तात्मक प्रक्रिया का संचालन, दूसरे ध्वंस के कारण हुई विशेष क्षति की विशेष पूर्ति का आयोजन। इस दुहरी उपयोगिता के कारण ध्वंस के देवता महाकाल की अपेक्षा स्वभावत: सृजन की देवी महाकाली का महत्त्व अधिक बढ़ जाता है। शिव जब सोए हुए होते हैं, तब शक्ति खड़ी होती है। शिव पीछे रह जाते हैं, शक्ति आगे आ जाती है। शिव सोए होते हैं और शक्ति जाग्रत होती है। शिव का महत्त्व घट जाता है और शक्ति की गतिशीलता पूजी जाती है। महाकाल की छाती पर खड़े होकर काली का अट्हास करना इसी तथ्य का अलंकारिक चित्रण है।

काली साधक को यह ध्यान करना है कि विरोधी शक्तियां काल के रूप में पृथ्वी पर धराशायी होकर लेटी हैं और भगवती की कृपा से हमारा पैर उनकी छाती पर रखा है। काल जगत का आधार है, महानतम शक्ति है परन्तु काली फिर भी उसकी छाती पर प्रतिष्ठित है। इसी तरह विरोधी पक्ष निश्चित रूप से शक्तिशाली हैं परन्तु हमारे समक्ष आते ही वे शक्तिहीन हो जाते

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं, उनका समस्त तेज विलीन हो जाता है।

काली का श्याम वर्ण क्यों है? श्याम वर्ण तमोगुण का प्रतीक है। ध्वंस के सभी चिह्न उसमें दिखायी देते हैं। मृत्यु का रंग भी काला ही दिखाया जाता है। मृत्यु के देवता यमराज का शरीर भी श्याम वर्ण से चित्रित किया जाता है। काले रंग की यह विशेषता है कि उस पर कोई भी अन्य रंग चढ़ ही नहीं सकता और जब काला रंग किसी वस्तु पर चढ़ जाता है तो वह उतरता भी नहीं है। इसमें सभी प्रकार के रंग समाहित हो जाते हैं और यह सभी पर अपना प्रभुत्व बनाए रखता है। प्रलय की स्थिति में सारा जगत् उसमें समा जाता है परन्तु उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।'

ऋग्वेद में सूर्य को कृष्ण कहा गया है। ऋग्वेद में पृथ्वी को भी कृष्ण कहा है। वेदों में आकर्षण शक्ति से मुक्त वस्तु को भी कृष्ण ही कहा गया है। संसार में सर्वाधिक आकर्षण शक्ति सूर्य में होती है। इसलिए उसे कृष्ण कहा गया है।

जिन ग्रहों का संचालन सूर्य करता है उन्हें भी कृष्ण कहा गया है, क्योंकि उनमें भी आकर्षण शक्ति होती है। यदि उनमें यह शक्ति नहीं होती तो वह नियमबद्ध रूप से सूर्य के चारों ओर नहीं घूमते रहते। सूर्य उन्हें अपनी ओर खींचा होता और भस्म कर देता। इसीलिए पृथ्वी को भी कृष्ण कहा गया है।

वाह्य जगत में पृथ्वी, सूर्य और उनके ग्रहादि विश्व की महान् शक्तियों के द्योतक हैं। अत: काली का यह कृष्ण वर्ण शक्ति प्रतिष्ठा को चित्रित करता है। कहते हैं—सृष्टि से पहले चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। यह स्थिति भी काली की ही है।

'जिस प्रकार से काला-सघन मेघ वर्षा करके पृथ्वी (तप्त) को शीतल करता है। उसी तरह से तुम भी त्रितापों को निवृत्ति करके अमृत रूपी वर्षा करती हो और अमर-जीवन प्रदान करती हो।'

काली का पूजन करते हुए साधक यह दृढ़ धारणा करे कि भगवती की कृपा से हम पर निरन्तर अमृत की वर्षा हो रही है, हमारे त्रिताप नष्ट हो रहे हैं या साधक को जिन विपत्तियों ने घेरा हुआ है, उनको आन्तरिक नेत्रों से दूर होता देखें। यह धारणा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जितनी दृढ़ होगी, उतना ही साधक को लाभ प्राप्त होगा।

निम्न साधन प्रणाली विशेष रूप से लाभदायक है। काली साधक को यह ध्यान करना है कि भगवती ने हमारे चारों ओर एक ऐसी लक्ष्मण रेखा खींच दी है जिसके घेरे को पार कर प्रविष्ट होना किसी भी आसुरी शक्ति और सामर्थ्य में नहीं है। जिस प्रकार से तेज हवाएं आंधी और तूफान पहाड़ों से टकराकर लौट जाते हैं, उसी तरह विरोधी शक्तियां इस लोह घेरे से टकराकर चकनाचूर हो रही हैं। मैं पूर्ण रूप से सुरक्षित हूं परन्तु उनकी शक्तियों का निरन्तर ह्रास हो रहा है। मेरी असाधारण शक्ति से विरोधी पक्ष में भय और आतंक व्याप्त है। मैं प्रसन्न मुद्रा में हूं। वे निराश व हतोत्साह हैं। उनकी सभी योजनाएं निष्फल हो रही हैं। वे अपने अस्त्र-शस्त्रों को विसर्जित करके अपनी पराजय स्वीकार कर रहे हैं। मैं विजेता के रूप में प्रतिष्ठित हो रहा हूं।

काली पूजन-विधि

काली तन्त्र के अनुसार काली का मन्त्र इस प्रकार है—

'क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

यह सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र है। इसके वर्णों का अभिप्राय इस प्रकार है —

जल रूपी क कार मुक्ति का देनें वाला है।

अग्नि रूपी रेफ सर्वतेजोमयी है।

क्रीं क्रीं क्रीं, यह सृजन-स्थिरता और प्रलय के द्योतक हैं।

बिन्दु निष्फल ब्रह्म रूप है। अतः यह कैवल्य प्रदान करता है।

हूं हूं शब्द ज्ञान प्रदान करते हैं।

ह्रीं ह्रीं यह दोनों बीज सृजन, स्थिरता और प्रलय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जब दक्षिण कालिके को संबोधन किया जाता है तो इससे देवी की स्वरूपता अभिप्रेत है।

स्वाहा से विश्व के मातृ रूप का बोध होता है। यह सर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापों को हरने वाला है।

दक्षिण कालिका के अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं—

'क्रीं'

यह एकाक्षर मन्त्र है। यह महामन्त्र सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है।

'ह्रीं'

यह अन्य एकाक्षर मन्त्र है। इस मन्त्र से उपासना करने पर उपासक सब शास्त्रों का ज्ञाता हो जाता है। इन उक्त दोनों एकाक्षर मन्त्रों का पुरश्चरण 1 लाख मन्त्र जाप का है तथा दशांश हवन का विधान है। कुल चूड़ामणि तन्त्रानुसार दिन में 1 लाख मन्त्र और रात में 1 लाख मन्त्र जप का विधान है। राशि जप से दक्षिण कालिका की सिद्धि होती है।

'ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं।'

इस मन्त्र का 1 लाख का पुरश्चरण होता है तथा 1/10 हवन। विश्वसार तन्त्रानुसार उपरोक्त मन्त्र में 'स्वाहा' शब्द मिलाने पर यह 23 अक्षर का मन्त्र बन जाता है। इस 23 अक्षर वाले मन्त्र में से जब प्रणव को अलग कर दिया जाय तो यह 22 अक्षर का बन जाता है यथा—'ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

प्रणव 'ॐ और 'स्वाहा' हटा देने पर 20 अक्षर का मन्त्र बन जाता है।

'ॐ ह्रीं क्रीं' में 'स्वाहा' यह मन्त्रों का राजा विख्यात है। इसका नाम काली हृदय में है।

'विश्वसार तन्त्र' में कुछ और मन्त्रों का निर्देश है।

'क्रीं ह्रीं ह्रीं' यह महाकाली का महामन्त्र है जिसको स्वयं महाकाली ने कहा है।

'क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।'

अन्य—

'क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।'

'ऐं नमः क्रीं ऐं नमः क्रीं कालिकायै स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा।'

'क्रीं हूं ह्रीं दक्षिण कालिके फट्।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathr

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'क्रीं क्रीं हूं ह हों हीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं ह ह ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वहा।'

'क्रीं दक्षिण कालिके स्वाहा।'

'क्रीं हूं हूं ह्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।'

'नमः ऐं क्रीं क्रीं कलिकायै स्वाहा।'

'नमः आँ आँ क्रीं फट् स्वाहा कलिके हूँ।'

'क्री क्रीं क्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।'

'ऐं नमः क्रीं क्रीं कलिकायै स्वाहा।'

'क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा।'

'क्रीं हूं ह्रीं दक्षिण कालिके फट्।'

'क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं।'

'ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं स्वाहा।'

'क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं ह् ह् ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा।'

'क्रीं हूं ह्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं हूं वू ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

'क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

माया तन्त्र में एक निम्न मन्त्र है।

'नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।'

तन्त्रान्तर में मन्त्र है—

'नमः आं क्रां आं क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं।'

विनियोग—

अस्य दक्षिण कालिका मन्त्रस्य महाकाल भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः श्री दक्षिण कालिका देवता, कं बीजं, ई शक्तिः, रं कीलकं चतुवर्ग सिध्यर्थ जपे विनियोगः।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋष्यादि न्यास—

शिरसि महाकाल भैरव ऋषये नमः (दायें अंगुष्ठ से ।)
मुखे उष्णिक् छन्दसे नमः (मध्यमा अनामिका से ।)
हृदये श्री दक्षिण कालिका देवतायै नमः (तर्जनी मध्यमा-अनामिका कनिष्ठा से ।)
गुह्ये कं बीजाय नमः (तत्व मुद्रा से ।)
पादयोः ई शक्तये नमः (मध्यमा से ।)
सर्वाङ्गे रं कीलकाय नमः (करतल द्वय से ।)

कर-न्यास—

क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
क्रं मध्यमाभ्यां वषट् ।
क्रैं अनामिकाभ्यां हूं ।
क्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।
क्रः करतल करपृष्ठाभ्यां फट् ।

षड् न्यास—

क्रां हृदयाय: नमः अनामिका मध्यमा तर्जनी से
क्रीं शिरसे स्वाहा " " "
क्रूं शिखायै वषट् मुट्ठी बांधकर अंगूठे से
क्रं कवचाय हुँ दोनों करतलों से
क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् तर्जनी मध्यमा अनामिका से
क्रं अस्त्राय फट् दक्ष तर्जनी मध्यमा से वायीं हथेली में फटकार कर ।

व्यापक न्यास—

यह न्यास मूल मन्त्र के उच्चारण करते हुए किया जाता है। इसे 3।5 या 7 वार सिर से पांव तक और फिर पांव से सिर तक करना चाहिए ।

ध्यान—

'सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रती ।
घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त केशावलिं ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालं कृति ।
श्यामांगी, कृतमेखल! शवकरैर्देवी भजे कालिकाम् ॥'

काली का वर्ण बिजली की ज्योति की तरह है, उसके सिर के केश खुले हुए व बिखरे हुए हैं और मस्तक पर अर्द्ध चंद्र शोभा पा रहा है। उन्होंने अपनी लाल व लपलपाती जिह्वा को दांतों तले दबा रखा है और उसे बाहर निकाले हुए हैं। ओष्ठों से रक्त प्रवाहित हो रहा है। उनके तीन नेत्र हैं। आभूषणों के रूप में वह कानों में शिशुओं के शव ग्रहण किए हुए हैं। उनके चार हाथ हैं। बायें ऊपर वाले में खड्ग, नीचे वाले में मुण्ड, दक्षिण ऊपर वाले में अभय मुद्रा और नीचे वाले में वर मुद्रा है। उनके गले में 50 मुण्डों की माला है और कमर में शव के हाथों की काञ्ची है। वे नित्य युवती रूप में प्रसन्न मुद्रा स्थित है।

जप—

ध्यानोपरान्त मूल मन्त्र का जप किया जाना चाहिए। जप कम-से-कम एक माला अर्थात् 108 मन्त्रों का तो होना ही चाहिए। जप में इष्ट देवता का ध्यान सर्वोपरि है।

स्तोत्र—

ॐ प्रातर्नमामि मनसा त्रिजग द्विधात्रीं
कल्याणदायीं कमलायताक्षीम् ।
कालीं कलानाथ कलाभिरामां
कादम्बिनी मे चककाय कान्तिम् ॥1॥
जगतप्रसूते द्रुहिणो यदर्च्चा
प्रसादतः पाति सुरारि हन्ता ।
अन्ते भवो हन्ति प्रभप्रशान्त्यै
तां कालिकां प्रातरहं भजामि ॥2॥
शुभाशुभैः कर्मफलैरनेक
जन्मनि मे सञ्चरतो महेशि ।
माभूत्कदाचिदपि मे पशुभिश्च गोष्ठी
दिवानिशं स्यात्कुल मार्ग सेवा ॥3॥
वामे प्रिया शाम्भव मार्ग निष्टा
पात्रं करेस्तोत्रमये मुखाब्जे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यानं हृदब्जे गुरु कौल सेवा
स्युर्मे महाकालि तव प्रसादात् ॥4॥
श्री कालि मातः परमेश्वरि त्वां
प्रातः समुत्थाय नमामि नित्यम् ।
दीनोऽस्म्यनाथोऽस्मि भवातुरोऽस्मि
मां पाहि संसार समुद्र मग्नम् ॥5॥
प्रातः स्तवं यः परदेवतायाः
श्री कालिकायाः शयनावसारे ।
नित्यं पठेत्तस्य मुखावलोकात्
आनन्दकन्दां कुरितम्मनस्स्यात् ॥6॥

प्रणाम—

'-ॐ नमामि सर्व जननीं मुण्डमाला विभूषिताम् ।
महाकाल घोरां कलौ जाग्रत्स्वरूपिणीम् ।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां त्वान्नमामि विभूतये ।'

कवच—

कैलास शिखरा रुद्र भैरवं चंद्र शेखरम् ।
वक्षः स्थले समासीना भैरवी परिपृच्छति ॥
देवेश ! परमेशान ! लोकानुग्रह कारक ।
कवचं सूचितं पूर्वं किमर्थं न प्रकाशितम् ॥
यदि मे महती प्रीति स्तवास्ति, कुल भैरव ।
कवचं कालिका देव्याः कथयस्वानुकम्पया ॥
अप्रकाश्यमिदं देवि ! नरलोके विशेषतः ।
लक्षवार वारितासि स्त्री स्वभावाद्धि पृच्छसि ॥
सेवका वहवो नाथ ! कुल धर्म पराङ्मुखाः ।
यतस्ते त्यक्त जीवाशा शवोदेरि चितोपरि ॥
तेषां प्रयोग सिद्धयर्थं स्वरक्षार्थं विशेषतः ।
पृच्छामि बहुशो देव ! कथयस्व दयानिधे ।
कथयामि श्रृणु प्राज्ञे ! कालिका कवचं परम् ।
गोपनीयं पशोरग्रे स्वयोनिम्परे यथा ॥

अस्य कालिका कवचस्य भैरव ऋषिः।, उष्णिक् छन्दः, अद्वैत रूपिणी श्री दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कीलकं सर्वार्थ साधन-पुर: स मन्त्रशिखो विनियोग: ।
सहस्रारे महापद्मे कपूर धवलो गुरु: ।
वामोरू स्थित तच्छील: सदा सर्वत्र रक्षतु ॥
परमेश: पुर: पातु परापर गुरु स्तथा ।
परमेष्ठी गुरु: पातु दिव्यसिद्धिश्च मानव: ॥
महादेवी सदा पातु महादेव: सदावतु ।
त्रिपुरो भैरव: पातु दिव्यरूपधरा सदा ॥
ब्रह्मानन्द: सदा पातु पूर्णदेव: सदावतु ।
चलश्चित्त: सदा पातु चेलाञ्चल श्चपातु माम् ॥
कुमार: न क्रोधश्चैव वरद: स्मरदीपन: ।
माया मायावती चैव सिद्धौघा: पान्तु सर्वदा ॥
विमलो कुशलश्चैव भीमसेन: सुधाकर: ।
मोनो गोरक्षकश्चैव भोज देव: प्रजापति: ॥
मूलदेवो रन्तिदेवो विघ्नेश्वर हुताशन: ।
सन्तोष: समयानन्द: पातु मां मानता सदा ॥
सर्वे ऽप्यानन्द नाथान्त: अम्बान्ता मातर: क्रमात् ।
गणनाथ: सदा पातु भैरव: पातु मां सदा ॥
वटुको न: सदा पातु दुर्गा मां परिरक्षतु ।
शिरसा पाद पर्यन्तं पातु मां घोर दक्षिणा ॥
तथा शिरसि मां काली हृदि मूले च रक्षतु ।
सम्पूर्ण विद्यया देवी सर्वत्र रक्षतु ॥
क्रीं क्रीं क्रीं वदने पातु हृदि हूं हूं सदावतु ।
ह्रीं ह्रीं पातु सदाधारे दक्षिणे कालिके हृदि ॥
क्रीं क्रीं क्रीं पातु मे पूर्वे हूं हूं दक्षे सदावतु ।
ह्रीं ह्रीं मां पश्चिमे पातु हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥
पृष्ठे पातु सदा स्वाहा मूला सर्वत्र रक्षतु ।
षडङ्गे युवती पातु षडङ्गेषु सर्वदैव माम् ॥
मन्त्रराज: सदा पातु ऊर्ध्वाधो दिग्विदिक् स्थित: ।
चक्र राजे स्थिताश्चामि देवता: परिपान्तु माम् ॥
उग्रा उग्र प्रभा दीप्ता पातु पूर्वे त्रिकोणके ।
नीला घना बलाका च तथा परत्रिकोणगे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माया मुद्रा मिता पव तथा मध्यत्रिकोणणे ।
काली कपालिनी कुल्ला कुरु कुल्ला विरोधिनी ॥
बहि: षट्कोणके पान्तु विप्रचित्ता तथा प्रिये ।
सर्वा: श्यामा: खड्गधरा वाम हस्तेन तर्जना: ॥
ब्राह्मी पूर्वदले पातु नारायणी तथाग्निके ।
माहेश्वरी दक्षदले चामुण्डा राक्षसे ऽवतु ॥
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ।
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ॥
ऐं ह्री असिताङ्ग पूर्वे भैरव: परि रक्षतु ।
ऐं ह्रीं रूरुश्चाग्निकोणे ऐं ह्री चण्डस्तु दक्षिणे ॥
ऐं ह्रीं क्रोधो नैऋते व्यात् ऐं ह्रीं उन्मत्त कस्था ।
पश्चिमे ऐं ह्रीं मां कपाली वायुकोणके ॥
ऐं ह्रीं भीषणाख्यश्च उत्तरे ऽवतु भैरव: ।
ऐं ह्रीं संहार ऐशान्या मातृणा मङ्गा शिवा: ॥
ऐं हेतुको बटुका पूर्वदले पातु सदैव माम् ।
ऐं त्रपुरान्तको वटुक आग्नेय्यां सर्वदाऽवतु ॥
ऐं वह्नि वेतालो वटुको दक्षिणे मां सदा ऽवतु ।
ऐं अग्नि जिह्व वटुको ऽव्यात् नैऋत्यां पश्चिमे तथा ॥
ऐं काल वटुक: पातु ऐं कराल वटुक स्तथा ।
वायव्यां ऐं एक: पातु उत्तरे वटुको ऽवतु ॥
ऐं भीमवटुक: पातु ऐशान्यां दिशि मां सदा ।
ऐं ह्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहान्तास्चतु: षष्टिमातर: ॥
ऊर्ध्वाधो दक्षवामाग्रे पृष्ठदेशे तु पातु माम् ।
ऐं हूं सिंह व्याघ्रमुखी पूर्वे मां परिरक्षतु ॥
ऐं क्रीं क्रीं सर्व मुखी अग्नि कोणे सदा ऽवतु ।
ऐं मां मां मृगमेषमुखी दक्षिणे मां सदा ऽवतु ॥
ऐं चौं चौं गजराजमुखा नैऋत्यां मां सदा ऽवतु ।
ऐं में में विड्रालमुखी पश्चिमे पातु मां सदा ॥
ऐं खौं खौं क्रोष्टुमुखा वायुकोणे सदा ऽवतु ।
ऐं ह्रां ह्रां ह्रस्वदीर्घमुखी लम्बोदर महोदरी ॥
पातु मामुत्तरे कोणे ऐं ह्रीं ह्रीं शिव कोणके ।
ह्रस्व जघतालजंघ प्रलम्बोष्ठी सदा ऽवतु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kath

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एता: श्मशान वासिन्यो भीषणा विकृताननाः ।
पान्तु मां सवदा देव्यः साधका भीष्ट पूरिकाः ।।
इन्द्रो मां पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्या मग्निदेवता ।
दक्षे यमः सदा पातु नैर्ऋत्यां नैर्ऋतिश्च माम् ।।
वरुणोऽवतु मां पश्चात् वायुर्मां वायवेऽवतु ।
कुबेरश्चोत्तरे पायात् ऐशान्यां तु सदाशिवः ।।
ऊर्ध्वं ब्रह्मा सदा पातु अधस्त्वानन्तदेवता ।
पूर्वादिदिक् स्थिताः पान्तु वज्राद्या श्चायुधाश्च माम् ।।
कालिका ऽवतु शिरसि हृदमे कालिका ऽवतु ।
अधारे कालिका पातु पादयोः कालिकाऽवतु ।।
दक्षु मां कालिका पातु विदिशु कालिका ऽवतु ।
ऊर्ध्वं मे कालिका पातु अधश्च कालिका ऽवतु ।।
चर्मा सृङ् मांसमेदां ऽस्थि मज्जा शुक्राणि मेऽवतु ।
इन्द्रियाणी मनश्चैव देहं सिद्धि च मे ऽवतु ।।
आकेशात् पाद पर्य्यन्तं कालिका मे सदा ऽवतु ।
वियति कालिका पातु पथि मां कालिका ऽवतु ।।
शयने कालिका पातु सर्व कार्येषु कालिका ।
पुत्रान् मे कालिका पातु धनं मे पातु कालिका ।।
यत्र मे संशया विष्ठास्ता नश्यन्तु शिवाज्ञया ।
इतीदं कवचं देवि ब्रह्मलोकेऽपि दुर्लभम् ।।
तव प्रीत्या मया ख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।
तव नाम्नि स्मृते देवि ! सर्व यज्ञ फलं लभेत् ।।
सर्व पापः क्षय याति वाञ्छा सर्वत्र सिद्धयति ।
नाम्ना शतगुणं स्तोत्रं ध्यानं तस्मात् शताधिकम् ।।
तस्मात् शताधिको मंत्रः कवचं तच्छताधिकम् ।
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्ति श्रद्धा समन्वितः ।।
संस्थाप्य वामभागे तु शक्ति स्वामि परायणाम् ।
रक्त वस्त्र परीधानां शिव मन्त्र धरां शुभाम् ।।
या शक्तिः सा महादेवी हररूपश्च साधकः ।
अन्योऽन्य चिन्ताद् देवि ! देवत्वमुपजापते ।।
शक्ति युक्तो राजद् देवीं चक्रे वा मनसापि वा ।
भोगेश्च मधुपर्काद्यै स्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ततस्तु कवचं दिव्यं पठेमदेमना: प्रिये ।
तस्य सर्वार्थं सिद्धि: स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥
इदं रहस्यं परमं परं स्वस्व्ययनं महत् ।
य: सकृत्तु पठेद्देवि ! कवचं देव दुर्लभम् ॥
सर्व यज्ञ फलं तस्य भवेदेव न संशय: ।
संग्रामे च यजेत् शत्रून् मातङ्गानिव केशरी ॥
नास्त्राणि तस्य शस्त्राणि शरीरे प्रभवन्ति च ।
तस्य ब्याधि कदाचित् न दु:खं नास्ति कदाचना ॥
गतिस्तस्यैव सर्वत्र वायु तुल्य: सदा भवेत् ।
दीर्घायु. कामभोगीशो गुरु भक्त. सदा भवेत् ॥
अहो कवच माहात्म्यं पठमानस्य निव्यश: ।
विनापि नययोगेन योगीश समतां व्रजेत् ॥
सत्यं सत्यं पुन: सत्यं सत्यं सत्यं पुन: पुन ।
न शक्नोमि प्रभावं तु कवचस्यास्य वर्णितम् ॥

काली शतनाम—

काली के इस शतनाम का नित्य प्रति श्रद्धा पूर्वक पाठ करने से देवी प्रसन्न होती है और हर प्रकार के भय से रक्षा करती है। भय से रक्षार्थ यह अनुभूत साधन है—

काली कपालिनी कान्ता कामदा काम सुन्दरी ।
काल रात्रि: कालिका च कालभैरव पूजिता ॥1॥
कुरु कुल्ला कामिनी च कमनीयस्व भाविनी ।
कुलीना कुलकर्त्री च कुल वर्त्म प्रकाशिनी ॥2॥
कस्तूरि रसनीला च काम्या काम स्वरूपिणी ।
ककार वर्ण निलया कामधेनु करालिका ॥3॥
कुल कान्त करालास्या कामार्त्ता च कलावती ।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुल पालिनी ॥4॥
कुलजा कुल मन्या च कलहा कुल पूजिता ।
कामेश्वरी काम कान्ता कुञ्जरेश्वर गामिनी ॥5॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी ।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुल पूजिता ॥6॥
काश्यपी कृष्ण माता च कुलिशाङ्गी कला तथा ।
क्रीं रूपा कुल गम्या च कमला कृष्ण पूजिता ॥7॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कल कण्ठी च कार्तिकी ।
कम्बु कण्ठी कौलिनी च कुमुदा काम जीविनी ॥8॥
कलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुल पालिका ।
कामदेवकला कल्पलता कामांगवर्द्धिनी ॥9॥
कुन्ता च कुमुद प्रीता कदम्ब कुसमोत्सुका ।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णा नंद प्रदायिनी ॥10॥
कुमारी पूजनरता कुमारी गुण शोभिता ।
कुमारी रञ्जनरता कुमारी व्रत धारिणी ॥11॥
कङ्काली कमनीया च काम शास्त्र विशारदा ।
कपाल खट्वाङ्गधरा काल भैरव रूपिणी ॥12॥
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलास वासिनी ।
कात्यायनी काय्यंकरी काव्य शास्त्र प्रमोदिनी ॥13॥
कामाकर्षण रूपा च काम पीठ निवासिनी ।
काङ्किनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलह प्रिया ॥14॥
कुण्ड गोलोद्भव प्राणा कौशिको कीर्ति वर्द्धिनी ।
कुम्भस्तनी कलाक्षा च काव्या कोकदन प्रिया ॥15॥
कान्तारवासि कान्तिः कठिना कृष्ण वल्लभा ।
इति ते कथितम् देवि गुह्याद् गुह्यतरम् परम् ॥16॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवृत्ति मंत्र

विपत्ति निवारणार्थ—

निम्न मन्त्रों में से किसी का भी संपुट लगाकर विधि से पारायण करने पर विपत्तियों का नाश होता है—

(i) सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥

(ii) शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

(iii) करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी ।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥

भय निवृत्ति के लिए—

(i) ज्वाला कराल मृत्युग्रशेषा सुर सूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥

(ii) सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥

(iii) एतत वदनं सौम्यं कांचन त्रय भूषितम् ।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥

पाप निवृत्ति के लिए—

(i) हिनस्ति दैव्य तेजांसि स्वनेनापर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापभ्योऽनः सुतानिव ॥

(ii) नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्व कल्याण के लिए—

(i) सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

उपद्रवों से रक्षार्थ—

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा, यत्रारयो दस्यु बलानि यत्र ॥

सुरक्षा के लिए—

शूलेन पाहि नो देवि पावि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चाप ज्यानिःस्वेनन च ॥

मानस प्रयोग—

इसे सिद्ध करने के लिए रात्रि के दस बजे के बाद साधना करना सर्वोत्तम रहता है। पहले अष्टाङ्ग हवन किया जाना चाहिए। फिर जिस उद्देश्य के लिए मन्त्र सिद्ध करना हो, उसके लिए नित्य प्रति जप किया जाना चाहिए। साधक का मुख पूर्व की आर रहना चाहिए। आसन ऊन अथवा कुश का होना चाहिए। अष्टाङ्ग हवन की सामग्री इस प्रकार है—

जौ एक भाग, चावल दो भाग, तिल तीन भाग, शक्कर चार भाग, इसमें चंदन का बुरादा, अगर, तगर, केशर, नागरमोथा, पंचमेवा मिलाया जाना चाहिए।

घी सर्वथा शुद्ध होना चाहिए।

पंचमेवा में मुनक्का, बादाम गिरी, गोला, किशमिश, छुआरा, पिस्ता, अखरोट काजू आदि ले सकते हैं।

हवन के लिए उपयुक्त समिधाएं : लकड़ियां आम, पीपल, गूलर, ढाक, बरगद, छोंकर, आक, कुशा, दूब आदि की हों।

जिस कार्य के लिए दोहा-चौपाई या सोरठा का जाप साधना उपयुक्त हो, उसे सिद्ध करने के लिए एक दिन उपरोक्त सामग्री से 108 आहुतियां देनी चाहिए। यह हवन एक ही बार करने का विधान है। हवन के लिए स्थायी पक्का हवनकुण्ड भी बनाया जा सकता है। शुद्ध मिट्टी अथवा बालू की वेदी बनाकर भी काम चलाया जा सकता है। हवन रात्रि को 10 बजे के बाद करना चाहिए। मन्त्रों की तरह चौपाई के उच्चारण के अन्त में 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण करना चाहिए। तभी आहुति देनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिए । 108 आहुतियों में 1 सेर के लगभग सामग्री लगती है ।

आहुति देते समय परम भक्ति और श्रद्धा से चौपाई का उच्चारण करना चाहिए । और 'स्वाहा' का उच्चारण करके सारी सामग्री हवन कुण्ड में ही जानी चाहिए । कुण्ड के बाहर बिखरना अच्छा नहीं है । हाथ सीधा होना चाहिए, उल्टा नहीं । अग्नि को देवता माना गया है । हवन उस देवता का भोजन है । साधारण अतिथि को भी श्रद्धा और प्रेम से भोजन कराया जाता है ।

आहुतियां दाहिने हाथ से दी जानी चाहिए । संख्या के लिए माला का उपभोग करना हो तो उसे बायें हाथ में रख लेना चाहिए । आटे या मिट्टी की गोली बना कर भी गिनती का काम चलाया जा सकता है । गेहूं जौ-चावल के 108 दाने गिनकर भी इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है । जिसमें सुविधा प्रतीत हो, उसका उपयोग करना चाहिए ।

श्री लंकाकाण्ड की चौपाई या दोहा सिद्ध किया जा रहा हो तो हवन शनिवार को किया जाना चाहिए । अन्य काण्डों के दोहे या चौपाई का हवन किसी भी दिन किया जा सकता है ।

रक्षा रेखा की सिद्धि भी इसी विधान का एक अंग है । अपने आसन के चारों ओर जल या शुद्ध कोयले से रक्षा रेखा खींचनी पड़ती है । इसका अनुकरण लक्ष्मण द्वारा सीता की कुटी के चारों ओर खींची रक्षा रेखा से किया गया है ।

रक्षा रेखा का मन्त्र इस प्रकार है—

'मामभिरक्षय रघुकुल नायक ।
धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥'

किसी भी मानस मन्त्र की सिद्धि करने से पूर्व इस रक्षा रेखा मंत्र की आहुति देनी पड़ती है । एक बार सिद्ध करना आवश्यक होता है । इसे सिद्ध करने के लिए 108 बार आहुति देनी पड़ती है । एक बार सिद्ध करने पर इसे पुनः जीवन-भर सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं रहती ।

किसी भी चौपाई को सिद्ध करने से पूर्व उपरोक्त विधि से सिद्ध की हुई रक्षा सिद्ध रेखा अपने आसन के चारों ओर खींचनी चाहिए और फिर उसे सिद्ध करने के लिए हवन करना चाहिए ।

हवन द्वारा मंत्र सिद्ध होने पर नित्यप्रति उस चौपाई या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को कम-से-कम 108 बार जप करना चाहिए। 108 की सख्या को 1 माला की संज्ञा दी गई है। जिन्हें अधिक सुविधा हो वे 3। 5। 7। 9। 21 माला का जप कर सकते हैं.। मंत्र जाप प्रातः या रात्रि में कभी भी किया जा सकता है। स्त्री जातक भी यह साधना कर सकती हैं।

साधना-स्थल एकान्त या शान्त होना चाहिए। वहां अधिक लोगों का अथवा परिवार वालों का आना-जाना न हो। स्थान का वातावरण पवित्र व शुद्ध होना चाहिए। इष्ट देवता के विभिन्न स्वरूप के आकर्षक चित्र टंगे होने चाहिए। जहां साधना चल रही हो वहां सामने चौकी पर सीताराम का सुन्दर चित्र स्थापित किया जाना चाहिए। उनके अंग-प्रत्यंग को भली प्रकार निहार कर जप के साथ सूक्ष्म नेत्रों से भी उनके दर्शन करने चाहिए या ध्यान करना चाहिए और यह अनुभव करना चाहिए कि सीता-रामजी मुझ पर अत्यन्त प्रसन्न हैं। आशीर्वाद की मुद्रा में खड़े वरदान दे रहे हैं कि तेरा अभीष्ट सिद्ध हो। साधक को कामना सिद्धि पर पूरा-पूरा विश्वास हो।

कष्ट समाप्ति के लिए—

(i) सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेहीं॥

(ii) जौं प्रभु दीन दयालु कहावा।
आरति हरन बेद जसु गावा॥

(iii) जपहिं नामु जन आरत भारी।
मिटहिं सुसंकट होहिं सुखारी॥

(vi) दीन दयाल बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

(v) राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगत बिपत्ति भंजन सुखदायक॥

(vi) हरन कठिन कलि कलुष कलेसू।
महा मोह निसि दलद दिनेसू॥

शत्रु नाश के लिए—

(i) कर सारंग साजि कटि भाथा।
अरि दल दलन चले रघुनाथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ii) गरल सुधा रिपु करहि मिताई ।
गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
(iii) मेरे हित हरि सम नहिं कोऊ ।
एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥

ज्वर नाश—

'ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्र वदनी माहेश्वरी चंडिका भूत प्रेत पिशाच विद्रावय विद्रावय वज्र दंडनं महेश्वर त्रिशूले नदी वीर खड्गेन चूरय चूरय पात्र प्रवेशे प्रवेशे ॐ छां छीं-छूं छः फट् स्वाहा ।'

प्रथम 108 बार इस मन्त्र का जप करें, फिर डोरा को 21 बार मन्त्रित करके बांध देने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है ।

घाव ठीक होना—

'लोहु खाहु लोहु पीयउ लोह ही बरु दितु चंदसुर राजा अनुनाही कोइ राजा ।'

इस मन्त्र से फोड़े को 7 बार मन्त्रित करने से फोड़ा अर्थात् घाव अच्छा हो जाता है ।

वात रोग—

'ॐ रां रीं रुं रः स्वाहा ।

इस मन्त्र से तीन दिन तक 21-21 बार मन्त्र पढ़ता जाये और कमल वात रोगी पर हाथ फेरता जाये तो कमल वात नष्ट होती है ।

सिर पीड़ा—

'ॐ क्षीं क्षीं क्षीं हः स्वाहा ।'

इस मन्त्र को जपता जाये और सिर पर हाथ फरता जाये तो सिर दर्द दूर हो जाता है ।

रक्त स्राव रोकना—

'ॐ तद्यथा गर्भधर धारिणी गर्भ रक्षिणि आकाश मायीकें हुं फट् स्वाहा ।'

इस मन्त्र से लाल डोरे को 21 बार मंत्रित करके स्त्री के कमर में बांधने से रक्त स्राव रुक जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ॐ नमो लोहित पिंगलाय मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं रक्तं स्तंभय स्तंभय ॐ तद्यथा हुं सुरलघु सुरलघु तिलि तिलि मिलि मिलि स्वाहा।'

इस मन्त्र से लाल डोरे को 21 बार मन्त्रित कर 7 गांठ लगाकर स्त्रियों के वाम पांव के अंगूठे में बांधने से रक्त स्राव रुक जाता है।

सन्तान प्राप्ति हेतु—

'ॐ भौमाय भूमि पुत्राय मम गर्भं देहि देहि स्थिर स्थिर माचल ॐ क्रां क्रीं क्रौं उं फट् स्वाहा।'

मंगलवार के दिन कुमारी कन्या को भोजन करवा कर वस्त्रालंकर देकर संतुष्ट करके, इस मन्त्र का 1 महीने में 50,000 जाप पूर्ण करे, परन्तु जाप का प्रारंभ मंगलवार को ही करे तथा जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा एक समय भोजन करे तो निःसन्देह संतान उत्पन्न होती है।

सर्प विष मुक्ति—

'ॐ हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे पर्वते गंधमादने तस्य पर्वतस्य प्राग्दिग्विभागे कुमारी शुभ पुण्य लक्षणाए णेवं चर्मवसना धोणसैः कृत के ऊरन्नुपुरा सर्प पुण्य मेखला आसी विसचों चलि का दृष्टि विष कर्णा व तंसिका खादेती विष पुष्पाणि पिवंती मारुतां लतां समांल वेति लावेति एहत्रेहि वत्से श्रुणोहि में जांगुली नाम विद्याहं उत्तमा विष नाशिनी यास्किचि मम नाम नातत्सर्वं नश्यते विषं।'

ॐ इलवित्ति डुं वे डुवालिए दुस्से दुस्सलिए जक्के जक्करेण मम्मे मम्मरेण संजक्करेण अघे अनघे अखांयतीये अपायंतीये श्वेतं श्वेते तुंडे अनानु रक्ते ठः ठः ॐ इल्ला विल्ला चक्का-वक्का कोरड़ा कोरड़त्ति घोरड़ा घोरड़त्ति मोरड़ा मोरड़त्ति अट्टे अट्ट रुहे अट्टट्टोंडु रुहे सप्पे सप्प रुहे सप्प होंडु रुहे नांगे नागरुहे नाग होंडु अहे अछे अछले विषत्तंडि विषत्तंडि जिडि जिडि स्फुट स्फुट स्फोटय स्फोटय इदांविषम विषं गच्छतु गच्छतु भोक्तारं भोक्तारं गच्छतु भूम्यां गच्छतु स्वाहा।'

इस मन्त्र विद्या को जो पढ़ता है, सुनता है, उसको 7 वर्ष सांप दृष्टि में नहीं दिखेगा अर्थात् उसको 7 वर्ष तक सर्प के दर्शन नहीं होगा और काटेगा भी नहीं और काटेगा भी तो शरीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जहर नहीं चढ़ेगा ।

ज्वर नाश—

वानरस्य मुख घोर आदित्य मम तेजसं ज्वरं तृतीयकं गात्र दर्शना देव नश्यति हन हन हन दह दह पच पच मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय छेदय छेदय अन्यसींमां ज्वर गच्छ हनुमंत लांगूल प्रहारेण भेदय ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षः रक्ष रक्ष फट् स्वाहा । विष्णु चक्रेण छिन्न छिन्न रुद्र श्रुतेण भिद भिद ब्रह्मकमलेन हन हन स्वाहा ।

इस मन्त्र को केशर, गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर प्रातः रोगी को दिखाने से ज्वर का नाश होता है ।

तृतीय ज्वर नाश—

'ॐ नमो भगवते इंश्वराय गौरी विनायकषए मुषसहिताए कपाल मालधिराय चंद्र शोभिताय तृतीय ज्वर वर प्रदाय गमय गमय स्फोटय स्फोटय त्रोटय त्रोटय परमेश्वरीस्य आज्ञायाभ [illegible] तृतीय जूर जइ पीडा करइ ।'

इस मन्त्र से गुग्गल को 108 बार मन्त्रित करके, फिर रोगी के सिर पर महेश्वर है ऐसा विचार करता हुआ रोगी के सामने गुग्गल को जलाने व पानी कलवानी करके पिलाने से तृतीय ज्वर चला जाता है ।

'ॐ नमो भगवतः क्षेत्रपालं त्रिशूलं कपालं जटा मुकुट वद्धं शिरो डमरुक शोभितं उग्रनादं ज़ियं गोगिनी, जय जया [illegible] सद विकट नै भुजं [illegible] विशालं ।'

इससे दर्भ हाथ में लेकर रोगी को झाड़ा दे तो ज्वर उतर जाता है ।

गंड गाल नाश—

'ॐ नमो भगवते काश्यपस्ताय वासुकि सुवर्ण पक्षाय वज्र तुंडाय महागरुडाय नमः सर्वलोकान खांतगंताय तद्यथा हन हन हनि हनि मन मन संदर्शन ग्रस ग्रस चर चर चिरि कुरु कुरु घोड़ा सान गृन्ह गृन्ह लोह लिग भिद भिद गंडमाल कीटां भक्षे स्वाहा ।'

तीक्ष्ण अस्त्रेण उंजयेत गंडमाला नश्यति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष कीट नाश—

'पर्वंतु डुंगरू कर्कंट बाड़ि तसुंकेरि वंश कुहा हाडी छिद छिद भिद भिद सापून केरि शक्ति ठः ठः स्वाहा ।'

इस मन्त्र जाप से विष काटा ठीक हो जाता है।

बिच्छू उतारना—

'ॐ सवरि स्वाहा ।'

जब कभी बिच्छू काट ले तो इस मन्त्र का जाप करना चाहिए । इससे बिच्छू का जहर नहीं चढ़ता ।

'अट्ठारह जाति विछी यह अरुणार उदे बूल्लावइ महादेव उ उला रइ खभाक देव केरी आज्ञा फुरतु देव उगरउ ।

इस मन्त्र से 108 बार हाथ फेरता जाय और मन्त्र पढ़ता जाय तो बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

'अट्ठ गंट्ठि नव फोडि फोंडि फोडि तालि विछतु ऊपरि मोरु उडिर जावन गरुड भक्खइ ।'

इस मन्त्र से 7 बार हाथ से झाड़ा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

'सुयर वाले हिंगेरु येहिं अन्नु नेहिं फलेहिं अमुका (नाम) विछि उलग्रउ उत्तारित्छइ एहिं ।'

इस मन्त्र से प्रथम कपड़े को मोड़ता जाय, तो बिच्छू का जहर उतर जाता है । मन्त्र मौन पढ़ना चाहिए ।

सिर दर्द उतारना—

'ॐ जः हः सः ।'

इस मन्त्र के जाप से सिर दर्द समाप्त हो जाता है ।

'ॐ वैष्णवे हुं स्वाहा ।'

इस मन्त्र के जाप से सिर दर्द समाप्त हो जाता है ।

'ॐ क्षं क्षूं शिरोवेदना-नाशय नाशय स्वाहा ।'

इस मन्त्र को मात्र २१ बार जपने से सिर दर्द ठीक हो जाता है ।

आधाशीशी दर्द हर्ता—

'ॐ पूं पूं हः हः दुं दुः स्वाहा ।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस मन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से आधाशीशी रोग शान्त हो जाता है।

'अघ भेदकं सिरती नाशय नाशय स्वाहा।'

इस मन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से आधाशीशी शान्त हो जाता है।

'आवइ आवइ उर्द्धफाटिउमरि सिजा सिजा चाउंड हवी आग जई ज़ई हई।'

इसको 21 बार जपने से सिर दर्द ठीक हो जाता है।

'ॐ ह्रीं रां रीं रुं यः क्षः।'

इस मन्त्र को 21 बार जपने से सिर दर्द ठीक हो जाता है।

'ॐ महादेव नील ग्रीव जटा धर ठः ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र के जाप से सिर दर्द ठीक हो जाता है।

'ॐ ऋषभस्य किरु किरु स्वाहा।'

इस मन्त्र के जाप से भी सिर की पीड़ा शान्त हो जाती है।

विष काटा दूर होना—

'पर्वतु डुंगरु कर्कट वाड़ि तसुंकेरि वंश कुहा हाडी छिद छिद भिद भिद सापून केरि शक्ति ठः ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र के जपने से विष काटा ठीक होता है।

नेत्र दोष दूर होना—

'पारे पारे समुद्रस्य त्रिकुटा नाम राक्षसी तस्या किली किली शब्देन अमुकस्य (नाम) चक्षु रोगं प्रणश्यति।'

इस मन्त्र से 7 लड़े डोरे को 7 गांठ देकर वाम कान पर बांधने से चक्षु पीड़ा दूर हो जाती है।

'ॐ अंषि जले जलं धरे अन्धा वन्धा कोड़ी देव पुआरे हिमवंत्तसारी।'

इस मन्त्र से 21 बार आरनाल जल मन्त्रित करके धोने से चक्षु पीड़ा दूर होती है।

'ॐ विष्णु रूपं महारूपं ब्रह्मरूपं शंकर प्रणिपादेयं अक्षि रोग मा ह ह रो ह ह हिरंतु स्वाहा।'

इस मन्त्र से पानी 21 बार मंत्रित करके जल छिड़कने से चक्षु पीड़ा शान्त होती है।

'ॐ क्षि क्षि प क्षं हं सः।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भस्म मन्त्रित करके आंख पर लगाने से चक्षु पीड़ा शान्त होती है।

खजूरा विष शान्त होना—

'ॐ भूर भूर भूः स्वाहा।'

इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर हाथ से झाड़ा देने पर खजूरा विष उतर जाता है।

'ॐ भूरु भूरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से 21 बार हाथ से झाड़ा देने पर खजूरा विष उतर जाता है।

घोड़े के काटने पर—

'डूं वु कु कुरु भंभणूराउ पंचय मिलहि तिपव्वय घाउ।'

इस मन्त्र से मिट्टी को अभिमन्त्रित करके घोड़े के काटे हुए स्थान पर डालने से और हाथ से झाड़ा देने से अच्छा हो जाता है।

पागल कुत्ते के काटने पर—

'वाग्घहि रहोज्जुंतो सीहे हिं परिवारिऊ एभ्य नंद गछा मोकु कुराणां मुखं बंधानि स्वाहा।'

इस मन्त्र को 21 बार पढ़ता जाये और कपड़े में गांठ दे तो पागल कुत्ते का मुह बंद हो जाता है, फिर वह किसी को भी नहीं काटता है।

कृमि दोष नाश—

'उडक वेडि जागलि जाहठर ल्लइ पारिपरे ल्लइ जाहः कालो कुरड़ी तु हु फिट् काल काले सरी उग्र महेसरी पछाड़ साधणि शत्रु नाशिनी।'

रविवार को गोबर से मण्डल करके उसके ऊपर खड़ा रहे फिर दर्भ लेकर इस मन्त्र से झाड़ा 21 बार दे तो कृमि दोष मिटता है।

दाढ़ पीड़ा मिटना—

'समुद्र समुद्र माहिदीपु दीप माहिघनाढ्य जीव दाढ़ कीड़उ बाउ दाढ़ कीडउ न बाहित अमुक (नाम) तणइ पापिली जंइ।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस मन्त्र से दाढ़ को 21 वार मन्त्रित करे तो दाढ़ पीड़ा शान्त हो जाती है।

कांख विलाई शमन—

'ॐ इटित्तिहि स्वाहा।'

इस मन्त्र को 108 वार जप कर 7 वार हाथ से झाड़ा देवे तो कांख विलाई नष्ट होती है।

'कुकुहा नाम कु हाड़उ पलि घलि उपलाइस घडिउ भारि घडिउ भारसइ घडिउ सदरासवरी मंत्रेण तासु कुहाडेठा छिन्न यलि त्रुटे व्याधि।

इस मन्त्र को सात बार जपने से काग और कांख बिलाई नष्ट हो जाती है।

विसूचिका नष्ट होना—

'ॐ क्षां क्षां क्षं क्षैं क्षौं क्षं क्षः।'

गर्म पानी को 21 वार मंत्रित करके पीने से विसूचिका रोग नष्ट हो जाता है।

अजीर्ण नाश—

'भस्म करी ठ: ठ: स्वाहा। ॐ इचि मिचि भस्म करि स्वाहा। ॐ इटि-मिटि मम भस्मं करि स्वाहा।'

इस मन्त्र से जल मन्त्रित करके पिलाने से एवं हाथ से झाड़ा देने से अजीर्ण ठीक हो जाता है और अतिसार भी ठीक होता है। साथ ही उदर व्याधि भी ठीक हो जाती है।

'अतीसारं वंधेमि महा भरें बंधेमि न क्वाहि वंधेमि स्वाहा।'

डोरे को 7 वार मन्त्रित करे, उसके वाद कमर में बांधे तो नाक रक्त व अतिसार ठीक हो जाता है। और बहुत खट्टी कोजी नमक के साथ पीने से भी अतिसार ठीक हो जाता है।

प्लीहा रोग—

'ॐ नमो ऋषभध्वजाय एक मुखी द्विमुखी अमुकस्य (रोगी का नाम) प्लीहा व्याधि छिदय छिदय स्व स्थानं गच्छ प्लीहे स्वाहा।'

इस मन्त्र के जाप करने से प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घाव—

'ॐ क्रों प्रों ठ: ठ: स्वाहा।'

इस मन्त्र का 108 बार जाप करने से घाव समाप्त हो जाता है।

बवासीर—

'ॐ इज्जे विज्जे हिमवंत निवासिनी अमो विज्जे भगंदरे वातारिसे सिभारि से सोणि यारि से स्वाहा।'

इस मन्त्र से पानी 7 बार मन्त्रित करके रोगी को पिलाने पर बवासीर ठीक हो जाता है।

'अर्डी विवडी विमडीवा कुंण कुंण कुंतय तीविण ट्ठी विमडी त्रा कुंकुणा विद्यापसाए अम्हकुले हरि साउन भवंति स्वाहा।'

इस मन्त्र से किसी भी प्रकार के धान्य का लावा (धाणी) को मन्त्रित करके 7 दिन तक खिलावें तो हरिष रोग अर्थात् बवासीर ठीक हो जाता है।

'अंजणि पुतु हणवंतु वालि-सुग्रीव मुहि पइसइ पइंसइ सोसइ सोसइ हरि मन्त्रेण हणुवंत की आज्ञा फुरइ।'

इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रित करके देने से और नारियल की जटा कमर में बांधने से बवासीर रोग ठीक हो जाता है।

विष कंटक नष्ट होना—

'ॐ धानि धानि तुह सो वलि हाली वाबी होई दुवन्नि भासि दीहि बांधइ इ गांठिडउ गांठि गांठि विष कंटउ पसरइं असुर जिणे विणऊ भऊ भाणऊं।'

इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रित करके पीने से विष कंटक नाश हो जाता है।

दाद ठीक होना—

'ॐ नमो द्राद्राव्य जस्य सरीरवेर कारिणी तस्य छंडती नमो नमः श्री हनुमंत की आज्ञा प्रवर्त्तते।'

इस मन्त्र से थूक और भस्म दोनों को मन्त्रित कर दाद के ऊपर लगाने से दाद ठीक हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फोड़ा—

कर्म जाणइ धर्म्म जाणई राका गुरु कउ पातु जाणइ सूर्य देवता जाणइ जाई रे विष ।'

इस मन्त्र से फोड़े को मन्त्रित करने से फोड़ा ठीक होता है ।

मसूड़ा—

'ॐ दधी चिकतु पुत्रु तामलि रिषि तोर उपित्ता गावि जीभ वांटि मारियउ तिशु वयरिहंतु लागउहंतु गाविंतु हु ब्राह्मणु छाडि छाडि न कीजइ अइसा ।'

इस मन्त्र से जल को 21 बार मन्त्रित करके उस पानी को मुख में लेकर, मुख में घुमाने से मसूड़े ठीक हो जाते हैं ।

मल दोष—

'ॐ घंटा कर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशन: चक्षु: पदानां मले जाते रक्ष रक्ष महाबल: ।

इस मन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोजपत्र पर लिखकर घंटा में बांधे, फिर उस घंटा को जोर से बजावे जितने प्रदेश में घण्टे की आवाज आयेगी उतने प्रदेश में मल दोष नष्ट होंगे । सर्व व्याधि नष्ट होगी ।

रिंगणी वाय—

'ॐ चंद्र परिश्रम परिश्रम स्वाहा ।'

एक हाथ के प्रभाण वाण (शर) को लेकर 21 दिन तक उक्त मंत्र से रिंघणी वाय ताड़न करे तो रिंगणी वाय नष्ट होती है ।

कमल वाय—

'ॐ कमले कमले अमुकस्य (नाम) कामलं नाशय नाशय स्वाहा ।'

'ॐ रां रीं रूं रौं र: स्वाहा ।'

इस मन्त्र से 21 बार 34 दिन तक हाथ से झाड़ा दे तो कामल वात नष्ट होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्व व्याधि नाशक विष्णु सहस्र नाम

महाभारत में विष्णु सहस्र नाम का माहात्म्य वर्णन करते हुए लिखा गया है कि जो व्यक्ति इसका नित्य श्रवण पाठ करता है, उसका इस लोक व परलोक में कभी भी कोई अशुभ नहीं हो सकता है। हर व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार लाभ प्राप्त होता है। जो धर्म का इच्छुक है, वह उस पथ पर द्रुत गति से बढ़ने लगता है। धन-भोग व सन्तान की इच्छा वाला वही वस्तुएं प्राप्त करता है। साधक यशस्वी-तेजस्वी-बलवान-रूपवान-सर्वगुण सम्पन्न व निरोग होता है। रोगी-भयभीत व विपत्ति में पड़े व्यक्ति रोग रहित, निर्भय, व सुखी हो जाते हैं। इससे अन्तःकरण पवित्र होता है। जन्म-मृत्यु जरा और व्याधि का भय नहीं रहता और आत्मसुख की अनुभूति करता है। उसका कभी पराभव नहीं होता है और वह सभी प्रकार की व्याधियों से छूट जाता है।

पाठ विधि

संकल्प—सुमुहूर्ते शिवालयादिषु कृतनित्यक्रियः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देश कालो संकीर्त्य ममामुक व्याधेः समूलनाश द्वारा सद्य आरोग्यार्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थंममुक संख्यया विष्णु सहस्र नाम जपं करिष्ये।

इसके बाद पुष्पादि से पूजन करके गणेश जी का स्मरण करना चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्री विष्णोः सहस्र नाम्नां रुद्रशाप विमोचनमन्त्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री रुद्रानुग्रहशक्तिर्देवता, सुरेशः शरणंशर्मेति बीजम्, अनन्तो हुतभुग्भोक्तेति शक्तिः, सुतेश्वराय्येति कीलकं रुद्रशाप विमोचने विनियोगः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर न्यास—

ॐ क्लीं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यान—

तमाल श्यामलतनुं पीतकौशेयवाससम् ।
वर्णमूर्तिमयं देवं ध्यायेन्नारायणं विभुम् ।।
ध्यान करके मानसोपचार करना चाहिए ।

जप—

निम्न मन्त्र का 108 बार जप करें—
ॐ क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

प्रार्थना—

थोड़ा जल पृथ्वी पर छोड़कर निम्न प्रार्थना करनी चाहिए—
ॐ श्री विष्णोः सहस्रनामस्तव रुद्रशाप विमुक्तो भव ।

इसके बाद आरोग्य व सिद्धि प्राप्ति के लिए सहस्र नाम के स्तवन के साथ निम्न में से किसी भी एक सम्पुट को लगाया जा सकता है । सहस्रनाम पाठ के साथ इस प्रकार संपुट लगाने से समस्त रोगों व व्याधियों का नाश होता है ।

सम्पुट—

(1) अच्युत-अनन्त-गोविन्द
(2) ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने प्रणतक्लेश-नाशाय गोविंदाय नमो नमः ।
(3) ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो-भूयो नमाम्यहम् ।
(4) ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः । शंकराय च मयस्काय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(5) रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयाऽनय: ।
रक्षां कुरु श्रियं देहि त्राहि मां शरणागतम् ।।
(6) ॐ नमो नारायणाय ।

सहस्रनाम के प्रत्येक श्लोक के आदि व अन्त में उपरोक्त मन्त्र का सम्पुट लगाकर 81 पाठ नित्यप्रति करने से किसी भी इच्छापूर्ति में सफलता प्राप्त की जा सकती है ।

विष्णु सहस्र नाम—

यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसारबन्धनात् ।
विमुच्येत नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ।।
नम: समस्त भूतानां आदिभूताय भूभृते ।
अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

।। वैशम्पायन उवाच ।।

श्रुत्वा धर्मविशेषेण पावनानि च सर्वश: ।
युधिष्ठिर: शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ।।1।।

।। युधिष्ठर उवाच ।।

किमेकं दैवतं लोक किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्त कं कर्मचन्त: प्राप्नुयुर्मानवा शुभम् ।।2।।
को धर्म: सर्व धर्माणां भवत: परमोमत: ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्म संसार बन्धनात् ।।3।।

।। भीष्म उवाच ।।

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुष: सततोत्थित: ।।4।।
तमेव चार्चयनित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यँश्च यजमानस्तमेव च ।।5।।
अनादि निधनं विष्णुं सर्वलोक महेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदु:खतिगोभवेत् ।।6।।
ब्रह्मव्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूत भवोद्भवम् ।।7।।
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मत: ।
यद् भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नर: सदा ।।8।।
परमं यो महत्तेज: परमं यो महत्तप: ।
परमं यो महद्ब्रह्म परम य: परायणम् ।।9।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पविगाणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं दैवतानां च भूतानां यो ऽ व्ययःपिता ॥10॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥11॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नाम सहस्रं में श्रुणु पापभयापहम् ॥12॥
यानि नमानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥13॥
ॐ विश्वं विष्णुवषट्कारो भूतभव्य भवत्प्रभुः ।
भूत कृ ''तभृद् भावो भूतात्मा भूत भावनः ॥14॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्ष क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥15॥
योगो योगविदां नेता प्रधान पुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥16॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निविल्ययः ।
सम्भवो भावना भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥17॥
स्वयम्भू शम्भुरादित्यः पुष्पराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥18॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभु :
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥19॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम् ॥20॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥21॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृत्तिरात्मवान् ॥22॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेतः प्रजाभव ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥23॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनः सृतः ॥24॥
वसुर्वसुमना: सत्यः समात्मा सम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृपकर्मा वृषाकृतिः ॥25

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वतस्था णुर्वरारोहो महातपाः ॥26॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वसेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ॥27॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्च तुदंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥28॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिनः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसु ॥29॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमोः यमः ॥30॥
वेद्योः वैद्यः सदायोगी वोरहा माधवो मधु ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥31॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अतिर्देश्यवपुः श्रीमःनमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥22॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविन्दापतिः ॥33॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुवर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥34॥
अमृत्यु सर्वदृक् सिंहः सन्धात सन्धिमान्स्थिरः ।
अजो दुमर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥35॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्य पराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥36॥
अग्रणीग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रापात् ॥37॥
आवर्तनी निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥38॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥39॥
असंख्येयो ऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धि साधनः ॥40॥
वृषाहि वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोहरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥41॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥42॥
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्यश्चन्द्रांशुर्भास्कर द्युतिः ॥43॥
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥44॥
भूत भव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥45॥
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्राजिद नन्तजित् ॥46॥
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥47॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानम प्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥48॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायु वाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥49॥
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभक्षणः ॥50॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धि ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥51॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्व लक्षणक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः ॥52॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥53॥
उद्भवः क्षोभणो देव श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥54॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥55॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्म विदुत्तमः ॥56॥
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥57॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥58॥
विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥59॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महारवः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥60॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः समं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥61॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥62॥
स्थापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्म कृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥63॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मो सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सपस्त्रांशुर्विधाता कृत लक्षणः ॥64॥
गर्भारत नेमिः सध्वस्थः सिंहो भूत महेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद् गुरुः ॥65॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥66॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
दिनयो जयः सत्यसंधो दोशाहः सात्वातां पतिः ॥67॥
जीवो विनाभितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महादधिशयोन्तकः ॥68॥
अजो मर्हाहः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥69॥
मर्हर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनी पतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥70॥
महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकाङ्गही ।
गुह्यो गंभीरो गहनो गुप्रेश्चक्रगदाधरः ॥71॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥72॥
भगवान भगहानन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गति सत्तमः ॥73॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रद: ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिज: ॥74॥
त्रिसामा सामग: साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यास कृच्छम: शान्तो निष्ठा शान्ति: परायणम् ॥75॥
शुभाङ्ग: शान्तिद: स्रष्टा कुमुद: कुवलेशय: ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रिय: ॥76॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिव: ।
श्रीवत्सवक्षा: श्रीवास: श्रीपति: श्रीमतांवरव: ॥77॥
श्रीद: श्रीश: श्रीनिवास: श्रीनिधि: श्रीविभान: ।
श्रीधर: श्रीकर: श्रेय: श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रय: ॥78॥
स्वक्ष: स्वङ्ग शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वर: ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशय: ॥79॥
उदीर्ण: सर्वतश्चक्षुरनीश: शाश्वतास्थिर: ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोक: शोकनाशन: ॥80॥
अर्चिष्मानर्चित: कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधन: ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथ: प्रद्युम्नोऽमिट विक्रम: ॥81॥
कालनेमिनिहा वीर: शौरि: शूरजनेश्वर: ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेश: केशव: केशिहाहरि ॥82॥
कामदेव: कामपाल: कामीकान्त: कृतागम: ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जय: ॥83॥
ब्रह्मण्यो वृह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धन: ।
ब्रह्मविद्ब्रह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रिय: ॥84॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरग: ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहवि: ॥85॥
स्तव्य: स्तवप्रिय: स्तोत्रं स्तुति स्तोता रणप्रिय: ।
पूर्ण: पूरभिता पुण्य: पुण्यकीर्तिरनामय: ॥86॥
मनोजवस्तीर्थंकरो वसुरेता वसुप्रद: ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हवि: ॥87॥
सद्गति: सत्कृति: सत्ता सद्भूति: सत्परायण: ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठ: सन्निवास: सुमामुन: ॥88॥
भूतावासो वासुदेव: सर्वासुनिलयोऽनल: ।
दर्पहा दर्पहो दृप्तो दुर्धरोऽशापराजित: ॥89॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वमूर्तिर्महार्तिदीप्त मूर्तिर मूर्तिर मूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥90॥
एको नैकः सवः कः किं मत्तत्पदमनुत्तगम् ।
लोक बन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥91॥

सुवर्ण वर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीर चलश्चलः ॥92॥
अमानो मानदो मान्यो लोक स्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेध धराधरः ॥93॥

तेजोवृषो धुतिधरः सर्वशस्यभृता वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नेक शृङ्गो गदाग्रजः ॥94॥
चतुर्मूतिश्चतुर्वाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥95॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो [illegible]हृति क्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो [illegible]र्गो दुरा[illegible] दुरारिहा ॥96॥
शुभाङ्गो लोक [illegible]रङ्ग सुतन्तुस्तन्तु वर्धनः ।
इन्द्रकर्मा म[illegible]कर्मा [illegible]तकर्मा कृतागमः ॥97॥
उद्भवः सुन्दर [illegible]न्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्कोभाज[illegible] [illegible]ृगी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥98॥

सुवर्ण बि[illegible] [illegible]ोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो [illegible]गर्तो महाभूतो महानिधिः ॥99॥
कुमुदः [illegible]ः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृता[illegible]ऽमृत वपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥100॥
सुलभः [illegible]ः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रो[illegible]रोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥101॥

स[illegible]प्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमू[illegible]ोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥102॥
[illegible]शः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
[illegible]ृतः स्वास्यः प्राऽवंशो वंशवर्धनः ॥103॥

[illegible]कथितो योगो योगीशः सर्वकामदः ।
[illegible] श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥104॥
[illegible] धुनुर्वेदो दण्डो यम दता दमः ।
[illegible]जतः सर्वसहो नियन्तानियमोऽयमः ॥105॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्यवान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥106॥
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुत भुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रवि लोचनः ॥107॥
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥108॥
सनात्सनातलतमः कपिलः कपिरप्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्ति भुक्स्वस्ति दक्षिणः ॥109
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरोकरः ॥110॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्य श्रवण कीर्तनः ॥111॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्न नाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥112॥
अनन्तरूपोऽनन्त श्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्त्रो गंभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥113॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरङ्गदः ।
जननो जन्मजन्मादिर्भीमो भीम पराक्रमः ॥114॥
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
अर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥115॥
प्रमाण प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥116॥
भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञरतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥117॥
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः ।
यज्ञात कृद्यज्ञगुह्य मन्न मन्नाद एव च ॥118॥
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥119॥
शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वागदाधरः ।
रथाङ्गपाविरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥120॥
इतीदं सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ।
इतीदं कीर्तिनीयस्य केशवस्य महात्मनः ॥121॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

य इदं शृणुयान्नित्यंयश्चापि परिकीर्तियेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानव ॥122॥
वेदान्तगो ब्राह्मण: स्यात्क्षत्रियो विजयीभवेत् ।
वैश्यो धन समृद्ध: स्याच्छूद: सुखमवाप्नुयात् ॥123॥
धर्मार्थी प्राप्नुयद्धिममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥124॥
भक्ति मान्य: सदोत्थाय शुचिस्तद्गत मानस: ।
सहस्र वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥125॥
यश: प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राध्यान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेय: प्राप्नोत्लुयत्तमम् ॥126॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्वलरूपगुणान्वित: ॥127॥
रोगार्तो मुच्येत रोगाद्वद्धो मुच्येत वन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्नु आपद: ॥128॥
दुर्गोव्यतितरत्याशु पुरुष: पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्ति समन्वित: ॥129॥
वासुदेवाश्रयो भर्त्यो वासुदेवपरायण: ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥130॥
न वासुदेव भक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्म मृत्यु जराव्याधिर्भयं नैवोपजायते ॥131॥
इमं स्तवमधीयान: श्रद्धा भक्ति समन्वित: ।
युज्येतात्मसुखशान्ति श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभि: ॥132॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मति: ।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥133॥
द्यौ: सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधि: ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मन: ॥134॥
ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥135॥
इन्द्रियाणि मनोबुद्धि: सत्त्वं तेजो बलंधृति: ।
वासुदेवात्म कान्याहु: क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥136॥
सर्वागमानामाचार: प्रथमं परिकल्पते ।
आचार प्रभावोधर्मोधर्मस्य प्रभुरच्युत: ॥137॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जगमाजङ्गम चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ।।138।।
योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शस्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ।।139।।
एकोविष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रील्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्व भुगव्ययः ।।140।।
इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रयः प्रातुं सुखानि च ।।141।।
विश्वेश्वरताजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ।।142।।

।। संकट नाशन विष्णुस्तोत्रम् ।।

नारद उवाच —

पुनर्दैत्यं समायान्तं दृष्ट्वा देवाः एवासवाः ।
भयप्रकम्पिताः सर्वे विष्णुं स्तोतुं प्रचक्रमुः ।।1।।

देवा ऊचुः

नमो मत्स्य-कूर्मादि-नाना स्वरूपैः
सदा भक्ताकार्योद्यतायार्ति हन्त्रे ।
विधात्रादि-सर्ग स्थितिध्वंसकर्त्रे
गदा-शङ्ख-पद्मारिहस्ताय तेऽस्तु ।।2।।
रमावल्लभायां सुराणां निहन्त्रे
भजङ्गारियानाय पीताम्बराय ।
मखादि-क्रिया पाककर्त्रे विकर्त्रे
शरण्याय तस्मै नताः स्मो नताः स्म ।।3।।
नमो दैत्य सन्तापिता मर्त्यदुःखा
चलध्वंसदम्भोलये विष्णवेते ।
भुजंगेश — तल्पेशयामार्कचन्द्र-
द्विनेत्राय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः ।।4।।

नारद उवाच

संङ्कष्टनाशनं नाम स्तोत्रमेतत् पठेन्नरः ।
स कदाचिन्न सङ्कष्टैः पीड्यते कृपया हरेः ।।5।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोते बच्चे को रोकना—

'ॐ नमो रत्नत्रयाय ॐ चलूठ्ठ चूजे स्वाहा।'

इस मन्त्र को रोते हुए बच्चे के कान में जपने से बच्चा चुप हो जाता है। वह रोता नहीं है।

मकड़ी का जहर—

'ॐ मातंगिनी नाम विद्या उग्रदंडा महाबला लूतानां लोह लिगाना यच्चं हलाहलं विषं गरुडो ज्ञापयति।'

इस मन्त्र के जाप से मकड़ी का जहर निकल जाता है।

'ॐ नमो भगवऊ पार्श्व चंद्राय पद्मावती सहिताय सर्व लूतानां सर्व लूतानां शिरं छिद छिद छिद भिद भिद मुंच मुच जा जा मुख दह दह पाचय पाचय हुँ फट स्वाहा।'

यह भी मकड़ी विप दूर करने का मन्त्र है।

फोड़ा ठीक होना—

'ॐ चंद्रहास खड्गेन छिद छिद भिद भिद हुं फट स्वाहा।'

इस मन्त्र से फोड़े को मन्त्रित करने से फोड़ा ठीक हो जाता है।

'ॐ हूं हां ह्रीं ह्रू हः महादुष्ट लूना, दुष्ट फोड़ी दुष्ट वृण ॐ हां ह्रीं सर्व नाशय नाशय पुलित खड्गेन छिदि छिदि भिदि भिदि हुं फट् स्वाहा।'

इस मन्त्र से 108 बार फोड़ा, फुंसी, व्रण, मकड़ी विष को मंत्रित करने से शान्त होते हैं।

'ॐ हठ होडि फोडि छिन्नं तल होडि फोडि छिन्नडं दिट्ठा होडि फोडि छिन्नं वाहोड़ि फोडि छिन्नडं सात ग्रह चऊ रासि फोडि हणवंत कइ खांडइ छिन्नडं जोहिरे फोडि वाय वुग होइ।'

कुंवारी कन्या से काते सूत में इस मन्त्र से गांठ 14 (चौदह) दें फिर गले में या हाथ में बांधें तो सभी प्रकार के फोड़े फुंसी इत्यादिक दूर होते हैं। तथा सब प्रकार की वायु नष्ट होती है।

वात रोग—

'पवणु पवणु पुत्र, वायु वायु पुत्र हणयंतु हणयंतु भणंइ निगवाय अंगज्ज भराइ।'

इस मन्त्र से सभी प्रकार के वात रोग दूर होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ॐ नील नील क्षीर वृक्ष कपिल पिंगल नारसिंह वायुस्स वेदनां नाशय नाशय फुट् ह्रीं स्वाहा।'

इस मन्त्र से भी सभी वात रोग दूर होते हैं।

लावण दूर होना—

'ॐ रक्ते विरक्ते रक्त वाते हुं फट् स्वाहा।'

इस मन्त्र से स्त्रियों की या पुरुषों की लावण पड़ जाती है वह दूर हो जाती है।

'ॐ महादेव आइ की दुव्ठि दिकि सर्व लावण छिंदि छिंदि भिदि भिदि जुलि जुलि स्वहा।'

यह भी लावण उतारने का मन्त्र है।

कान दर्द—

ॐ क्षां क्षं क्षं

इस मन्त्र से कान का दर्द दूर हो जाता है।

गर्भ गिरने को रोकना—

ॐ ह्रीं कल लोचने ल ल भी क्लीं प्लीं प्लीं अमुकस्य गर्भ स्तंभय स्तंभय क्लां क्लीं क्लूं ठः ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र को हल्दी के रस से भोजपत्र पर लिखकर एक मटके में लिखित भोजपत्र को डालकर चौरस्ते पर उस मटके को गाड़ देवे तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है। देहली का धोवन, तलवार का धोवन पीए तो गर्भ नहीं गिरता है। पंचांग कर्णवीरं पिबट छडडु 'तति।

ॐ चामुंडे एष कोस्थंयं भामि व्रज की लके न ठः ठः स्वाहा।'

काले डोरे को उल्टा बट कर इस मन्त्र को दो वार बोलकर गांठ डोरे में लगायें फिर कमर में बांधें तथा वह दिन ज्येष्ठा अथवा मूल नक्षत्र का हो तो गर्भ का गिरना रुक जाता है। 9 महिने समाप्त हो जाने पर इस डोरे को छोड़ देना चाहिए, तब ही बच्चा होगा। जब तक डोरा कमर में बंधा रहेगा तब तक प्रसूति नहीं होगी।

अपमृत्यु भय से रोक—

'ॐ नमो जलो सहिपत्तांणं

इस मन्त्र के नित्य जाप करने से अपमृत्यु भय नहीं रहता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपस्मार रोग बचाव—

'ॐ नमो जल्लो सहिपत्तांणं'

इस मन्त्र से शुद्ध नदी का जल 108 बार मंत्रित करके पीने से तीन दिन में ही अपस्मार रोग का नाश होता है।

हैज़ा—

ॐ नमो भगवते अरंटताणं नमो जिगाणं ह्रां ह्रों ह्रं ह्रों ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रं अ सि आ उ सा त्र्यौं त्र्यौं त्र्यौं त्र्यौं स्वाहा।'

इस मन्त्र के स्मरण करने से 'हैजा' रोग का स्तम्भन होता है।

पुत्र प्राप्ति—

'ॐ ह्रीं श्रीं सिद्ध वुद्ध माला अंविके मम सर्वां सिद्धि देहि देहि ह्रीं नमः।'

पुत्र की इच्छा रखने वालों को 108 बार नित्य जाप करना चाहिए।

प्रसव—

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं द्रां द्रीं द्रुं द्रः द्रावय द्रावय हुं फट् स्वाहा।'

इस मन्त्र से तेल और चावल मन्त्रित करके देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

वीर्य स्तंभन—

'ॐ शुकंकामाय स्वाहा।'

इस मन्त्र से कुंवारी कन्या द्वारा काते गये सूत को 21 बार अभिमंत्रित करें, फिर सात बार उस मन्त्र को पढ़कर उस सूत को बांधें तो शुक्र का अर्थात् वीर्य का स्तम्भन होता है।

घाव का भरना—

'सीता देलागउ धाउ फूकिउ भजउ होइ जाउ।'

इस मन्त्र से तेल को 7 बार मन्त्रित करके घाव पर लगाने से तथा 21 बार मन्त्र पढ़ कर घाव पर लगाने से (तेल) घाव भरने लगता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुत्ते के काटने पर—

'सोवन कंचोलउ राजादुधु पियइ घाउन अउघाइ भस्मांत होइ जाइ।'

कुत्ते के काटने पर इस मन्त्र से भस्म मंत्रित कर, लगाने से अच्छा हो जाता है।'

ज्वर—

'सीहु अकारणी पहुया घालिरे जंप जारे जरा लंकि लीजइ हणुया नोंउ हरसं करची अगन्या श्री महादेव भराडाची अगन्या देव गुरुची अगन्या जारे जरा लंकि।'

दस लड़े सूत में 10- गांठ लगावें 110 वार मन्त्र पढ़ें, फिर उस सूत को गले में या भुजा पर वांधें तो वेलान्तर ज्वर, एकान्तर ज्वर, द्वावान्तर ज्वर, त्र्यंहर ज्वर, चतुर्थ ज्वर नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार गुग्गुल मन्त्रित करके जलाने से भी ज्वर का नाश हो जाता है।

'ॐ चंड कपालिनी शेषान् ज्वरं वंध सइंल वंधवेला ज्वरं वंध विषम ज्वरं बंध महा ज्वरं बंध ठः ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र से कुसुम्वी रंग के डोरे में मन्त्र 21 वार पढ़ता हुआ 7 गांठ लगावे फिर गले में या हाथ में वांधे तो सभी प्रकार के ज्वरों का नाश हो जाता है।

स्तन पीड़ा—

'सप्त पातालु सप्त पाताल छइ वालु ॐ चालिरे चालु जइ लगि राम लापण के वाणु छीनि घातिय हिलउ।'

इस मन्त्र से जंगली लण्डे को राख और अक्षत से मन्त्रित कर देने से स्तन की पीड़ा ठीक हो जाती है।

चक्षु रोग—

'ॐ नमो भगवते आदित्याय सर सर आगच्छ आगच्छ इमं चक्षु रोगं नाशय नाशय स्वाहा।'

कुंवारी कन्या द्वारा काते गए सूत को लेकर 7 लड़ा कर लें, फिर मयूर शिखा को केशर में रंग कर उस डोरे से मयूर शिखा वांधें, फिर इस मन्त्र से 21 वार मन्त्रित करके कान में वांधने से चक्षुरोग का नाश हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीर्य स्तंभन—

'ॐ ज्येष्ठ शुक्रवारीणि स्वाहा'

इस मन्त्र से कुंवारी कन्या द्वारा काते गए सूत को सात लड़ा करके सात गांठ लगावें, फिर उस डोरे को कमर में बांधने से वीर्य का स्तम्भन होता है।

आकर्षण मन्त्र—

'ॐ नमो भगवते महामाये अजिते अपराजिते त्रैलोक्य माते विद्ये से सर्व भूत भयावेह माए माए अजिते वश्य कारिके भ्रम भ्रामिणि शोषिणि ध्रूवे कारिणे ललति नेत्रशनि मारणि प्रवाहणि रण हारिणि जए-विजय जंभनि खंगेश्वरी खगे प्रोखे हर हर विधून विधून वज्र हस्ते शोषय शोषयत्रिशून हस्ते पट्वंण कपाल धारिणि महापिशित मासंसिनि मानुषार्द्ध चर्म पावृत्त शरीर नर शिर भांला ग्रंथित धारिणी निश्रूभिनि हर हर प्राणलु मर्म छेदिनि सहस्त्र शीर्षे सहस्त्र वाहने नेत्रे हे हव हव हे हे ष ष ग ग धु धु छ छ जो जो ह्रीं ह्रीं त्रि त्रि ख ख हसंनी त्रैलोक्य विनाशिनि फट्र हे हे हुं हुं प्रं प्रुं हन हन माए भूत प्रसवे परम सिद्ध विद्ये हः हः हुं हुं फट् फट् स्वाहा।'

सूर्य ग्रहण अथवा चंद्र ग्रहण में उपवास करके इस मन्त्र का 108 वार जप करे तव मन्त्र सिद्ध होता है। फिर इस मन्त्र का 27 वार स्मरण मात्र करने से उच्चाधिकारी, मन्त्री, नर, नारी जो कोई भी हो सवका ही आकर्षण हो जाता है। सभी वस में हो जाते हैं। जिस किसी दुष्ट के नाम से जपे तो उसका अवश्य ही उच्चाटन होता है। रण में, राजकुल में, वाद-विवाद में इसका स्मरण करने से विजयश्री प्राप्त होती है। और पुष्पादिक मन्त्रित करके, जिसको भूत-प्रत-शाकिन्यादि लगा हो; उस पर डालने से भूतादिक प्रकट होते हैं। इस जाप से अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

भूतादिक नाश करना—

'ॐ मातंगाय प्रेत रूपाय विहंगमाय धून धून ग्रस ग्रस आकर्षय आकर्षय हूं फट् सिरि सूलं चंडा धर प्रचंड सुग्रीवो अज्ञापयति स्वाहा।'

११०
29951

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरसों लेकर इस मन्त्र से 108 वार ताड़ित करने से ग्रह भूत डाकिन्यादि शीघ्र दूर होते हैं। कनेर के फूल, धतूरे के फूल, अश्वगंध, अपामार्ग इन वस्तुओं की धूप बनाकर जलाने से भूत बाधा नष्ट होती है।

गंडादि दोष—

ग छ ह उ कृपाउ उरु छिदउ मुहुछिदउ पुंछु छिदउ छिदि छिदि भिदि भिदि त्रुटि त्रुटि जाहि जाहि निसंत्तानु।'

इस मन्त्र को 21 वार पढ़ता जाय और हाथ से झाड़ा देता जाय तो गंडदोष नष्ट हो जाता है।

ज्वर—

'ॐ पंचात्माय स्वाहा।'

इस मन्त्र से 21 वार चोटी मन्त्रित करके चोटी में गांठ लगावे तो ज्वर से छुटकारा मिलता है।

वशीकरण—

'ॐ अरे अरुणु मोहय मोहय देवदत्तं गम वश्यं कुरु स्वाहा'।

इस मन्त्र को कृष्ण पक्ष को चौदस की पाटे पर लिखकर लाल कनेर के फूलों से जप करे, 108 वार तो उत्तम वशीकरण होता है। यहां देवदत्त के स्थान पर जिसको वश में करना हो उसका नाम लें।

'ॐ नमो भगवती अप्रति चक्र जगत्सं मोहिनी जगदुन्मादिनी नम न मनोहरी हे हे आनंद परमानंदे परम निर्वाण कारिणी क्लीं कल्याण देवी ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।'

इस मन्त्र के सतत जपने से सौभाग्य वृद्धि, सर्व मन प्रियता व उत्तम वशीकरण होता है।

'ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं ठः ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र का पहले 30 हजार जाप करें, तव मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन रात्रि में वलि देकर नैवेद्य की ओर जप, फिर इस मन्त्र से वस्त्रांचल को 108 वार मन्त्रित करके गांठ देवे, फिर राजकुलादिक में जाये तो साधक जो कहे, वही मान्य होता है। यदि 1000 वार जाप नित्य करे तो सभी स्त्रियों का प्रिय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है। यदि किसी को वश में करना हो तो रोज 108 वार जप किया जाना चाहिए।

पीड़ा हरण—

'ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मभ कर्णे अवतर सत्यं कथय कनय अतीत अनागत वर्तमानं दर्शय दर्शय एह्ये एह्ये ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।'

लाल चंदन की एक पुतली बनावें। फिर उस पुतली के आगे एक पट्टे पर इस मन्त्र को लिखकर सुगन्धित पुष्पों से 10,000 वार जप करें तब यह मन्त्र सिद्ध होता है। शुद्ध होकर, सीधे कान को 7 वार इस मन्त्र से मन्त्रित करें या 108 वार अव्यग वस्त्रे: सप्पते तव शुभाशुभ स्वप्न में ज्ञात होता है या वचन से कहता है। शिव के लिग पर 24 वकार श्मशान के कोयले से लिखें फिर ज्वर ग्रसित रोगी को उस लिंग को दूध में धोकर पिलावें, तो ज्वर नष्ट हो जाता है।

घंटिका रोग—

ॐ द्रां द्रीं खीं खूं क्ष।

इस मन्त्र से भस्म मन्त्रित करके खाने से घंटिका रोग नष्ट होता है।

ज्वर नाश—

'ॐ सुग्रीवाय वानर राजाय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय स्वाहा।'

इस मन्त्र से सुपारी या फल मन्त्रित करके खिलाने से सभी प्रकार के ज्वरों का नाश हो जाता है।

'ॐ नमो भगवतो चंड पार्श्वाय भगवन एहि एहि यक्षं यक्षी राक्षसं राक्षसी भूतं भूती पिशाचं पिशाची कूष्मांडं कूष्मांडि नागं नागी क्षरं क्षरी अपस्मारं अपस्मारी प्रेतं प्रेती कुमारं कुमारी ब्रह्म राक्षसं स्कन्दं स्कंदी विशाखं विशाखी गांधर्वं गान्धर्वी उन्मादं उन्मादी काली महाकाली खेती महाखेती काव्यायिनी महाकाव्यायिनी भृंगीरिटी महा भृगीरिटी विनायको महाविनायकी चांमुडि महा चांमुडि सप्त मात्र की ताट की महा ताट की डाकिनी महा डाकिनी सप्त रोहिणी महासप्त रोहिणी सूर्य ग्रहं गृन्ह गृन्ह सोम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहं गृन्ह गृन्ह वन राज ग्रहं गृन्ह गृन्हं नागेन्द्र ग्रहं गृन्ह गृन्ह माहेश्वर ग्रहं गृन्ह गृन्ह नमोस्तुते भगवते पार्श्वनाथाय एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं विषम ज्वरं सांवत्सरि काद्धि मासिकं वातिकं पितिकं श्लेष्मिकं संनिपातिकं ज्येष्ठाया गृन्ह गृन्ह मुह मुह मुंच मुंच धम धम रंग रंग तिष्ठ तिष्ठ पच पच त्रिष्ठि त्रिष्ठि कय कय परु परु तरु तरु पूरय पूरय भगवते भो भो शिघु शिघु आगच्छ आगच्छ आवेश आवेश हन हन दह दह पच पच छिंद छिंद भिंद भिंद कुरु कुरु लघु लघु चल चल रिपु रिपु गंडाली चंडपुरी चंडपुरी अपस्मारति पर पुरी अपस्मारित पर पुरी धरि धरि करि करि कुरु कुरु भीन्तर पूर्ण भीन्तर पूर्ण कुंभ कुंभ भंज भंज र र र र रि रि रि रि रु रु रु रु हुं फट् सर्वक्षर नाशिनी काल मुखी नां वासुकीनां तक्षकीनां कपिलानां काल कीटानां अष्टादश वृश्चिकानां द्वादश सर्पकानां व्यंतर विपनाशिनी सर्व विप छेदनी सर्वरोग विनाशिनी हितंकरी यशस्करी सर्वलोक वशं-करी नमोस्तुते भगवते पार्श्वनाथाय तीर्थंकरेभ्या नमोनमः आज्ञा-पयति स्वाहा ।'

इस मन्त्र को पढ़ता जाय व झाड़ा देता जाय तो सभी प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

'ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय श्री कलिकुंडनाथाय सप्तफण चतुर्दशदंष्ट्रा करालाय धरणेंद्र पद्मावति सहिताय महाबल परा-क्रमाय अपराजित साशनाय अष्ट विद्या सहस्र परिवाराय सर्व-भूत वंशकराय वज्रमुष्टि चूर्णनाय अकाल मृत्यु नाशनाय संसार चक्र प्रमर्दनाय सर्व विष मोचनाय सर्व मुद्रा स्फोटनाय सर्व श्रूल रोगं नाशनाय काल दृष्ट मृतको पथापनाय सर्ववध मोचनाय अनेक मुद्राशत सहस्र कोटा कोटि स्फोटनाय वज्र शृंगोद्भेदनाय सुदर्शन चंद्र हास खड्ग नाशनाय सर्वात्ममन्त्र रक्षणाय सर्वार्थं काम साधनाय सर्व विष छेदनाय सर्वरोग नाशनाय एहि एहि महाबलि पद्मावति साधनी देवी एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक संनिपातिक सर्व ज्वरान् गंड पिटक विस्फोटिक श्रूल लूता ज्वाला गर्दभ अक्षि कुक्षि रोगाणां बाल ग्रह हन हन दह दह पच पच पाट्य पाट्य विध्वंसय विध्वंसय गृन्ह गृन्ह बंध बंध मोचरु मोचरु विष्ठ विष्ठ वेधय वेधय उच्चाट्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्चाट्य चल चल धम धम रंग रंग कंप कंप जल्प जल्प कुरु कुरु पूरय पूरय आवेशय कपिल धाति कुरु कुरु कपिल पिंगल लोचनाय कुरु भ्रामय भ्रामय शांतिकर शांतिकर शुभकर शुभकर प्रशांताय प्रशांताय ह्री धरणेन्द्राय अमृवर्षो ज्ञापयति हुं फट् स्वाहा । क्षि क्षां क्षं क्षः रः क्षि क्षां क्षं क्षः रः क्षि क्षां क्षं क्षः रः क्षि क्षां क्षं क्षः रः क्षि क्षां क्षं क्षः रः क्षि क्षां क्षं क्षः रः क्षि क्षां क्षं क्षः रः कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा ।'

इस मन्त्र से सर्व कार्य की सिद्धि होती है तथा सर्वरोग शान्त होते हैं ।

उपद्रव शान्ति—

'मुहि चंदप्पह ज्जहि थइ जिणुम थइ पारस वशु ईण इमु छ इं मुछकिय को ही लणह समुश्र ।'

'ॐ शांते शांति प्रदे जगज्जीव हित शान्ति करे ॐ ह्रीं भयं प्रशम प्रशम भगवति शांते मम शांति कुरु कुरु शिवं कुरु कुरु निरुपद्रवं कुरु कुरु ॐ ह्रो ह्रीं ह्रू ह्र शांते स्वाहा ।'

इन मन्त्रों को तीनों समय जपने से सभी प्रकार के उपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

ॐ ह्रीं क्लीं हुं श्री गजमुख यक्षराज आगच्छ मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा । ॐ ह्रां क्रों क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्री क्म्ल्वर्यूं हम्ल्वर्यूं भम्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं रम्ल्व्र्यूं श्म्ल्व्र्यूं धम्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं छम्ल्व्र्यूं खम्ल्व्र्यूं वम्ल्व्र्यूं डम्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी सर्व कार्याणि कुरु कुरु स्वाहा ।'

इस मन्त्र का नित्य स्मरण करने से सभी उपद्रव शान्त होते हैं ।

ॐ वीर वीर महावीर अजिते अपराजित अतुल वलपराक्रम त्रैलोक्य रण रंग मल्ल गजित भवारि मल्ल ॐ दुष्टं निग्रहं कुरु कुरु मूर्द्धानं मा क्रम्य सर्व दुष्ट ग्रह भूत पिशाच शाकिनी योगिनी रिपुयक्ष राक्षस गंधर्व नर किन्नर महोरग दुष्ट व्याल गोत्रप क्षेत्रप दुष्ट सत्व ग्रहेनि ग्रहाण निग्रन्हीया निग्रन्हीया ॐ चुरु चुरु मुरु मुरु दह दह पच पच मर्दय मर्दय त्राड्य त्राड्य सर्व दुष्ट ग्रहं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ अर्हंद्भगवद्वीरो अतुल बल वीरो निन्हियादत्र स्वाहा ।'

इस मन्त्र से अक्षत 21 बार मन्त्रित कर घर में डालने से घर में किसी भी प्रकार का उपद्रव नहीं होता है ।

शत्रु नाश—

'ॐ ह्रीं ल्रीं क्ष्रीं म्रीं श्रीं हे हे हर हर अमुकं (नाम) महाभूतेन गृन्हापय गृन्हापय लय लय शीघ्रं भक्ष भक्ष खाहि खाहि हुं फटो ।'

मसान (श्मशान) के कपड़े पर खून और विष से इस मंत्र को शत्रु के नाम सहित लिख कर उस कपड़े को चौराहे पर गाड़ दें तो शत्रु भूत बाधा से ग्रसित हो जाता है और उसको हटाने में कोई भी समर्थ नहीं होता है । जब गड़ा हुआ कपड़ा निकाल दिया जाय तब ही वह अच्छा होता है ।

प्रेत ज्वर नाश—

'हुं घटो ॐ रुद्राय स्वाहा ।'

रुद्राक्ष, गुग्गल, भूतकेशी, हिंगु बिल्ली का भिष्टा, मोरपंख गो शृंग, मुलट्ठी, सरसों, बच इन सब चीजों को एकत्र करें फिर उक्त मंत्र पढ़ता जाय और इन सब चीजों की धूप दिया जाय तो प्रेत ज्वर का नाश होता है ।

बवासीर—

'ॐ लुंच मुंच स्वाहा ।'

इस मत्र से पानी को मन्त्रित कर (21 बार) रोगी को पिलावें तो बवासीर रोग शान्त होता है । इस मन्त्र को जो पढ़ता है व सुनता है उसे भी बवासीर रोग नहीं होता ।

'ॐ कालि महाकालि अवतरि अवतरि स्वाहा लुंचि मुंचि स्वाहा ।'

प्रात: इस मन्त्र को 21 बार पढ़ कर 7 दिन तक पीयें तो बवासीर की पीड़ा नहीं रहती । इसे नित्य भी पढ़ना उत्तम रहता है ।

फोड़ा—

'अमी कऊ कुंडु तहि न्हाइ देव्या हाथि लउडातुपरि जविड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेलु छीनीवराही पीड करइ फाडइ फूटइ जइ फुसइ ई पीड़ नहीं जानही कइ खाजहि गंड भमरइ नवड सोषड प्रचंडु गाजइ चारि-मास मसाणि जागइ फाड़इ फूटइ धावि लागइ काली पन्नाली काली चउदसि उपन्नी महादेव कइ मुहिं पर्जति नीकली फाट फूटइ जइ फुसइ महादेव पूज पायल इधू धुरी वुचइ वांनरी काली वूचइ कूकरी जाफोड़ी वाउँ वियालु होउ जउल गिखड़ी कादव इन छीपई इन छीपई सन होडी छिन्नउ वाय होडि छिनउ हाउ होडी छिन्नउ गुप्त होडी छिन्नउ पाठ उछीन उघर वर उ छी न उ ऊग मुछी नउ ग्रह चउरासी नव फोडि छिनि छीनि हणु मन्त कइ खांडई महादेव कइ त्रिशुलि हणु ब्रह्म राम सकं संघि वाय जिणीकी जाय नव उचेडउ महादेव कउ कांडुलय उग उविसू लल्ल कारइ सीं गिय उत्रथणागु आकु तेलु धतुर उइशु धरि मिहशु धरि पिंगलि माइदिट्ठउ दीट्ठि पराय ऊर्टकारी गयछ पुक्कारी ब्रह्म-पुतु काजला विसुजोर का दवा पुक्कार हिटठु ठीवाइ आछइ दुठु हंतुन जाणउ मनदा पूछिका मखदे लारु खाइ भारउ खाइ ब्रह्म खाइ महादेउ खाइ तेतीस क्रोडि देवता खाइजा फोडि वाउ वियालु होइ जउ लगि खडीका ध्वइन छीपइ।'

इस मन्त्र से ३७ वार तैल मन्त्रित करके फोड़े पर लगाने से दुष्ट फोड़ा नष्ट हो जाता है।

चिन्ता मुक्ति—

ॐ ह्रीं कृष्ण वासेस शत वदने शत सहस्र सिंह कोटि वाहने पर विद्या उद्यादने सर्व दुष्ट निकंदने सर्व दुष्ट भक्षण अपराजिते प्रत्यंगिरे महावले शत्रु क्षेत्र स्वाहा।'

इस महामन्त्र का नित्य ही १०८ बार मन्त्र जप करने से सर्व दुष्टादिक का उपशम होता है और सर्व मन चिंतित कार्य की सिद्धि होती है।

विष उतारना—

'ॐ नमो इंद्र भूद गण हरस्स सव्व लद्धि करस्स मम ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र को नित्य लाभ के लिए सदा स्मरण करना ही चाहिए। बकरे का मूत्र, हिंगु वच इनको पानी के साथ पीसकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिलाने से यदि वासुकी सर्प भी काट ले तो जातक विषहीन हो जाता है।

'ॐ माले शाले हर विषये वेगं हाहासरी अंवेलं चे सवेकि पोत गेंद्र: भारुद्रं अचंट: म: हुंहुं लस: स्वाहा।'

इस मन्त्र के जाप से भी विष उतर जाता है।

'ॐ अकलु स्वाहा।'

इस मन्त्र से शंख को 7 बार मंत्रित करके सर्प खाये हुए मनुष्य के कान में शंख को बजाने से तत्क्षण विष उतर जाता है।

'ॐ चलि चालिनी नीयतेज।'

इस मन्त्र का 7 बार जप कर हाथ को सर्प खाए व्यक्ति के ऊपर से फिर फिर पानी को माथे पर डालने से जहर उतर जाता है।

'ॐ चंद्रिनी चंद्रमालिनी यते ज।'

इस मन्त्र से पानी को 5 बार अभिमन्त्रित करके सर्प दृष्टा को स्नान कराने से 100 योजन चला जाता है तथा काटने पर विष उतर जाता है।

'अर्ह घोपस विज्जाए मंत्तेंहि जवंति सत्तवाराउ पच्छापि वेति तोयं पटंति अह घोणसा विज्जा मंतीयं ॐ नमो श्री घोण से हरे हरे वरे वरे तरे तरे व: व: वल वल लां लां रां रां रीं रीं रूं रूं रौं रौं रस रस क्षूं क्षूं ह्रीं ह्रीं ह्रूं हां भगवती श्री घोण से घ: घ: घ: घ: स: ह: ह: ह: ह: ह: व: व: व: व: व: ढ़ ढ़ ढ़ ढ़ ढ़ ठ: ठ: ठ: ठ: ठ: ग: ग: ग: ग: ग: वर विहंगम नुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौ क्ष्म: क्ष्मां री शोष य य ठ: ठ: ठ: श्री घोण से स्वाहा।'

इस मन्त्र के जाप से सर्व कार्य की सिद्धि होती है। समस्त प्रकार के विप दूर होते हैं। सभी प्रकार के रोग दूर होते हैं।

वशीकरण—

'ॐ ब्रह्म कुष्यि के दुर्जन मल मल मुखी स्वाहा।'

इस मन्त्र से 21 बार चंदन मंत्रित करके उल्टा तिलक करे तो संसार को वशीभूत करने वाला होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ॐ जंभे स्तंभे मोहे अंबे सर्वं शत्रु वशं करि स्वाहा।'

इस मन्त्र को पहले 100 माला जप करके सिद्ध कर लें फिर जिसके नाम पर 108 बार जल मंत्रित करके 3 चुल्लू पानी छींटे और तीन चुल्लु पानी पिलाये तो वशीभूत हो जाता है।

भूतादिक नाश—

'ॐ ह्रीं सर्व कार्य प्रसाधिके भट्टारिके सव्वन्नु दयणर तस्य सम सव्वाऊ रिद्धिऊ सं पज्जंतु ह्रां ह्रूं क्रौं नमः सर्वार्थ साधिनी सौभाग्य मुद्रया स्म ॐ नमो भगवती यामये महा रौद्र काल जिह्वे चल चल भर भर धर धर क्रां क्रा क्रीं ब्रीं हुं हुं य मालेनी हर हर ज्वीं ख्वीं हुं फट् स्वाहा।'

इस मन्त्र के जाप से भूतादिक नष्ट होते हैं। 108 बार नित्य जपना आवश्यक है।

जहर—

'ह्रीं ह्रूं हः।'

इस मन्त्र से 108 बार भाड़ा दे तो किसी के द्वारा खिलाया जहर दूर हो जाता है।

वशीकरण—

'ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं चमुंड चंडालिनी अमुका मम नामेण आलिगय आलिगय पूवय पूवय भग संचय संचय ॐ क्रों ह्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वं फट् फट् स्वाहा।'

रात्रि को सोते समय इस मन्त्र को 108 बार जपना चाहिए फिर पानी को 21 बार मन्त्रित करके पीना चाहिए। सोते समय इस प्रकार 29 दिन तक करे। इस मन्त्र का जाप शनिवार से प्रारम्भ किया जाना चाहिए। जिस स्त्री के नाम से जाप किया जायेगा, वह अवश्य वश में होगी।

'ॐ उच्छिष्ट चांडालिनी देवी अमुकी हृदयं प्रविश्य मम हृदये प्रवेशय हन हन देहि देहि पच पच हुं फट् स्वाहा।'

शनिवार से रविवार तक 7 दिन इस मन्त्र को शौच पेशाब करने बैठते समय 21 बार जपे तो वांछित स्त्री वश में होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो उयणी मोहिनी दोय वही नड़ी चालोकंत वन माही जान जलंती आगी बुझा वीदों जल मोही आकाश मोही पाताल मोही पाणि की पणिहारी मोही वाट घाट मोही आवता जाता मोही \ सिंहासन बैठो राजा मोही गोखे बैठी रानी मोही चौसठ जोगिनी मोही एता न मौहै तो कालिका माता को दूध हराम करि हणु मंत नी वाचा फुरै गुरु की शक्ति हमरी भक्ति फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।'

रविवार के दिन इस मन्त्र को 108 बार नग्न होकर जपे, पान, फूल, सिंदूर, गुग्गल इन चीजों से 7 बार होम करे। जिसको वश में करना हो उसके आगे वही पूजा में का सिंदूर को 7 बार मंत्रित करके नीचा तिलक अपने माथे पर करे। जिसके नाम से सिंदूर मन्त्रित करके तिलक लगाया हो वह वश में होता है। यदि वशीकरण को छोड़ना चाहे तो पूर्वोक्त क्रिया करके पूजा में का सिंदूर से उल्टा तिलक करें।

'ॐ ह्रीं रक्त चामुण्डे कुरु कुरु अमुक में वश्य मे वश्य मानय स्वाहा।'

लाल कनेर के फूल, लाल राई, कड़ुवा तेल का होम करे व दस हजार जाप करे तो अवश्य वशीकरण होगा।

'ॐ नमो वश्य मुखीराज मुखी अमुकं मे वश्यमानय स्वाहा।'

प्रातः उठकर मुंह धोते समय पानी को 7 बार मंत्रित करके मुंह धोने से जिसके नाम से जपे वश में होता है।

'ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणी अमुक में वश्य मानय स्वाहा।'

इस मन्त्र को भोजन करते समय एक-एक ग्रास के साथ 7 बार पढ़ता जाय और खाता जाय तो 5-7 ग्रास में ही वशीकरण होता है। अमुक की जगह जिसको वश में करना हो, उसका नाम लें।

'ॐ जल कंपे जलधर कंपे सो पुत्र सौ चंद्रिका कंपै राजा रूठो कहा करे सिंघासन छाड़ि वैठे जब लगई चंदन सिर चडाउं तव गीत्र भुवन पांव पडाउं ह्रीं फट् स्वाहा।'

१०८ बार चंदन को मंत्रित करके तिलक लगाने से सभी जन वश में होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नरसिंह चेट की ह्रां ह्रीं दृष्ट्या प्रत्यक्ष अमुकी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र को रात्रि में 108 बार जपने से स्त्री शीघ्र ही वश में होती है।

'ॐ नमो राई रावै धनि आधावे खारी नोन चटपटी लावे मिरचै मारि दुश्मनै जलावे अमुक मेरे पांव पड़ता आवै वैठा होय तो उठावै सूता होय तो मार जगावै लट गहिं माटी मार मेरे पायें पायें तले आनि छाल दषों हनमंत वीर तेरी आज्ञा फुरै ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।'

राई, धनिया, नमक, मिर्च इन चारों को मिलाकर इस मन्त्र से 108 बार अग्नि में होम करे तो इच्छित व्यक्ति आकर्षित होता है।

'ॐ जु सः अमुक में वश्य मानय सः जु ॐ।'

इस मन्त्र का एक लाख बार जप करने से वशीकरण होता है।

'ॐ जुं सः अमुक आकर्पय आकर्षय सः जुं ॐ।'

इसका एक लाख मन्त्र जाप करने से आकर्षण होता है।

'ॐ जु सः अमुकी आकर्पय आकर्षय सः ज ॐ।'

इस मन्त्र का 1 लाख जप करने से स्त्री का आकर्षण होता है। पुरुष के लिए करे तो पुरुष भी आकर्षित होता है।

'ॐ जु नः अमुक स्तंभय स्तमय ठः ठः सः जु ॐ।'

इसका 1 लाख जाप करने से स्तंभन होता है।

'ॐ मोहश्वरी नमः।'

इस मन्त्र से बेर की 4 अंगुल लकड़ी 1 हजार बार मंत्रित करके जिसके घर में डाले तो सारा परिवार वशीभूत हो जाता है।

'ॐ ह्रीं ह्रूं जं जां जि जीं जुं जूं जें जैं जों जौं जं जः अमुकं ठः ठः।'

पीपल की लकड़ी पांच अंगुल 1 हजार बार मंत्रित करके अपने घर में गाड़ देने से वशीकरण होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपद्रव शान्त हो—

'ॐ भं भां भिं भीं भुं भूं भें भैं भों भौं भं भः अमुकं ठः ठः ।'

शमी की लकड़ी की कील 11 अंगुल की इस मन्त्र से 1000 वार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दी जाये उसके घर में भय राक्षस, भूत, कृतोपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

'ॐ प्रचंड्र ह्रीं ह्रीं फट् ठः ठः ।'

इस मन्त्र से मनुष्य की हड्डी 7 अंगुल की 1 हजार वार मंत्रित करके जिसके घर में गाड़े उसके घर में उत्पात होता है । निकाल देने पर शांति हो जाती है ।

आकर्पण—

'ॐ नमो कामेश्वरीय गद गद मद उन्माद अमुकी ह्रीं ह्रः स्वाहा ।'

इस मन्त्र का 20 हजार जप करे फिर 1/10 दशांश हवन करें । जिस स्त्री का नाम ले जाप करे वह स्त्री वशीभूत होती है ।

'ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं परमेश्वरी स्वाहा ।'

इस मन्त्र का एक लाख वार जाप करने से पुरुष वश में होता है ।

'ॐ आं ह्रीं क्रो एहि एहि परमेश्वरी स्वाहा ।'

लाल वस्त्र पहिन कर 1 लाख जाप करने से पुरुष वश में होता है ।

'ॐ ह्रीं आं ह्रीं स्वाहा ।'

लाल कपड़े पहिन कर कांख में कुंकुम लगाना, लाल रंग का फूल धर माला पहिन कर एकान्त निर्जन वन में 1 लाख जप से स्त्री का आकर्षण होता है ।

शत्रु नाश—

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां ह्रा ॐ ह्रू ह्रः अमुकं हन हन खंडेन फुट स्वाहा ।'

गोवर को जमीन पर गिरने से पूर्व हाथ में लें, फिर उस गोवर की प्रतिमा बना लें (शत्रु की) । फिर श्मशान में जाकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात्रि में 1 हजार मन्त्र का जप करें। जप करके उस प्रतिमा का जो जो अंग छेदन करे उसी अंग का छेदन शत्रु का हो जाता है। विधि में कमी रह जाने पर अपना ही नाश हो जाता है अतः सावधानी रखें। गोबर लेते समय भी मंत्र जपें।

'ॐ हूं क्षुं ह्रीं अमुकं ठंठः।'

विष रक्त, से लोहे के त्रिशूल को लिप्त करके इस मन्त्र का एक हजार बार जप कर त्रिशूल को मन्त्रित करे। फिर जमीन में गाड़ देने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

'ॐ हूं हूं सं सं अमुकं फट् स्वाहा।'

यह मन्त्र एक हजार जाप से सिद्ध होता है। तब खैर की लकड़ी के 1 हजार टुकड़े विष व रक्त से लिप्त कर मंत्र पूर्वक अग्नि में होम करे तो शत्रु का नाश हो जाता है।

यश लाभ—

'ॐ ऐं ह्रां ह्रीं एवं मऐ अभि शुआवि हुयर यमला पहीण जर मरणा चउव्विसंपि जिणवस तित्थयरा में पसीयंतु स्वाहा।'

इस मंत्र का साढ़े बारह हजार दीप धूप विधान पूर्वक जप करने से सभी प्रकार के वाद-विवाद मिटते हैं। यश की प्राप्ति होती है। सभी कार्यों में विजय प्राप्त होती है। शत्रु स्वयं शान्त हो जाते हैं।

रोग नाश—

'ॐ आं अंबराय कित्तिय वंदिय महिया जे लोगस्य उत्तमा सिद्धा आरोग्ग बोहिलाभं समाहि वर मुत्तमं दिन्तु स्वाहा।'

इस मन्त्र का स्मरण मनुष्य जब रोगी हो जाय, किसी भी प्रकार से रोग ठीक नहीं होता हो, दिनोंदिन वेदना बढ़ती चली जा रही हो तब जाप करे अथवा दूसरा व्यक्ति रोगी मनुष्य को सुनावे तो आयुष्य यदि शेष है तो शान्ति मिलती है। आयु ही यदि समाप्त हो गई है तो मृत्यु सरल होती है तथा सद्गति मिलती है।

प्रदर रोग—

'ॐ चंडिनि चले चले चित्ते चपले चपल चितेरेतः स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः स्वाहा।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3 हजार जाप इस मन्त्र का दीप धूप विधान पूर्वक जपने से सिद्ध होता है। फिर इस मन्त्र से 7 बार शक्कर मंत्रित कर योनि में रखने से स्त्रियों का प्रदर रोग शान्त होता है।

चेचक—

'ॐ ह्रीं त्रिशुलिनी प्रेत कपालस्तां म्रमुंड मुक्तावलि वद्ध कंठां कृतान्त हारां रुधिरौघं संप्लुतां तामेव रौद्रीं शरणं प्रपद्यें अमुकं विस्फोटक भया द्रक्ष द्रक्ष स्वाहा।'

यह मन्त्र केशर, कर्पूर, गोरोचन से लिखकर भुजा में बांधने से शीतला का दोष दूर हो जाता है।

पीड़ा—

'ॐ कालि महाकालि अवतरि अवतरि स्वाहा मुंचि स्वाहा।'

21 बार रोज स्मरण करने से पीड़ा दूर हो जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तोत्र

संकट नाशक गजेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र भागवत महापुराण के अष्टम स्कन्ध के तृतीय अध्याय में वर्णित है। इसकी कथा लोकविदित है। एक गजराज अपने परिवार सहित एक सरोवर के पास आया। वह इतना शक्तिशाली था कि वन के सारे पशु उससे भयभीत हुए भागते थे। गजराज शक्ति के मद में मतवाला होकर सरोवर में क्रीड़ा करने लगा। वह अपने बच्चों और हथिनियों को भी नहलाने और पानी पिलाने लगा। इतने में एक बलवान ग्राह ने गजराज का पैर पकड़ लिया। अपने पैर को छुड़ाने के लिए गजराज ने अपना शक्ति भर प्रयत्न किया परन्तु अनेकों प्रकार के उपायों को अपनाने पर भी वह सफल न हो सका। परिवार का कोई भी सदस्य सहायता न दे सका। काफी समय व्यतीत होने पर भी कोई परिणाम न निकला। कभी ग्राह गजराज को खींचकर पानी में ले जाता तो कभी गजराज ग्राह को ऊपर खींच लाता। जब गजराज को यह अनुभव हुआ कि वह अपनी शक्ति से ग्राह से अपने को छुड़ाने में असमर्थ है तो उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि इस ग्राह रूपी पाश से छुड़ाने में केवल भगवान विष्णु ही समर्थ हैं। उसने श्री हरि की आर्त्त-भाव से स्तुति करनी आरम्भ की। गजेन्द्र की स्तुति (प्रार्थना) पर भगवान आये और उन्होंने ग्राह का मुख सुदर्शन चक्र से काट दिया।

इसका भाव यह है कि जब तक व्यक्ति अपनी भौतिक शक्तियों पर निर्भर करता है और उनके मद में चूर रहता है, वह विपत्तियों से निवृत्त नहीं हो सकता। इसके विपरीत जब वह अपने को भगवान को समर्पित कर देता है तब भगवान उसको सभी संकटों से छुड़ा लेते हैं। अतः इस 'गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र' का जो भी साधक आर्त भाव से पाठ करता है, उसके सारे संकट दूर हो जाते हैं, वह ऋणों से मुक्त हो जाता है, उसके दुःस्वप्नों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाश हो जाता है। सार यह है कि इससे किसी भी समस्या का समाधान किया जा सकता है।

उत्तम साधकों में प्रातःस्मरणीय पं० मदनमोहनजी मालवीय के अनुसार उनका अनुभव उल्लेखनीय है। वे एक बार गांधीजी के साथ लन्दन की गोलमेज कोन्फ्रेंस में सम्मिलित हुए थे। गांधीजी के समक्ष ऐसी समस्या उत्पन्न हो गई कि जिसका कुछ भी समाधान नहीं हो पा रहा था। गांधीजी की स्वीकृति से मालवीयजी एकान्त में जाकर 'गजेन्द्र स्तोत्र' का पाठ करने लगे। तीन पाठ समाप्त होने पर उनके मस्तिष्क में एक सुझाव आया जिससे सारी उलझन सुलझ गई।

इसी प्रकार एक बार दिल्ली में कांग्रेस की कार्यकारिणी के अधिवेशन में मतभेदों ने इतना उग्र रूप धारण कर लिया कि कांग्रेस के टूटने का भय उत्पन्न हो रहा था। किसी प्रकार का समाधान नहीं हो पा रहा था। दोपहर के भोजन के समय मालवीयजी ने 'गजेन्द्र स्तोत्र' का आर्त्त-भाव से पाठ किया। उनके मस्तिष्क में एक सुझाव आया जिसको सभी ने स्वीकार कर लिया और कांग्रेस टूटने से बच गई। मालवीयजी ने इसे ऋण मुक्ति के लिए भी उपयोगी स्तोत्र माना है।

समस्याओं के समाधान के लिए जो भी साधक आर्त्त-भाव से इसका पाठ करता है, अनुकूल परिणाम ही निकलते हैं। स्तोत्र इस प्रकार है :—

श्री शुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्धया समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥1॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायदिविजाय परेशायाभिधीमहि ॥2॥
यस्मिन्निदं यतश्चेद येनेदं य इद स्वयम्।
यो स्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयंभुवम् ॥3॥
यः स्वात्मनीद निजमाययार्पितं क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलो वतु मां परात्पर ॥4॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालेन पंचत्वमितेषु कृतस्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतेषु ।
तमस्तदा सीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारे भिविराजतेविभुः ॥5॥
न यस्य देवा ऋषयः पद विदुर्जन्तुः पुनः को हैति गन्तुमीरितुम् ।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥6॥
दिदृक्षवा यस्व पदं सुमंगल विमुक्तसंगा मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥7॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायता तान्यनुकाल मृच्छति ॥8॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणे नन्तशक्तये ।
अरूपमयोरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥9॥
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदुराय मन श्चेतसामपि ॥10॥
सत्वेत प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥11॥
नमः शान्ताय घोराय मूढ़ाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानधनाय च ॥12॥
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥13॥
सर्वेन्द्रयगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
अस्ताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥14॥
नमो नमस्ते खिलकारणाय निष्कारणायाद्भुकोरणाय ।
सर्वायमाम्नायमहाणवाय नमो पवर्गाय परायणाय ॥15॥
गुणारणिच्छन्न चिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयमप्रकाशाय नमस्करोमि ॥16॥
माहक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमो ललाय ।
स्वाशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत-
प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥17॥
आत्मात्मजाप्तगृहवितजनेषु सक्तै-
र्दुष्प्रापणाय गुणसंग विवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥18॥
यं धर्मकामार्थं विमुक्तिकाम भजनत इष्टां गरिमापनुवन्ति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Digitization by eGangotri

किं त्वाशिषां रात्यपि देहमव्ययं करोतु मे दभ्रदयो विमोक्षणम् ॥ 19॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं वांछन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमंगलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥20॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥21॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥22॥
यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो
निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो,
बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥23॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयताशेषः ॥24॥
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥25॥
सो हं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववदसन् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतो स्मि परं पदम् ॥26॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नमो स्म्यहम् ॥27॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥28॥
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितो स्म्यहम् ॥29॥

श्री शुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं,
ब्रह्मादयो विविधलिंगभिदाभिमानाः,
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्,
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥30॥
तं तद्वदार्त मुपलक्ष्य जगन्निवासः,
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान-
श्चक्रायुधो भ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥31॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सो न्तस्सर स्युरूबलेन गृहीत आर्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख कृच्छो-
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छो-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥32॥
तं वीक्ष्य पांडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशुः सरसः कृपयोज्हार ।
ग्राहाद् विपाटित मुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुश्रवदुस्त्रियाणाम् ॥33॥

राम रक्षा स्तोत्र

जिन-जिन साधकों ने 'राम रक्षा स्तोत्र' सिद्ध किया है और स्वयं उसके प्रभाव को देखा है, उनका कहना है कि इस स्तोत्र के हर अक्षर में शक्ति के स्रोत भरे पड़े है। यह एक अमोघ अस्त्र है। यह एक चमत्कारिक रक्षा कवच है। पेटेन्ट दवाई है यह रक्षा की। नौकरी छूट जाने, रोगग्रस्त होने, किसी आकस्मिक विपत्ति में पड़ने, चिन्ताग्रस्त होने पर, ऋण भार से दब जाने, घरेलू समस्याओं से उलझ जाने, संकटकालीन परिस्थिति उत्पन्न होने पर यह राम बाण जैसा काम करता है। इतना ही नहीं चमत्कारिक ढंग से इन समस्याओं का समाधान भी करता है। इसके प्रयोग से अनेकों को लाभ पहुंचा है, पहुंच रहा है तथा पहुंचता रहेगा। अनेक बुद्धिजीवियों ने इसके प्रभाव को देखा है। जिसने भी इसका पाठ किया, अन्धविश्वासी बन कर नहीं अपितु जागरूक होकर पूर्ण निष्ठा व विश्वास के साथ किया है। वे शब्द-ध्वनियों में अद्भुत चमत्कार देखते हैं।

स्व इष्टदेव पर श्रद्धा और विश्वास करके साधनारत रहना तो भारतीय साधकों का सहज-स्वाभाविक स्वभाव है। परन्तु केवलमात्र विश्वास ही तो साधक को अन्तिम लक्ष्य तक नहीं पहुंचाता, प्रयोग किए जाने वाली सामग्री में भी शक्ति होनी चाहिए। आधुनिक विज्ञान ने भी अब तो यह सिद्ध कर दिया है कि शब्द में आश्चर्यजनक शक्ति होती है। रोग-निवारण की कठिन से कठिनतम समस्याओं का समाधान भी अब इसी शक्ति के माध्यम से किया जाने लगा है। इस शक्ति ने औद्योगिक क्षेत्र में भी एक क्रान्ति सी मचा दी है। बड़ी-बड़ी मोटी इस्पात की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चादरों को काटने, शहर की आवाज से शहर के लिए बिजली उत्पन्न कर लेने जैसे बड़े-बड़े काम इससे होने लगे हैं। अभी तक 'एक्सरे' को ही ऐसा सूक्ष्म यन्त्र माना जाता था जो शरीर के आन्तरिक क्षेत्र के फोटो लेकर रोग की जानकारी देता था परन्तु इससे पूर्ण जानकारी मिलना संभव नहीं होता था। शब्द शक्ति ने इसे सरल कर दिया है। अब यह कार्य 'अल्ट्रा साउण्ड' द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है। यह ऐसी ध्वनि है जिसे स्थूल कानों से सुना जाना संभव नहीं है।

'राम रक्षा स्तोत्र' के श्लोकों का गठन जिस चमत्कारिक ढंग से हो गया है, उससे ही लाभ होता है। इसके ध्वनि कम्पन्न वायु-मण्डल में शान्ति, पुष्टि, शक्ति व आरोग्य की लहरें उत्पन्न करते हैं, और रोगी के गुप्त मन को प्रभावित करते हैं। और वहां स्थित मानसिक चिन्ता, रोग, शोक, घबराहट, निराशा के विचार नष्ट होते हैं और उसके स्थान पर मानसिक शक्ति की वृद्धि होती है और आत्मबल बढ़ता है। इसी परिवर्तन से रोग निवारण में सहायता मिलती है। जिस अटूट श्रद्धा और विश्वास के साथ स्तोत्र का पाठ किया जायेगा, उतनी तीव्रता से इच्छित लक्ष्य की पूर्ति होती है। इस अद्‌भुत प्रभाव का आधार स्पष्ट रूप से मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो चमत्कार के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

इसके प्रयोग से पूर्व इसको सिद्ध कर लिया जाना चाहिए। आश्विन शुक्ल पक्ष या चैत्र शुक्ल पक्ष की नवरात्रियों में इसकी सिद्धि का विधान है। तब नौ दिनों तक निरन्तर इसकी साधना करनी पड़ती है और अनुष्ठान के सभी नियमों का पालन करना पड़ता है। इन दिनों प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठ जाना चाहिए। स्नानादि से निवृत्त होकर धुले हुए शुद्ध वस्त्रों को धारण करना चाहिए। आसन कुश का होना चाहिए ताकि साधना द्वारा उपार्जित शक्ति का पृथ्वीकरण न हो जाये। अपने सामने चौकी पर वस्त्र बिछाकर भगवान राम का सुन्दर चित्र प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए। यदि वह चित्र आशीर्वाद की मुद्रा में हो तो सर्वोत्तम है। नौ दिन तक निराहार रहकर केवल जल ग्रहण करके भी साधना की जा सकती है। इतना न हो सके तो दूध व फल पर रहा जा सकता है। इतना भी संभव न हो तो एक वक्त भोजन व एक

Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समय दूध-फल लिया जा सकता है। अस्वाद व्रत का पालन किया जाय तो उत्तम है। भूमि या तख्त पर शयन करना चाहिए। चमड़े के जूतों का 9 दिन तक प्रयोग न करें। सुखासन पर बैठें। भगवान राम के रुचिकर रूप का एकाग्रतापूर्वक ध्यान करके स्तोत्र का पाठ आरंभ करना चाहिए। राम रक्षा स्तोत्र के 11 पाठ नित्य किए जायें तो इसकी साधना की पूर्णता मानी जाती है। यदि इतना संभव न हो तो 7 पाठ तो कम से कम करना ही चाहिए। प्रयोग में पूरा पाठ तो किया ही जाना चाहिए। यदि समय का अभाव हो और सुविधा न हो तो आरम्भ से 'रामाय राम भद्राय' इस 26वें श्लोक तक भी पाठ किया जा सकता है। विपत्ति, रोग, चिन्ताओं से सदैव मुक्ति व सुरक्षित रहने के लिए नित्य प्रति एक पाठ करना चाहिए। यदि अपना उपचार अभीष्ट हो तो स्तोत्र की सिद्धि के बाद इसका प्रयोग करना चाहिए और भावना करनी चाहिए कि मैं चिन्ता भार से मुक्त हो गया हूं। मैं पूर्ण स्वस्थ हूं मुझे कोई चिन्ता नहीं है। मेरे मन में विपत्तियों से संघर्ष करने की पूरी-पूरी शक्ति है। अब आसुरी शक्तियों को मुझ पर आक्रमण करने का साहस नहीं हो सकता। यह भावना जितनी सशक्त होगी, उतना ही अधिक लाभ होगा।

राम रक्षा स्तोत्र

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रतिस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातक नाशनम् ॥1॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकी लक्ष्मणोपेतं जटा मुकुट मण्डितम् ॥2॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तं चरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्यातुभाविर्भूतमजं विभुम् ॥3॥
राम रक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भाल दशरथात्मजः ॥4॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥5॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेश कार्मुकः ॥6॥
करौ सीतापति पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बुवदाश्रयः ॥7॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरुरघूत्तमः पातु रक्षः कुलविनाशकृत् ॥8॥
जानुनी सेतु कृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषण श्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥9॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥10॥
पाताल भूतल व्योम चारिणश्छद्म चारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं राम नामभिः ॥11॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्ति मुक्ति च विन्दति ॥12॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्व सिद्धयः ॥13॥
वज्र पञ्जरनामेदं यो राम कवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जय मङ्गलम् ॥14॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने मामरक्षामिमांहरः ।
तथा लिखित वान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥15॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥16॥
तरुणौ रूप सम्पन्नो सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीक विशालाक्षो चीरकृष्णा जिनाम्बरौ ॥17॥
फलमूलाशिनौ दन्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ राम लक्ष्मणौ ॥18॥
शरण्यौ सर्व सत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्व धनुष्मताम् ।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥19॥
आत्तसज्जधनुषा विषुस्तृशा वक्षयायुगनिषङ्ग सङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथिसदैव गच्छताम् ॥20॥
संनद्धः कवची खंगी चापबाण धरो युवा ।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु स लक्ष्मणः ॥21॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥22॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकी वल्लभः श्रीमानप्रमेय पराक्रमः ॥23॥

...ki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥24॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥25॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं ।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ॥
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं ।
वन्दे लोकाभिरामंरघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥26॥
रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय सीतायाः पतये नमः ॥27॥
श्री राम राम रघुनन्दन राम राम
श्री राम राम भरताग्रज राम राम ।
श्री राम राम रणकर्कश राम राम
श्री राम राम शरणं भव राम राम ॥28॥
श्री रामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि
श्री रामचन्द्र चरणौ वचसा गृणामि ।
श्री रामचन्द्र चरणौ शिरसा नमामि
श्री रामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥29॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचंद्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥30॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥31॥
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ॥32॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥33॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥34॥
आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥35॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ।।36।।
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशायरचमू रामाय तस्मै नमः ।।37।।
रामान्नाति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं ।
रामेचित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।।
रामारामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं श्री रामनाम वरानने ।।38।।

'राम रक्षा स्तोत्र' का भावानुवाद इस प्रकार है—

भगवान श्रीराम का चरित्र इतना वृहद् है कि उसका विस्तार सौ करोड़ ग्रन्थों से भी अधिक है । इसका प्रत्येक अक्षर व्यक्ति के वड़े-से-वड़े पातकों की निवृत्ति की सामर्थ्य रखता है ।।1।।

नीले कमल की तरह श्याम वर्ण वालें और कमल सदृश्य नेत्रों वाले भगवान राम का सीता और लक्ष्मण सहित, जटा और मुकुट से विभूषित ध्यान करना चाहिए ।।2।।

हाथों में तलवार और धनुषवाण धारण किए हुए राक्षसों का नाश करने वाले, विश्व की रक्षार्थ अवतीर्ण होने वाले, अजन्मा और सर्व व्यापक भगवान राम का ध्यान किया जाना चाहिए ।। 3।।

बुद्धिमान व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाले और पापों का नाश करने वाले राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करें । रक्षा के उद्देश्य से कवच का वर्णन किया जा रहा है। भगवान राम सिर और मस्तक की रक्षा करें ।।4।।

कौशल्या पुत्र श्रीराम नेत्रों की, विश्वामित्र प्रिय कानों की, यज्ञ रक्षक नासिका की, सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण जिन्हें अत्यन्त प्रिय हैं, वे भगवान-राम हमारे मुख की रक्षा करें ।।5।।

'विद्यानिधि श्रीराम जिह्वा की, भरत वन्दित राम गले की, दिव्य अस्त्रों से युक्त भगवान राम कन्धों की और शिव के धनुष को तोड़ने वाले श्रीराम मेरी बाहुओं की रक्षा करें ।।6।।

सीता के स्वामी मेरे दोनों हाथों की, परशुराम के विजेता मेरे हृदय की, खरदूषण को मारने वाले मध्यभाग की और जाम्बुवान को शरण देने वाले श्रीराम मेरी नाभि की रक्षा करें ।।7।।

सुग्रीवेश्वर कटि की, हनुमत्प्रभु सक्थि भाग की और राक्षसों के वंश का नाश करने वाले रघुकुलोत्तम भगवान राम मेरी जंघाओं की रक्षा करें ।। 8।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेतु का निर्माण करने वाले जानुओं की, रावण का वध करने वाले दोनों जंघाओं की, विभीषण को 'श्री' प्रदान करने वाले भगवान राम मेरे पैरों की और सारे शरीर की रक्षा करें ॥ 9॥

जो पुण्यव.न साधक अपने में भगवान राम की शक्ति का अनुभव करता हुआ पाठ करता है, वह दीर्घजीवी, हर प्रकार से सुखी और सम्पन्न, सन्तान युक्त, विजयी और विनयी बनता है ॥ 10॥

पृथ्वी, आकाश और पातालादि सृष्टि के किसी भाग में विचरण करने वाले, छल, कपट युक्त प्राणी राम नाम से रक्षित व्यक्ति के नाश की सामर्थ्य नहीं रखते ॥11॥

जो साधक राम, रामभद्र, रामचन्द्र आदि नामों का जप करता है वह पापों में लिप्त नहीं होता और युक्ति व मुक्ति को प्राप्त होता है ॥12॥

विश्व में विजयश्री प्रदान कराने वाले राम नाम के मन्त्र से अभिरक्षित इस मन्त्र को जो साधक कण्ठ में ग्रहण करता है, उसे सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं ॥13॥

इस राम कवच को 'वज्र पञ्जर' नाम की संज्ञा दी गई है। जो साधक इसका श्रृद्धापूर्वक पाठ करता है, वह अनाहत बुद्धि से समस्त क्षेत्रों में विजय और मंगल की प्राप्ति करता है ॥ 14॥

महान प्रज्ञावान कौशिक ने भगवान शिव के आदेश से प्रातः स्वप्नावस्था में इस राम रक्षा स्तोत्र की रचना की ॥ 15॥

जिस प्रकार कल्प से वृक्ष सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है, उसी प्रकार श्रीराम का नाम जप भी सभी प्रकार की कामनाओं के पूर्ण करने वाला है। इससे सभी प्रकार की विपत्तियों से निवृत्ति होती है। वे राम सबके प्रभु व तीनों लोकों को आश्रय देने वाले हैं ॥16॥

काले मृग के चर्म ही हैं अम्बर जिनके, नेत्र कमल के समान बड़े-बड़े हैं, दोनों भाई राम और लक्ष्मण रूप और यौवन में तरुण, सुकुमार और महाबली हैं ॥17॥

दशरथ पुत्र राम और लक्ष्मण दोनों भाई ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले, तपस्या-रत, आहार में फल-फूल ग्रहण करने वाले व शान्त वृत्ति के हैं ॥18॥

धनुष धारण करने वालों में उत्तम, राक्षस वंश को नष्ट करने वाले, शरण में आये सभी प्राणियों को आश्रय देने वाले राम और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्ष्मण हमारी रक्षा करें ॥19॥

राम व लक्ष्मण धनुप और वाण को स्पर्श करते हैं और उन्हें धारण करते हैं। इस वेष में वे सदैव मेरी रक्षार्थ पथ में मेरे आगे आगे चलते हैं ॥20॥

'कवच, खड्ग, धनुप, वाण से सुसज्जित तरुण लक्ष्मण सहित श्रीराम हमारी समस्त कामनाओं को पूर्ण करें ॥21॥

दशरथ पुत्र श्रीराम जिनके अनुचर शक्तिशाली लक्ष्मण हैं, ऐसे काकुत्स्थ पुरुप कौशल्या पुत्र भगवान राम हमारी इच्छाओं को पूर्ण करें ॥22॥

भगवान राम वेदान्त शिरोमणि, यज्ञेश, पुराण पुरुपोत्तम, सीतापति महान पराक्रमी और ऐश्वर्यशाली हैं ॥23॥

जो साधक इन सारे नामों का भक्ति और श्रद्धा से उच्चारण करता है, वह निःसन्देह अश्वमेधादि यज्ञों के पुण्यों को प्राप्त करता है ॥24॥

भगवान राम दूर्वा की तरह श्याम वर्ण वाले हैं। उनके नेत्र कमल के समान हैं। वह पीत वस्त्रों को धारण करते हैं। इनके दिव्य नामों का जो साधक श्रद्धा से स्मरण करता है, वह, संसार सागर से तर जाता है ॥25॥

'श्रीराम, लक्ष्मण के अग्रजन्मा हैं, वह सीता के स्वामी, काकुत्स्थ पुरुष, करुणा के सागर, गुणों की निधि, ब्राह्मणों के प्रिय धर्म के प्रतीक श्रीराम को हम नमस्कार करते हैं। श्याम वर्ण, शान्ति की मूर्ति, सत्यवादी, राजाओं में वरिष्ठ, रघुकुल तिलक, राघव, विश्व को आनन्द प्रदान करने वाले और रावण के विरोधी श्रीराम को मैं नमस्कार करता हूं ॥26॥

राम के लिए, रामभद्र के लिए, रामचन्द्र के लिए, रघुनाथ के लिए विश्व के रचयिता राम के लिए और सीतापति श्रीराम के लिए मैं वन्दना करता हूं ॥27॥

अगले श्लोक में राम के नाम की 16 बार पुनरावृत्ति की गई है ताकि एक ही श्लोक से भगवान का पोडशोपचार पूजन हो जाये। मन में रमने वाले ईश्वर राम को सम्बोधित करते हुए साधक बड़े प्रेम से कहता है—'हे राम-राम रघुनन्दन राम-राम, श्री राम-राम भरताग्रज राम-राम, श्रीराम-राम, रण कर्कश राम-राम, श्रीराम-राम शरण भव राम-राम।' राक्षसों व आततायियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
के प्रति कठोरता बर्तने वाले श्रीराम की शरण में साधक जाने को उत्सुक है। तभी बार-बार राम-राम का उच्चारण स्मरण करता हुआ राम की शरण में ले जाने के लिए निवेदन करता है ॥28॥

श्रीराम के चरणों का मैं मन से स्मरण करता हूं। श्रीराम के चरणों को मैं वचन से ग्रहण करता हूं। श्रीराम के चरणों को मैं सर से नमस्कार करता हूं, श्रीराम के चरणों की मैं शरण करता हूं ॥29॥

श्रीराम मेरे माता, पिता, स्वामी, सखा और सर्वस्व हैं। उनके अतिरिक्त मैं किसी दूसरे को नहीं जानता, कदापि नहीं जानता ॥30॥

भगवान के दक्षिण ओर लक्ष्मण जी, बाम ओर सीता जी और सामने हनुमान जी शोभा पा रहे हैं, ऐसे श्रीराम की मैं वन्दना करता हूं ॥31॥

लोक का कल्याण करने वाले, रणभूमि में धैर्ययुक्त, कमल के समान नेत्रों वाले, जो करुणा की प्रतिमूर्ति हैं, ऐसे श्रीराम को मैं नमस्कार करता हूं ॥32॥

मन और वायु के समान असीम गति वाले, इन्द्रियजित, प्रज्ञावानों में वरिष्ठ, वायु पुत्र, वानर यूथ के प्रमुख, श्रीराम जी के दूत श्री हनुमान जी की शरण में मैं जाता हूं ॥ 33॥

'कविता रूपी शाखा पर स्थित रह कर राम-राम के मधुर शब्दों का उच्चारण करने वाली वाल्मीकि रूपी कोकिला की मैं वन्दना करता हूं ॥34॥

विपत्तियों को नष्ट करने वाले, समस्त सम्पदाओं के प्रदाता विश्व का कल्याण करने वाले, श्रीराम को मैं बार-बार नमस्कार करता हूं ॥35॥

सब प्रकार के सुखों और सम्पदाओं को प्रदान करने वाले, भवबीज का नाश करने वाले, यमदूतों को दण्ड देने वाले, 'श्रीराम श्रीराम' इस तरह के गर्जन करने वाले शब्द हैं ॥36॥

राजमणि, सदा विजयता, राक्षसों के विनाश कर्त्ता राम और रामेश को मैं स्मरण करता हूं—नमस्कार करता हूं। मैं स्वीकार करता हूं, कि यहां राम से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है, मैं अपने को राम का दास मानता हूं। इसलिए मेरा मन सदा राममय ही रहता है, मेरा श्रीराम से निवेदन है कि वह मुझ पर कृपा करके मेरा सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार से उद्धार करें ॥ 37॥

भगवान शिव पार्वती को भगवान राम के गुणों का गान करते हुए प्रेरणा देते हैं कि केवल मात्र एक बार के 'राम-राम' के उच्चारण से सहस्र नाम अर्थात् एक हजार नामों का जप हो जाता है ॥ 38॥

इसका अभिप्राय यह है कि राम नाम में इतनी अतुल शक्ति है कि उसके क्रिया रूप में आने से सहस्रगुणा विकास हो जाता है जो साधक को सिद्धि प्रदान करता है और उसका हर प्रकार से कल्याण होता है। इस शक्ति का प्रयोग रोग, दरिद्रता, विपत्ति, विरोध आदि सभी प्रकार की कठिनाइयों के निवारण के लिए किया जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्व रोग

सर्व रोग—

'ॐ नमो भगवते अपहयत सासनाय संसार चक्र परि मर्द-नाय आत्म-मन्त्र रक्षणाय पर मन्त्र छेदनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व ज्वरं, विषम ज्वरं, महा ज्वरं, ब्रह्म ग्रहकं, नाग ग्रहकं, भूत ग्रहकं, प्रेत ग्रहकं:, पिशाच ग्रहकं, सर्व ग्रह, सर्व दुष्ट ग्रह, सहस्य शूल, विनाशनाय, अमृत राउ, केशर की पीड़ा, ज्वर विनाशनाय, यक्ष राक्षस, भूत पिशाचादि, भवनादि दोषं नाशय नाशय हिलि हिलि हल हल दह दह पच पच मर्दय मर्दय विध्वंसय विध्वंसय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व ग्रह उच्चाटनं हम्ल्व्र्यूं भम्ल्व्र्यूं मम्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं खम्ल्व्र्यूं ॐ हूं फट् स्वाहा।'

इस रक्षा मन्त्र से झाड़ा देने से सभी प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

धरण—

'ॐ नमो काली वज्रा कुंशा की आणँ जो अमुका की खिसै कव ही देवी कालि की आँण।'

108 वार बोलकर अभिमंत्रित करने पर धरण ठीक हो जाती है।

जहर उतारना—

'ॐ नमो आदेश गुरु कूं धाइ गाइ गोबर जिसमें अपना च्यार विच्छु. चार काला चार कावरा चार भवरा पाखा लाल तारूं, उतर बिछ नहीं उतरे कै नील कंठ मोर हंकारू मोर खासी तोड़ै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जारे बिछू मंकरे खी छोड गुरु दुहाई ।'

इस मन्त्र को 21 बार पढ़ कर हाथ से झाड़ा देने पर बिच्छू का जहर उतर जाता है।

पागल कुत्ते के काटने पर—

'ॐ घु लु: दे उलः धुल पुरः तिहानै में दाभण देव कुकर विस कुनर ई माण माणस के ही मातरीख मंत्री वंधी जै सगला ई स्वान से विषल तरई सही ।'

इस मन्त्र से 3 रविवार तक पागल कुत्ते द्वारा काटे हुए आदमी को मन्त्रित करें, 21 बार तो कुत्ते का जहर उतर जाता है।

आधा माथा—

'ॐ छों छों छों छः अम्मिन् यात्रे अवतर स्वाहा ।'

इस मन्त्र से पेडा 3 बार मन्त्रित कर प्रातः ही खायें तथा यह प्रयोग 3 दिन तक करें तो आधा माथा का रोग ठीक हो जाता है।

कांख बिलाई—

'मेरु गिरी पर्वत जहाँ वसैं हणमंत वीर कांख बिलाई अंग थण गुरड़ तीनु भस्मा भूल मु० ह० फुरो० ।'

6 नमक की डली लेकर 6 बार मन्त्रित करें, 21 बार फूंक दें तो कांख बिलाई ठीक होती है।

नेत्र रोग—

'ॐ काली कंकारू वाली महापय राली हूं फट् स्वाहा ।'

इस मन्त्र से भस्म 108 बार मन्त्रित कर आंख पर पट्टी बांधने से नेत्र अच्छे होते हैं।

'ॐ ह्रीं श्रीं सूर्याय नमः ।'

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से नेत्र धोने से नेत्र रोग मिट जाता है।

'ॐ नमो भगवते आदित्य रूपाय आगच्छ आगच्छ अमुकस्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विक्षरोगं अक्षि पीड़ां नाशय स्वाहा।'

14 बार जपने से नेत्र रोग मिट जाता है।

सन्तान लाभ—

'ॐ ह्रीं ः ः क्लीं अर्हं असि आउसा नमः।'

सूर्योदय से 10 मिनट पूर्व उत्तर दिशा दक्षिण-पूर्व-पश्चिम ऊपर-नीचे दिशाओं में क्रमशः 21-21 बार इस मन्त्र का जाप करें। पुनः 10 माला फेरें, मध्याह्न में व सायं 10 माला फेरें। पुन स्वप्न आयेगा तब निम्न प्रकार की दवाई लें। मयूर पंख की चादर, शिवालिंगी का बीज 1 ग्राम दोनों को बारीक पीस लें। 3 ग्राम गुड़ में मिलाकर रजो धर्म की शुद्धि होने पर खिलावें। 1 या 2 माह में ही कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।

अण्डकोष वृद्धि—

'ॐ नमो नलाई-ज्यां बेंढ्या अनुमंत बाई पके न फूटे चले बाल जति रक्षा करे। गुरु रखवाला शब्द सांचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वर वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।'

नीम की डाली को 21 बार झाड़ने से अण्डकोष वृद्धि तथा कांख बिलाई ठीक हो जाकी है।

मस्सा—

'ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा।'

शुभ मुहूर्त में 1100 जप कर इस यन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर 21 बार पढ़ कर लाल सूत में 1 गांठ लगावें। और हर बार 21 बार पढ़ कर 1 गांठ दें। इस प्रकार 3 बार गांठ देने पर मन्त्र 21×3=63 बार पढ़ें। इस सूत्र को दाहिने पैर के अंगूठे में बांध देने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर होती है।

..ण हर—

'ॐ नमो जिणाणं जावयाणं पुसोणि अंए एणि सव्व पायेण बणमा उमा फुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र से राख अभिमन्त्रित कर व्रण जिन्हें वण भी कहा जाता है जो बालकों के शरीर पर ही जाते हैं, उन पर अथवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Digitization by eGangotri

शीतला के व्रणों पर लगावें तो वे मिट जाते हैं।

बाला/नहरवा—

'ॐ नमो मरहर दे शंक सारी गांव महामा सिधुर चांद से बाले कियो विस्तार बालो उपनो कपाल भांय या हुंतियो गींहूं ओ तौउ कीजै नै उबाला किया पाचे फुटे पीड़ा करे तो विप्र नाथ जोगीरी आज्ञा फुरे।'

कुंवारी कन्या के हाथ से सूत की डोरी करके 6 गांठ मन्त्र पढ़कर लगायें, पैर में बांध दें। बाला ठीक हो जाता है।

घाव पीड़ा—

'सार सार विजै सार बांधू सात बार फूटे अन्न उपजे चाव राखे श्री गोरखनाथ।'

इस मन्त्र को 6 बार पढ़कर घाव पर फूंकने से घाव की पीड़ा कम हो जाती है।

दाद—

'गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाह तो राजा वैराधिन आज्ञा वासुकी के आन हाथ वेगें चलाव।'

इस मन्त्र से पानी 21 बार मन्त्रित करके पिलाने से दाद जैसा रोग दूर हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमुख स्तोत्र एवं संकटास्तुति

शिव रक्षा स्तोत्रम्—

अस्य श्री शिव रक्षा स्तोत्र मन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, श्री सदाशिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, श्री सदा शिव प्रीत्यर्थं शिव रक्षा स्तोत्र जपे विनियोगः।

चरितं देवदेवस्य महादेवस्य पावनम्।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्ग साधनम् ॥1॥
गौरी विनायकोपेतं पञ्च वक्त्रं त्रिनेत्रकम्।
शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिव रक्षां पठेन्नरः ॥2॥
गंगाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दु शेखरः।
नयने मदन ध्वंसी कर्णौ सर्प विभूषणः ॥3॥
घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः।
जिह्वा वागीश्वरः पातु कन्धरां शिति कन्धरः ॥4॥
श्री कण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्व धुरन्धरः।
भुजौ भूभार संहृती करौ पातु पिनाक धृक् ॥5॥
हृदयं शंकरः पातु जठरं गिरिजापतिः।
नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कटी व्याघ्र जिनाम्बरः ॥6॥
सक्थिनी पातु दीनार्त शरणागत वत्सलः।
उरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः ॥7॥
जंघे पातु जगत्कर्त्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः।
चरणौ करुणा सिन्धुसर्वाङ्गानि सदाशिवः ॥8॥
एतां शिवबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स मुक्त्वा सकलान् कामान् शिवमायुज्यमाप्नुयात् ॥9॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह-भूत-पिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते शिव नामाभिरक्षणात् ॥10॥
अभयङ्कर नामेदं कवचं पार्वतीपते।
भक्त्या बिभर्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ॥11॥
इमां नारायणः स्वप्ने शिवरक्षां यथाऽऽदिशत्।
प्रातरुत्थाय योगीन्द्रो याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत् ॥12॥

संकट मोचन स्तोत्रम्—

सिन्दूर-पूर-रुचिरो बलवीर्य सिन्धु-
बुद्धि प्रभाव निधिरद् भुत-वैभव श्रीः।
दीनार्तिदाव-दहनो वरदो वरेण्यः
संकट मोचन विभुस्तनुतां शुभं नः ॥1॥
सोत्साह-लङ्घित-महार्णव-पौरुष श्री-
लंकापुरी-प्रदहन-प्रथित प्रभावः।
घोराहव-प्रमथि तारि-चमूप्रवीरः
प्रामञ्जनिर्जयति मर्कट सार्व भौमः ॥2॥
द्रोणाञ्चलानयन-वर्णित भव्य भूतिः
श्रीराम-लक्ष्मण-सहायक चक्रवर्ती।
काशीस्थ-दक्षिण-विराजित-सौधमल्लः
श्रीमारुतिर्विजयते भगवान् महेशः ॥3॥
नूनं स्मृतोऽपि ददते भजतां कपीन्द्रः
सम्पूजितो दिशति वाञ्छित-सिद्धि वृद्धिम्।
सम्मोदक प्रिय उपैति परं प्रहर्षं
रामायण-श्रवणतः पठतां शरण्यः ॥4॥
श्री भारत-प्रवर युद्धरथोद्धत-श्रीः
पार्थैक-केतन-कराल-विशाल मूर्तिः।
उच्चैर्घनाघन-घटा-विकटाऽट्टहासः
श्री कृष्णपक्ष भरणः शरणं ममाऽस्तु ॥5॥
जङ्घा लजङ्घ उपमाति विदूरवेगो
मुक्ति-प्रहार-परि मूर्च्छित-राक्षसेन्द्रः।
श्रीराम कीर्तित-पराक्रमण द्धदश्रीः
प्राकम्पनिर्विभुरुदञ्चतु भूतये नः ॥6॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीतान्ति-दारणपटु प्रबल: प्रतापी
श्रीराघवेन्द्र-परिरम्भवर-प्रसाद: ।
वर्णीश्वर: सविधि-शिक्षित-कालनेमि:
पञ्चाननो ऽपनयतां विपदो ऽधिदेशम् ॥7॥

उद्यद्-भानु सहस्र-सन्निभतनु: पीताम्बरालङ्कृत: ।
प्रोज्ज्वालानल-दीप्यमान-नयनो निष्पिष्टि-रक्षोगण: ॥
संवर्तोद्यत नारिदोद्धत-रव: प्रोच्चैर्गदाविभ्रम: ।
श्रीमान् मारुत नन्दन: प्रतिदिनं ध्येयो विपद्-भञ्जन: ॥8॥

रक्ष: पिशाच भय-नाशन मानयाधि-
प्रोच्येर्ज्वरापहरणं दमनं रिपूणाम् ।
सम्पत्ति-पुत्र करणं विजय प्रदानं
संकष्ट मोचन विभो: स्तवनं नराणाम् ॥9॥

दारिद्र्य-दु:ख-दहनं विजयं विवादे
कल्याण-साधनममङ्गल वारणं च ।
दाम्पत्य-दीर्घसुख-सर्वमनो रथाप्ति
श्री मारुते: स्तव शतावृतिरातनोति ॥10॥

स्तोत्रं य एतदनु वासर मस्तकाम:
श्रीमारुतिं रामनुचिन्त्य पठेत् सुधीर: ।
तस्मै प्रसाद सुमुखो वर वानरेन्द्र:
साक्षात्कृतो भवति शाश्वतिक: सहाय: ॥11॥
संकष्ट मोचन स्तोत्रं शङ्कराचार्य भिक्षुणा ।
महेश्वरेण रचितं मारुतेश्चरणे ऽर्पितम् ॥12॥

नव ग्रह स्तोत्र—

विघ्न दु:ख और दु:स्वप्नों की निवृत्ति हेतु व्यास रचित निम्न स्तोत्र का पाठ करना चाहिए—

जपा कुसुम संकाशं काश्य पेयं महाद्युतिम् ।
तमो ऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतो ऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंख मुषां रामं क्षीरोदार्णव सम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम् ॥
धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।
कुमारं शक्ति हस्तं ते मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषीणां च द्युं कांचन सन्निभम् ।
बुद्धि भ्रतं त्रिलोकम्य तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिम कुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलञ्चेन सामाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
इति व्यास मुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्न शान्तिर्भविष्यति ॥
नर नारी नृपाणां च भवेद्दुःस्वप्न नाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टि वर्धनम् ॥
ग्रह नक्षत्र जाः पीडास्तस्कराग्नि समुद्भवा ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

पीड़ा हर स्तोत्र—

ग्रहाणामादिरादित्यो लोक रक्षण कारकः ।
विषम स्थान संभूतां पीडां हरतुं मे रविः ॥1॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ।
विषम स्थान सभूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥2॥
भूमि पुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा ।
वृष्टि कृद् वृष्टि हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥3॥
उत्पात रूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्य प्रिय करो विद्वान् पीड़ा हरतु मे बुधः ॥4॥
देव मन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः ।
अनेक शिष्य सम्पूर्णः पीड़ां हरतु मे गुरुः ॥5॥
दैत्यन्त्री गुरु स्तेषां प्राणादश्च महामतिः ।
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीड़ां हरतु मे भृगुः ॥6॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिव प्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां हरतु मे शनिः ॥7॥
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीड़ां हरतु मे शिखी ॥8॥
अनेक रूप वर्णश्च शतशो ऽथ सहस्रशः।
उत्पात रूपो जगतां पीड़ां हरतु मे नमः ॥9॥

संकटा स्तुतिः—

'सदा वृन्दार कोद् वृन्दा-ऽऽ नन्द-सन्दोह-दायकम्।
अमन्दमङ्गला गार वन्दे शंकर नन्दनम् ॥1॥
किं कार्यं कठिनं कुतः परिभवः कुत्रापवादाद् भयं।
किं मित्रं न हि किन्तु राज सदनं गम्यं न विद्या च का॥
किं वा ऽन्य ज्जगती तले प्रवद यत्तेषाममसंभावित।
येषां हृत्कमले सदा वसति सा तोषप्रदा संकटा ॥2॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दित मेदिनि
विश्व विनोदिनि नन्दिनुते।
गिरिवर विन्ध्या-शिरो ऽधि-निवासिनि
विष्णु विलासिनि जिष्णुनुते॥
भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि
भूरिं कुटुम्बिनि भूति कृते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥1॥

सुर वर वर्षिणि दुर्धर धर्षिणि
दुर्मुख मर्षिणि हर्ष रते।
त्रिभुवन पोषिणि शंकर तोषिणि
कल्मष मोषिणि घोष रते॥
दनुजनि रोषिणि दुर्मद शोषिणि
दुर्मु निरोषिणि सिन्धुसुते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥2॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अयि जगदम्ब कदम्बवन-प्रिय
वासिनि तोषिणि हास रते ।
शिखिर-शिरोमणि-तुग हिमालय
शृङ्ग-निजालय-मध्यगते ॥
मधु मधुरे मधु कैटभ-गञ्जिनि
महिष विदारिणि रासरते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥3॥
अयि निज हुंकृति-मात्र निराकृत
धूम्र विलोचन-धूम्र शते ।
समर विशोषित-रोषित-शोणित-
बीज समुद् भव-बीजलते ॥
शिव-शिव-शुंभ-निशुंभ-महा हव
तर्पित - भूतपिशाचरते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥4॥
अयि शत खण्ड-विखण्डित रुण्ड
वितुण्डित-शुण्ड गजाधिपते ।
निज भुज दण्ड निपातित चण्ड-
विपाहित मुण्ड-भटाधिपते ॥
रिपु गज गण्ड-विदारण-चण्ड
पराक्रम-शौण्ड मृगाधिपते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥5॥
धनुरनुषंगः रण क्षण सङ्ग-
परिस्फुरदङ्ग-नटत्कटके ।
कनक-पिशङ्ग-पृषत्कानिषङ्ग-
रसद् भट शृङ्ग-हता बटुके ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥6॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिरण दुर्मद-शत्रु वाधद्धुर-
दुर्धर-निर्भर-शक्ति भृते ।
चतुर विचार धुरीण महाशय
दूत कृते-प्रथमाधिपते ॥
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-
दानव दूत-दुरन्तगते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥7॥
अयि शरणागत-वैरि वधुजन-
वीरवरा-भय-दायिकरे ।
त्रिभुवन मस्तक-शूल विरोधि-
शिरोधि कृतामल-शूल करे ।
दुमि दुमि तामर-दुन्दुभिनाद-
मुहुर्मुखरीकृत-दिङ् निकरे ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥8॥
सुरललना-ततथेयि-थेयि-
थाभिनयोत्तर-नृत्यरते ।
कृत कुकुथा-कुकुथो दिङ् दाडिक-
ताल कुतूहल गानरते ॥
धुधुकुट-दुधूर धिन्धि-मितध्वनि-
धीर मृदंग-निनादरते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥9॥
जयं जय जाप्यजये जय शब्द-
परस्तु तिवत्पर-विश्वनुते ।
झण झण-झिझिम-झिकृत-नूपुर-
शिञ्जित-मोहित-भूतपते ॥
नटित नटार्ध-नटी नट नामक,
नाटन नाटित-नाट्व रते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥10॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Digitization by eGangotri

अयि सुमना: सुमन: सुमन:
सुमन: सुमनोरम कान्तियुते।
श्रित रजनी-रजनी-रजनी-
रजनी-रजनीकर-वक्त्र भृते ॥
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर
भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिदृते ॥
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥11॥

महित-महाहवल्ल मताल्लिक-
वल्लित-रल्लित-भल्लिरते ।
विरचित वल्यि-कपालिक-पल्लिक-
झिल्लिक-झिल्लिक वर्ग वृते ॥
श्रुत कृत फुल्ल-समुल्ल सितारुण-
तल्लज-पल्लव-सल्ललिते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥12॥

अयि सुदलो खय-लालसमानस-
मोहन-मन्मथ राजसुते ।
अविरल-गण्डगलन्-मदमेदुर-
मत्त-मतङ्ग जरा जगते ॥
त्रिभुवन-भूषण भूत-कलानिधि
रूप-पयोनिधि राजसुते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥13॥

कमलदलामल-कोमल कान्ति
कला कलितामल-भालतले ।
सकल-विलास कलानिलय-
क्रमकेलि चलत्कल-हंस कुले ॥
अलि कुल संकुल-कुन्तल मण्डल-
मौलिमिलद्-बकुला लिकुले ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥14॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर मुरली रव-वर्जित-कूजित
लज्जित-कोकिल मञ्जुमते ।
मिलित - मिलिन्द - मनोहर-गुञ्जित
गुञ्जित-रञ्जित शैल सुते ॥
निज गण भूत महा शबरोगण-
रङ्गण सम्भृत-केलिरते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥15॥
कटि तट पीत-दुकूल विचित्र-
मयूख तिरस्कृत-चण्ड रुचे ।
जित कनकोचल-मौलि मदोर्जित-
गर्जित कुञ्जर-कुंभ कुचे ॥
प्रणत सुरा ऽसुर-मौलिमणि-
स्फुरदंशुल सन्न खचन्द्र रुचे ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥16॥
विजित-सहस्र करक-सहस्र
करैक-सहस्र करैकनुते ।
कृत सुर तारक-संगर तारक-
संगर तारक-सुनु नुते ॥
सुरथ समाधि-समान समाधि
समान समाधि-सुजाप्यरते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥17॥
पद कमलं करुणा निलये वरि
वस्यति यो ऽनुदिनं सुशिवे ।
अयि कमले कमला निलयें
कमला निलय: स कथं न भवेत् ॥
तव पदमेव परं पदमस्त्विति
शक्ति यतो मम किं न शिवे ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैल सुते ॥18॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कनक लसत्-कलशी कजलैर
नुषिञ्जति ते ऽङ्गणरङ्ग भुवम् ।
भजति स किं शची कुच कुम्भ-
नटी परिरम्भ-सुखानु भवम् ।
तव जरणं शरणं करवाणि
नुवाणि पथं मम देहि शिवम् ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥19॥
तव विमलेन्दु कलं वदने-
न्दु मलं कलयन्ननुकूलयते ।
किमु पुरुहूत-पुरीन्दु मुखी-
सुमुखी भिरसं विमुखी क्रियते ॥
मम तु मतं शिवमान छने
भवती कृपया किमु न क्रियते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥20॥
अयि मयि दीन दयालु तया
कृपयैव त्वया भवितव्य मुमे ।
अयि जगतो जननीति यथा ऽसि
मया ऽसि तथा ऽनुमताति रमे ॥
यदुचित मत्र भवत्पुरगं कुरु
शाम्भवि देवि दयां कुरु मे ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥21॥
स्तुति मिमां स्तिमित, सुसमाधिना
नियमतो यमतो ऽनुदिनं पठेत् ।
परमया रमया निषेव्यते परिजनो
ऽरिजनो ऽपि चतं भजेत् ॥22॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमुख कवच

मृत्युञ्जय कवच—

श्री भैरव उवाच

श्रृणुष्व परमेशानि कवचं मुन्मुखोदितम् ।
महा मृत्युञ्जयास्य न देयं परमाद्भुतम् ॥1॥

यं धृत्वा च पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम् ।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितो ऽस्मि महेश्वरि ॥2॥

तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने ।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने ॥3॥

ॐ अस्य श्री महा मृत्युञ्जयस्य कवचस्य श्री भैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः श्री मृत्युञ्जय रुद्रो देवता । ॐ बीजं, जूं शक्तिः सः कीलकं हौमिति तत्त्वं श्री चतुर्वर्ग फल साधनार्थ पाठे विनियोगः ।

चन्द्र मण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते ।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तो ऽपि जीवति ॥1॥

ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम ।
श्री शिवो वै ललाटं च ॐ हों भुवौं सदाशिवः ॥2॥

नील कण्ठो ऽवतान्नेत्रे कपर्दी मे ऽवताच्छ्रुती ।
त्रिलोचनो ऽवताद् गण्डौ नासा मे त्रिपुरांतकः ॥3॥

मुखं पीयूषधर मृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः ।
हनुं मे हाटके केशानो मुखं बटुक भैरवः ॥4॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कन्धरी काल मथनो गलं गणप्रियो ऽवतु ।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशो ऽवतु ॥5॥
नखान्मे गिरिजा नाथ: पायादङ्गुलि संयुतान् ।
स्तनौ तारापति: पातु वक्ष: पशु पतिर्मम ॥6॥
कुक्षिं कुबेर वरद: पार्श्वौ मे मार शासन: ।
शर्व: पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममा ऽवतु ॥7॥
शिश्नं मे शंकर: पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभ: ।
कटिं कालान्तक: पायादूरू मे ऽन्धक घातक: ॥8॥
जागरूको ऽवताज्जानू जङ्घे काल भैरव: ।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयो ऽवतु ॥9॥
पादादि मूर्द्धपर्यंतं सद्यो जातो ममाऽवतु ।
रक्षाहीनं नामहीनं वपु: पात्वमृतेश्वर ॥10॥
पूर्वेबलविकरणो दक्षिणे काल शासन: ।
पश्चिमे पार्वती नाथ उत्तरे मां मनोन्मन: ॥11॥
ऐशान्यामीश्वर: पायादाग्नेय्यांमग्नि लोचन: ।
नैर्ऋत्यां शम्भुर व्यान्मां वायव्यां वायु वाहन: ॥12॥
ऊर्ध्वे बल प्रमथनं पाताले परमेश्वर: ।
दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ॥13॥
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राण संशये ।
पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षर: ॥14॥
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवो ऽवतु ।
सायं सर्वेश्वर: पातु निशायां नित्य चेतन: ॥15॥
अर्द्ध रात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदय: ।
सर्वदा सर्वत: पातु ॐ जूं स: हौं मृत्युञ्जय: ॥16॥
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
सर्वं मन्त्र मयं गुह्यं सर्वं तन्त्रेषु गोपितम् ॥17॥
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देव देवाधि दैवतम् ।
य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्तत: ॥18॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्य हस्ते महष्देवि त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः ।
रणे धृत्वा चेदेद्युद्ध हत्वा शत्रुञ्जयं लभेत् ॥19॥
जयं कृत्वा गृहे देवि सः प्राप्स्यति सुखं पुनः ।
महाभये महारोगे महामारी भये तथा ॥20॥
दुर्भिक्षे शत्रु संहारे पठेत्कवचमादरात् ।
सर्वं तत्प्रशमं याति मृत्युञ्जय प्रसादतः ॥21॥
धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मी मारोग्यं सर्व सम्पदः ।
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः ॥22॥
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु ।
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥23॥

नवग्रह कवच—

समय-समय पर ग्रह विशेष के दोषग्रस्त होने पर भिन्न-भिन्न रोग होते रहते हैं तथा ज्योतिषी बंधु उनसे निवारणार्थ भिन्न-भिन्न उपाय बताते हैं। सामान्य पाठक न इतना खर्च कर सकते हैं और न ही अनुष्ठान। ऐसी स्थिति में ग्रह विशेष के कवच अपना कार्य करते हैं जो दे रहा हूं।

निम्न 'यामल' तन्त्र का नव ग्रह कवच है। इसका पाठ किया जाना चाहिए एवं तावीज में रखकर भुजा में धारण करना चाहिए। यह विशेष लाभप्रद है।

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः ।
मुखमंडारकः पातु कण्ठं च शशि नन्दनः ॥
बुद्धि जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः ।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दितिनन्दनः ॥
पादौ केतु सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च ।
तिथयो ऽष्टौ दिशः पान्तु नक्षत्राणि वपुः सदा ॥
अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च ।
सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धो मुच्येत बन्धनात् ॥
श्रियं च लभते नित्यं रिष्टिस्तस्य न जायते ।
यः करे धारयेन्नित्यं तस्य रिष्टिर्नं जायते ॥
पठनात् कवचस्यास्य सर्वपापात् प्रमुच्यते ।
मृतवत्सा चं या नारी का कन्ध्या च या भवेत् ॥
जीव वत्सा पुत्रवती भवत्येव न संशयः ।
एतां रक्षां पठेद् यस्तु अंग स्पृष्ट्वापि वा पठेत् ।

सूर्य कवचम्—

याज्ञवल्क्य उवाच

श्रृणुष्व मुनि शार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम् ।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥1॥
देदीप्यमान मुकुटं स्फुन्मकर कुण्डलम् ।
ध्यात्वा सहस्रकिरणं स्तोत्रमेत दुरीरयेत् ॥2॥
शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मे ऽमित द्युतिः ।
नेत्र दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः ॥3॥
घ्राणं धर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः ।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुर वन्दितः ॥4॥
स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः ।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः ॥5॥
सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके ।
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्व सिद्धयः ॥6॥
सुस्नातो यो जपेत् सम्यग् यो ऽधीते स्वस्थमानसः ।
स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति ॥7॥

सूर्य कवच स्तोत्रम्—

साम्ब साम्ब महा बाहो श्रृणु मे कवचं शुभम् ।
त्रैलोक्यामङ्गलं नाम कवचं परमाद् भुतम् ॥1॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यज्ज्ञात्वा मन्यवित् सम्यक् फलं प्राप्नोति निश्चितम् ।
यद्धृत्वा च महादेवो गणानाधिपो ऽभवत् ॥2॥
पदना ध्यानणाद् विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा ।
एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वेश्वर्यमवाप्नुयुः ॥3॥
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दो ऽनुष्ट बुदाहृतः ।
श्री सूर्यो देवता चाऽत्र सर्वद्देव नमस्कृतः ॥4॥
यश-आरोग्य-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम् ॥5॥
सर्वो ऽव्यान्नयन द्वन्द्वमादित्यः कर्ण युग्मकम् ।
अव्यक्षरो महामन्त्रः सर्वाभीष्ट फलप्रदः ॥6॥
ह्रीं बीजं मे मुखं पातु हृदयं भुवनेश्वरी ।
चन्द्रबिम्बं विशदाद्यं पातु मे गुह्यदेशकम् ॥7॥
अक्षरो ऽसौ महामन्त्रः सर्वतन्त्रेषु गोपितः ।
शिवो वह्निसमायुक्तो वामाक्षीबिन्दु भूषितः ।
एकाक्षरो महामन्त्रः श्री सूर्यस्य प्रकीर्तितः ॥8॥
गुह्याद् गुह्यतरो मन्त्रो वाञ्छाचिन्तामणिः स्मृतः ।
शीर्षादि-पाद पर्यन्तं सदा पातु मनूत्तमः ॥9॥
इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
श्रीप्रदं कान्तिदं नित्यं धनारोग्य-विवर्धनम् ॥10॥
कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधिविनाशनम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान् भवेत् ॥11॥
बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ।
ततस्तत्सर्वं भवेतस्य कवचस्य च धारणात् ॥12॥
भूत-प्रेत-पिशाचाश्च यक्ष-गन्धर्व-राक्षसा ।
ब्रह्म-राक्षस-वेताला न द्रष्टुमपि तं क्षमाः ॥13॥
दूरादेव पलायन्ते तस्य संकीर्तनादपि ।
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागरुकुंकुमैः ॥14॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रविवारे च संक्रान्त्यां सप्तम्यां च विशेषत: ।
धारयेत् साधकश्रेष्ठः स परो मे प्रियो भवेत् ॥15॥
त्रिलेहमध्यगं कृत्वा धारयेद् दक्षिणे करे ।
शिखायामथवा कण्ठे सोऽपि सूर्यो न संशय: ॥16॥
इति ते कथितं साम्ब ! त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ।
कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहात् प्रकाशितम् ।
सिद्धि र्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥

चंद्र कवचम—

अस्य श्री चन्द्र कवचस्तोत्रमन्त्रस्य गौतम ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, श्री चन्द्रो देवता, चन्द्र प्रीत्यर्थं जपे विनियोग: ।

समं चतुर्भुजं केयूरमुकुटोज्ज्वलम् ।
वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम् ॥1॥
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिन: कवचं शुभम् ।
शशि पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधि: ॥2॥
चक्षुसी चन्द्रमा पातु श्रुती पातु निशापति: ।
प्राणं क्षपाकर: पातु मुखं कुमुदबान्धव: ॥3॥
पातु कण्ठं च मे सोम: स्कन्धे जैवा वृकस्तथा ।
करौ सुधाकर: पातु वक्ष: पातु निशाकर: ॥4॥
हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शंकर भूषण: ।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकर: ॥5॥
ऊरू तारापति: पातु मृगाङ्को जानुनी सदा ।
अब्धिज: पातु मे जङ्घे पातु पादौ विधु: सदा ॥6॥
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चन्द्रो ऽखिलं वपु: ।
एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति-मुक्ति प्रदायकम् ।
य: पठेच्छ्रणुयाद् वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥7॥

मंगल कवचम्—

अस्य श्री अंगारक-कवचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषि: अनुष्टुप् छंद, अंगारको देवता, भौम प्रीत्यर्थं जपे विनियोग: ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्ताम्वरो रक्तवपुः किरीटी ।
चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत् ॥
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली ।
सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ॥1॥
अंगारकः शिरो रक्षेत् मुखं वै धरणी सुतः ।
श्रुवौ रत्नाम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः ॥2॥
नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः ।
भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा ॥3॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं पातु रोहितः ।
कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः ॥4॥
जानुजङ्घे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा ।
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे मेषवाहनः ॥5॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रु निवारणम् ।
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं सर्व सिद्धिदम् ॥6॥
सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम् ।
भुक्ति-मुक्तिप्रदं नृणां सर्व-सौभाग्य वर्धनम् ।
रोग-बन्धविमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः ॥7॥

बुध कवचम्—

अस्य श्री बुधकवच स्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, बुधो देवता, बुध प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः ।
पीताम्बरधरः पातु पीतामाल्यानुलेपन ॥1॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा ।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु श्रोते पातु निशाप्रियः ॥2॥
घ्राणं गन्धप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम ।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजौ पुस्तकभूषणः ॥3॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः ।
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः ॥4॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घे ऽखिलप्रदः ।
पादो मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः ॥5॥

एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपाप प्रणाशनम् ।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःख-निवारणम् ॥6॥

आयुरारोग्यशुभदं पुत्र-पौत्र-प्रवर्धनम् ।
यः पठेच्छृणुयाद वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥7॥

बृहस्पति कवचम्—

अस्य श्री बृहस्पति कवचस्तोत्र मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, गुरुर्देवता, गं बीजं, श्री शक्तिः, क्लीं कीलकं, गुरु प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

अभीष्टफलदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम् ।
अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम् ॥1॥

बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः ।
कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मे ऽभीष्टदायकः ॥2॥

जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः ।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवतागुरुः ॥3॥

भुजावाङ्गिरसः पातु करौ पातु शुभप्रदः ।
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः ॥4॥

नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः ।
कटिं पातु जगद्वन्द्य ऊरू मे पातु वाक्पतिः ॥5॥

जानु जङ्घे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा ।
अन्यानि यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे सर्वतो गुरुः ॥6॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥6॥

शुक्र कवचम्—

मृणाल-कुन्देन्दु-पयोज-सुप्रभं
पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम् ।
समस्तशास्त्रार्थविधिं महान्तं
ध्यायेत् कविं वाञ्छितमर्थ सिद्धये ॥1॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरो मे भार्गवः पातु भाल पातु ग्रहाधिपः ।
नेत्रे दैत्यगुरुः पातु श्रोते मे चन्दन द्युतिः ॥2॥
पातु मे नासिका काव्यो वदनं दैत्यवन्दितः ।
वचनं चोशनाः पातु कण्ठं श्रीकंठ भक्तिमान् ॥3॥
भुजौ तेजोनिधिः पातु कुक्षि पातु मनोव्रजः ।
नाभिं भृगुसुतः पातु मध्यं पातु महीप्रियः ॥4॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा उरु मे सुरु पूजितः ।
जानुं जाड्यहरः पातु जङ्घे ज्ञानवतां वरः ॥5॥
गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ वराम्बरः ।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु स्वर्ण माला परिष्कृतः ॥6॥
य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः ।
न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः ॥7॥

शनि वज्र पञ्जर कवचम्—

नीलाम्बरो नीलपुवः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदाममस्याद् वरदः प्रशान्तः ॥1॥

ब्रह्मा उवाच ॥

श्रृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥2॥
कवचं देवतावासं वज्र पञ्जर संज्ञकम् ।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥3॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दन ।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ॥4॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा ।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः ॥5॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः ।
वक्षं पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वासितस्तथा ॥5॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri

नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा ।
ऊरू यमान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा ॥7॥
पादौ मन्दगतिः पातु सर्वाङ्गं पातु पिप्पलः ।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दनः ॥8॥
इत्यतेत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥9॥
व्ययजन्म-द्वितीयस्थो मृत्युस्थान गतोऽपि वा ।
कलयस्थो गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥10॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे ।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित् ॥11॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यान्निर्मितं पुर ।
द्वादशाष्टम-जन्मास्थ-दोषान्नाशयते सदा ।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः ॥12॥

राहु कवचम् —

प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनम् ।
सैंहिकय करालास्यं लोकानामभयप्रदम् ॥1॥
नीलाम्बरः शिरः पातु ललाटं लोकवन्दितः ।
चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान् ॥2॥
नासिकां मे धूम्रवर्णः शूलपाणिर्मुखं मम ।
जिह्वां मे सिंहिकासुनुः कण्ठं मे कठिनांघ्रिकः ॥3॥
भुजंगेशो भुजौ पातु नीलमाल्याम्बरः करौ ।
पातु वक्षः स्थलं मन्त्री पातु कुक्षिं विधुन्तुदः ॥4॥
कटिं मे विकटः पातु ऊरू मे सुर पूजितः ।
स्वर्भानुर्जानुनी पातु जंघे मे पातु जाड्यहा ॥5॥
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ मे भीषणा कृतिः ।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु नीलचन्दन भूषणः ॥6॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहोरिदं कवचमृद्धि दवस्तुंद यो
भक्त्या पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन् ।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धि मायु
रारोग्यमात्म विजयं च हि तत्प्रसादात् ॥7॥

केतु कवचम्—

केतुं करालवदनं चित्रवर्णं किरीटनम् ।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम् ॥1॥
चित्रवर्णः शिरः पातु भालं धूम्रसमद्युतिः ।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुति मे रक्तलोचनः ॥2॥
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः ।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः ॥3॥
हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः ।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महासुरः ॥4॥
उरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽतिकोपिनः ।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्ग नरपिंगलः ॥5॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम् ।
सर्व शत्रु विनाशं च धारणाद् विजयी भवेत् ॥6॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Digitization by eGangotri

रोगनाशक मन्त्र

आरोग्यदायी यन्त्र—

निम्न यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें तथा अनार की कलम से, अष्टगंध की स्याही से लिखकर, धूप कर चांदी के तावीज में बंद कर गले में धारण करना चाहिए तथा रोज प्रातः 108 बार

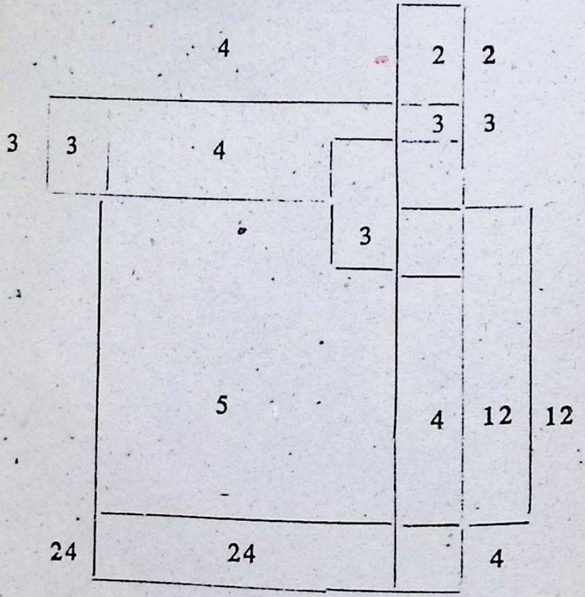

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने इष्ट का स्मरण करना परम आवश्यक है। यन्त्र तैयार करने वाला व्यक्ति सद्व्रतनी होना चाहिए। यन्त्र तैयार करते समय श्वास रोककर एक ही दम में लिखना चाहिए तथा मन में कुल देवता का ध्यान करना चाहिए। अब आप निश्चय जानें कि रोगी शीघ्र रोग से मुक्त हो जायेगा।

तुलसी रामायण मन्त्र—

गोस्वामी तुलसीदास जी कृत मानस के कुछ मन्त्र मैं यहां पाठकों के समक्ष रख रहा हूं। ये मन्त्र आशानुकूल प्रभाव देते हैं। इनमें से जिस मन्त्र का जाप करना हो, उसके लिए हवन करना आवश्यक है। घर में ही छोटा-सा हवनकुंड बना लेना चाहिए; उसमें अग्नि प्रज्वलित कर लेना चाहिए और दी हुई 16 चीजों में से कम-से-कम 8 लेकर 108 आहुतियां दें व मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। हवन एक ही बार किया जाना चाहिए। परन्तु मन्त्र जाप प्रतिदिन 108 बार किया जाना चाहिए। इससे अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

हवन के लिए आवश्यक वस्तुयें—चंदन का चूरा, तिल, घी, दाल, अगर, तगर, कर्पूर, केशर, नागरमोथा, जौ, चावल, वंच-मेवा, पिस्ता, बादाम, अंगूर, काजू।

मंत्र जप सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार से प्रारंभ करना चाहिए।

आराम मिलने के लिए—

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बलि कीन्हे तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ तें गिरत न जावई बाग॥

रक्षा मन्त्र—

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।
धृतवरचाप रुचिर कर सायक॥

विपत्ति नाशार्थ—

राजीव नयन धरे धनु सायक।
भगत विपति भंजन सुखदायक॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पेचिश के लिए—

जय रघुवंस बनज बनभानू।
गहन दनुज कुल दहन कृसानू ।।

सिर दर्द—

हनुमान अंगद रन गाजे।
हांक सुनत रजनीचर भाजे ।।

भूत उपद्रव—

प्रनवउं पवन कुमार खल बन पावन ग्यान धन।
जासु हृदयं आगार बसहिं राम सर चाप धर ।।

विष नाश—

नाम प्रभाउ जान सिवनी को।
काल कूट फल दीन्ह अमीको ।।

अकाल मृत्यु निवारण—

नाम पहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पदजंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ।।

नजर—

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी।
निरखहिं छवि जननी तृन तोरी ।।

पुत्र प्राप्ति—

प्रेम मगन कौशल्या निसि दिन जात न जान।
सुख सनेह बस माता बाल चरित कर गान ।।

मधुमेह-मेद-तुतलाना—

ॐ भूः भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

मस्तिष्क विकार—

ॐ भूः भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य। धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय विकार—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

दमा—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितर्वरेण्यम् ।
ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अमोघ देवी कवच और मन्त्र—

श्री दुर्गा सतशती' देवी भक्तों का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ की महत्ता आसेतुहिमाचल फैली हुई है । इसी ग्रन्थ में देवी कवच है । सप्तशती में कुछ रोगनाशक मन्त्र हैं जिनका उपयोग करके पाठक लाभान्वित हो सकते हैं । जो मन्त्र आप लेना चाहें उसे ग्रहण काल में 1008 या 108 बार अवश्य दोहराना चाहिए । इससे वह और भी शक्तिशाली होगा । यदि तब तक आप इन्तजार न कर सकें तो अविलंब ही जाप प्रारम्भ कर सकते हैं । उच्चारण शुद्ध व दीर्घ करें । मन्त्रोच्चार से लहरें बनती हैं । वे रोग स्थान पर असर करती हैं और रोग नष्ट हो जाता है । मन्त्र का जाप नित्य 1 हजार 8 बार किया जाना चाहिए ।

नसों के रोग—

ॐ उं उमादेवीभ्याम् नमः ॥

यह मन्त्र नित्य 1008 बार जाप करें । इससे सिर पीड़ा, मज्जा के रोग, मानसिक विकृतियां, उन्माद, पागलपन, हिस्टीरिया जैसी बीमारियां दूर हो जाती हैं ।

नासिका रोग—

ॐ यं यमघण्टाभ्यां नमः ॥

नेत्र रोग—

ॐ शां शालिनीभ्यां नमः ॥

इस मन्त्र के जाप से नेत्र रोग दूर हो जाते हैं । सूर्योदय पूर्व आंखों पर से लाल फूल उतारकर या झटकारने से आंख का फूल चला जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्ण रोग—

ॐ द्वां द्वार वासिनीभ्यां नमः ।।

गल रोग—

ॐ चि चित्रघण्टाभ्यां नमः ।

केंसर की बीमारी पर इसका आश्चर्यजनक अनुभव सिद्ध फल पाया है।

जिह्वा रोग—

ॐ सं सर्वमंगलाभ्यां नमः ।।

पेट रोग—

ॐ धं धनुर्धारिभ्यां नमः ।।

स्तन विकार—

ॐ मं महादेवीभ्यां नमः ।।

इस मन्त्र से सभी प्रकार के स्तन-विकार नष्ट हो जाते हैं। जिस माता का दूध कम या खराब है उसे बच्चे के वस्त्र से 7 दिन तक मन्त्र पढ़कर झाड़ने से दूध ठीक आने लगता है। यह प्रयोग प्रतिदिन तीन बार करें। इसके अतिरिक्त उक्त मन्त्र लिखकर वह कागज बालक के गले में बांधने से नजर नहीं लगती। चिड़चिड़ापन दूर हो जाता है।

चिन्ता नाश—

ॐ शों शोकविनाशिनीभ्याम् नमः ।।

इस मन्त्र से मानसिक चिन्ता दूर हो जाती है। पति-पत्नी के झगड़े मिट जाते हैं। इस मन्त्र को मंगलवार के दिन रक्त चन्दन या अनार की लेखनी से भोजपत्र पर लिखें और उसे शहद में डुबोकर रख लें। जिसका नाम मन्त्र में लिखा है उसकी बीमारी दूर हो जाती है।

हृदय रोग—

ॐ लं ललितादेवीभ्याम् नमः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदर व्याधि नाश—

ॐ शूं शूल धारिणीभ्याम् नमः ॥

इस मन्त्र से पेट की सब व्याधियां दूर हो जाती हैं। जलोदर और पेट दर्द पर इसका उत्तम उपयोग होता है।

अल्सर—

ॐ कां कालरात्रीभ्याम् नमः ॥

इस मन्त्र के जाप से आंत्र के विकार अल्सर, आमांश आदि ठीक हो जाते हैं।

वायु विकार—

ॐ वं वज्रहस्ताभ्याम् नमः ॥

इस मन्त्र से ब्लड-प्रेशर जैसी बीमारी भी अच्छी होती है।

दंत रोग—

ॐ कौं कौमारीभ्याम् नमः ॥

छोटे बच्चे के दांत निकलते हैं उस समय इस मन्त्र का जाप करें तो अच्छा उपयोग होता है।

गुप्त रोग—

ॐ गुं गुह्येश्वरीभ्याम् नमः ॥

नस खिसक जाने पर इस मन्त्र से इलाज करें। मुंह धोकर शौच जाने से पूर्व इस मन्त्र का 108 बार जप करने से बवासीर ठीक हो जाता है।

रक्त और अस्थि रोग—

ॐ पां पार्वतीभ्याम् नमः ॥

रक्त, मज्जा, हड्डियों के विकार तथा कुष्ठ रोग इस मन्त्र से ठीक होते हैं।

ज्वर—

ॐ मुं मुकटेश्वरीभ्याम् नमः ॥

कफ रोग—

ॐ पं पद्मावतीभ्यां नमः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूत-प्रेत—

ॐ वां कल्याणशोभनाभ्यां नमः ॥

इस मन्त्र से भूत-प्रेत पिशाचों से मुक्ति प्राप्त होती है। इस मन्त्र का जाप रोज 1008 बार करें। बीमारी ठीक होने तक नियमित करना चाहिए।

संकट हरण मन्त्र—

(1) ॐ नमो भगवते आंजनेयाय ! महाबलाय! हुं फट् ! घे घे घे ! घे घे घे ! स्वाहा ॥

(2) कुछ गणेश भक्त संकटों का नाश होने के लिए निम्न का जाप करते हैं। यह मन्त्र जाप 21 दिन अखंड करने से संकटों का नाश हो जाता है।

श्री गजानन जय गजानन ॥

आरोग्य लाभ—

आरोग्य सुधारने के लिए इस मन्त्र का जप 25 बार करें। मन्त्र पढ़ते समय चांदी के बर्तन में दूध रखें और उस पर हाथ रख कर मन्त्र पढ़ें। कुल देवता का नाम लेकर वह तीर्थ मानकर पी लें।

ॐ अश्विनी तेजस्त चक्षुः प्राणन। सरस्वती। वीर्यंयम्। वाचेन्द्रो बलेनेंद्राय दधु रिन्द्रियम्।
ॐ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।

बाल रक्षा कारी मन्त्र—

ॐ नमो भगवती चामुण्डे मुन्च-मुन्च बालं बालिकां वा बलिं गृहय-गृहय जय-जय वस-वस।

इस मन्त्र से बच्चे के ऊपर से चावल का बलि उतारकर दूर ले जाकर रख दें।

ज्वर गायत्री—

ॐ भस्मास्याय विद्महे। एक दंष्ट्राय धीमहि तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाल ग्रह शान्ति—

ॐ सर्वं मातृभ्यो वाल पीड़ा संयोगे भुञ्ज-भुञ्ज चुट-चुट स्फोटय-स्फोटय स्फुर-स्फुर गृहाणाक्रन्दय ऽऽ क्रन्दय एवं सिद्धरूपो ज्ञापयति। हर-हर निर्दोष कुरु-कुरु वालिकां वालं स्त्रियं पुरुषं वा सर्वं ग्रहाणामुपक्रमान्। चामुण्डे नमो दैव्यै हूं-हूं ह्रीं अपसर-अपसर दुष्ट ग्रहान् हूं तद्यथा गच्छन्तु गृह्यकाः अन्यत्र पन्थानं रुद्रो ज्ञापयति ॥

Acc 29529 / 21951

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डायमण्ड के चर्चित प्रकाशन

प्रेमचन्द साहित्य

निर्मला	10.00
वरदान	12.00
प्रतिज्ञा व मंगलसूत्र	12.00
सेवासदन	20.00
गोदान	25.00
प्रेमाश्रम	30.00
कर्मभूमि	25.00
रंगभूमि-1	20.00
रंगभूमि-2	20.00
कायाकल्प	20.00
मनोरमा	12.00
रूठी रानी व प्रेमा	12.00
गबन	20.00
मानसरोवर (भाग 1 से 8) प्रत्येक भाग	20.00
प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	15.00
पांच फूल	6.00
कफन	12.00
कर्बला (नाटक)	12.00
संग्राम (नाटक)	12.00

शरत साहित्य

शेष प्रश्न	15.00
देना पावना	10.00
श्रीकांत	20.00
चरित्रहीन	20.00
विप्र परिचय	15.00
विराज बहू	10.00
बैकुंठ का वसीयतनामा	10.00
देहाती समाज	10.00
शरत के नाटक	2:
ब्राह्मण की बेटी	10
काशीनाथ	10.
चन्द्रनाथ	10.0
परिणीता	10.00
गृहदाह	15.00
कमला	10.00
विप्रदास	15.00
शुभदा	12.00
पथ के दावेदार	15.00
देवदास	10.00
पंडित जी	10.00
मझली दीदी	10.00
दत्ता	10.00

जय शंकर प्रसाद साहित्य

कंकाल	15.
तितली	15.
इरावती	6.
छाया	6.
इन्द्रजाल	8.0
आकाशदीप	7.0
प्रतिध्वनि	5.00
आंधी	6.00
लहर	5.00
कामायनी	8.00
आंसू	5.00
झरना	5.00
महाराजा का महत्व	3.00
प्रेम-पथिक	3.00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डायमंड पाकेट बुक्स में

डायमंड शाश्वत कथामाला रामायण के अमर पात्र

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जीवन-चरित्र हमें प्रेरणा देने वाला एक ऐसा पावन चरित्र है जिन्होंने हर प्रकार के कष्ट सहकर भी किसी भी कीमत पर मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। उनके जीवन को उपन्यास की शैली में प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है, और हमें विश्वास है पाठक न केवल उनके चरित्र से प्रेरणा लेंगे बल्कि उनके आदर्शों का वरण करके अपना जीवन सफल बनायेंगे।

प्रस्तुति : डा. विनय व डा. अश्विनी पाराशर

रामायण के अन्य अमर पात्रों के जीवन-चरित्र

वीर हनुमान	12.00	महाबली रावण	12.00	गुरु वशिष्ठ	12.00	महाराजा दशरथ	12.00
कर्त्तव्यनिष्ठ लक्ष्मण	12.00	त्यागमूर्ति भरत	12.00	माण्डवी	12.00	महाराजा जनक	12.00
महासती सीता	12.00	शांत उर्मिला	12.00	कैकयी	12.00	विभीषण	12.00

प्रसाद साहित्य

उपन्यास

21951

सरस्वती नमस्तुभ्यं
महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
MAHENDRA SANSKRIT UNIVERSITY 1986 AD

महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
वाल्मीकि विद्यापीठ
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A.H.W.
Sameer Series

राधाकृष्ण श्रीमाली

मंत्र शक्ति से रोग निवारण

15/-

डायमंड पाकेट बुक्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu